

॥ ढाल १ ॥ चोपाई ॥ सरसति वरसति वाणी सार, कहे कविछण मुज तसु छाधार; सरसति विण जे बोद्या

॥ श्री जिनेंडाय नमः ॥

|| त्राध ||

॥ विमल मंत्रिनो रास प्रारज्यते ॥

001000000

॥ तत्र ॥

॥ खंग पहेलो ॥

॥ मंगलाचरण ॥

मेस, अंबाई धुरि श्वर्बुदा सकल देवि श्रीमात

ध्याऊं; पुमावई चक्केसरी वाग वाणि गुण रंगे

गाऊं ॥ सद्दगुक्त आणा सिर धरी आलस अ-

सगो करेस, कहे कविछा हुं विमल मतें विमल

छादि जिनवर छादि जिनवर प्रथम प्रण-

प्रबंध रचेस ॥ १ ॥

www.jainelibrary.org

(१)

बोल, ते प्रमाण नवि चडे नटोल ॥ १ ॥ नवे खंम जोज्यो निर्मला, विमल कीर्तिगुण गंगा-जलाः नोनग लहिर वीर विख्यात, गायसुं वि-मल मंत्रिनी वात ॥ १ ॥ ब्रह्मानी बेटी सर-स्वती, गौर वर्ण चाले मलपती; कमल कमंनल विणा हाथ, पुस्तक परठिऊं दक्तिण हाथ ॥३॥ **उर मोटो मुगताफल हार, पाए नेउर रणऊण**-कार; काने कुंमल वेणीदंग, लीला मोह्यं जेणे ब्रह्मं ॥ ४ ॥ रतने जडी रुमी राखडी, लोचन जिशां कमल पांखनी; निर्मल नाशा तिलनुं फूल, दंत तणुं कुण करसे मूल ॥ ५ ॥ राता अधर ते विर्छु मरोल, जाएे जीह ते अमीनो घोल; चंदलर्में जीतलुं मयंक, कटि जी णो लाखीणो लंक ॥ ६ ॥ उन्नत पीन पयोधर कुंज, सदली साथल कदली थंज; फाली चोली सवि सिएगार, जाणे वीज तणो जबकार ॥ ७ ॥ वाहन हंस विश्व विख्यात, ते सरसति त्रिजुव-ननी मात; विण सरसति नवि कहीये जाण,

(३)

सरसति विण नही वेद पुराण ॥ ७ ॥ विनय विवेक वना आचार, लक्षण लग्न लोक विवहार; माई श्रंकनी एकूकला, सरसति विए (ते) थाये आकला ॥ ए ॥ आगे सिद्ध अनंता थया, सरसति विण सिद्धें नवि गया; सरसति विण न खाध्यां ज्ञान, विण सरसति नवि पामे मान ॥ १० ॥ सरसति मुगति तणुं वे बीज, कूमुंदुवे तो आपुं धीज; ब दरशण पाखंग बन्नेवे, ते सघलां सरसतिने कवे ॥ ११ ॥ जेइने वयणे सरसति वास, ते खाये गिक्त्ञाना प्रास; जेहने सरसति मुखने मिलि, ते मूरखमांचा जाये टली ॥ १२ँ ॥ सरसति माने मोटा राय, सर-सति विण नाणुं न कहाय; मांहि लखमी हुए खरी, न हुए सरसति जो सिर ंधरी ॥ १३ ॥ जरह जेद पिंगलनी वाण, तर्क बेद ज्योतिषनी खाण, धर्म कर्म बोख्यां संसार, ते सवि सरस-तिने आधार ॥ १४ ॥ तुं जारति तुंहिज जग-

(8)

वती, तुं पदमा तुं पदमावती; तुं योगिणि तुं ज्वालामुखी, तहारे तेजे त्रिजुवन सुखी ॥ १५ ॥

॥ डुहा ॥

सायर जल लवथी अधिक, ते तारो जंडार; त्रुठी कविजन को मिने, कूणे न लद्धो पार ॥ १ ॥ सवि कहिने दिये वयणरस, तें आप्यां आजरण: कविजन बैठा केलवे, ते हेतेता वर्ण ॥ १ ॥ ताहरी परि तुंहिज लहे, तुज चरणे मुज वास; मुनि **लावएँगसमय जणे, पूरे मनची** आस ॥ ३ ॥ करजोमी एतुं कहुं, छहनिश करवी सार; रखे मात अधवच रहे, विमल रास विस्तार ॥ ४ ॥ छली न जंपुं आस तुं, (अने) माया न करुं मात; कांइ जे व्यक्तर हुं कवु, ते सवि तुज पसाय ञणजाणतो छनेक परे, जं जं बोले बाल; וועוו माता मुख हुखावती, तं तं करे रसाल ॥६॥ कहे सरसति वखतुं वयण, जगत म आणिस चांत; विमल मंत्रि गुण गायतां, दुं आविश एकांत ॥९॥

(4)

श्रंगज तोरे अवतरी, बोखि सुवर्ष विशाख; नव नव वाणी वयण रस, पूरीश तारी आस ॥ ७ ॥ कवण विमल ते किहां हुउ, बोखुं तसु उतपत्त; धर्म काज कीधां जिशां, चतुर सुणो एक चित्त ॥ए॥ चिहुंसें जोयण आपणे, जोयण एक प्रमाण; जोयण लाख जे देवकां, जंबू द्वीप वखाण ॥१०॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ चोपाई ॥

जरत खंग बाहिर जयवंत, सोवनमय पर्वत हिमवंत; एक सहस्र बावन जोयणे, बार कला पुद्दलपण गणे ॥ ८ ॥ शत योजन ऊंचो ते होय, तसु उपरे पदम ऊह जोय; निर्मल जल कीरो-दक जिसुं, दश जोछण ते उंगुं इसुं ॥ २ ॥ पंच सयां पुहलुं मंडाण, जोछण सहस लंब परिमाण; तेइनुं वारि न विणसे किमें, तलि तास पेखो वज्रमें ॥ ३ ॥ तेणे पद्म ऊह लखमी तणे, कनक कमल बे कविजन जणे; वास तणो तिहां स-यस विवेक, लांबुं पहोलुं जोछण एक ॥ ४ ॥ (६)

जलमांहिं दश जोव्यण रह्युं, दोई कोस जल उपर कह्यं; परिधि जोव्यण त्रण जाजी लही, नीरज मूल वज्रमें सही ॥ ५ ॥ रिष्ट रत्न मइ कांडुं घड्युं, नाख रत्न वैकुर्ये जड्युं; बाहिरज्यं-तर वर्ष विचित्र, कनक रत्न मइ बोख्यां पत्र ॥ ॥ ६ ॥ रक्त वर्ष जिसि वर्णिका, कोस रूप सोहे कर्णिका: लंब पुहल बोख्या दोइ कोस, उंचपणे एकज बोलेस ॥ ९ ॥ सोइ चकेसरि वृत्ताकार, त्रण कोस जाजा विस्तार; कमल कर्णिका विच श्वजिराम, लखमी वास जवन ते ठाम 11 कोस खंब पुद्दलपण आध, उंणुं कोस उंच ते लाध; कमला मंदिर वस्काणीये, त्रण बार त्रिहुं दिशि जाणियें ॥ ए ॥ उत्तर दक्तिण पूरव जणुं, पंच पंच रात उंचा धणु; धनुष छढीसें पुहलां बार, बोंब्युं त्रिहुंदिशि तणुं विस्तार 1 30 1 जवनमध्य मणिमयकोटकी, (तिहां) शय्यायें श्री चडी; दीनकरनी परें तेजे तपे, त्रिहं जुवन चाले नवि उपे ॥ ११ ॥ वमे कमल

(0)

रहे रखवाल, त्रीस सहस सुर जाकजमाल; सोल सहस कमल कुंमली, आगल त्रण वलय वे वली ॥ १ए ॥ पहेले वलये लाख बत्रीस, बीजे वलये लाख चालिस; त्रीजे कमल लाख छाड-ताल, रहे सुर सेवक मंदिर माल ॥ १० ॥ ए छागमनुं एहवुं मतुं, ए बोह्युं ठे सवि शास्वतुं; कहुं कमल सेवि ययां जेटलां, सावधाने सुण-ज्यो तेटलां ॥ ११ ॥ एक कोड वीस साख व-खाण, जपर सहस पंचास प्रमाण; एकसो वीस **श्रधिक वली जोय, ला**बि कमल सवि संख्या होय ॥ ११ ॥ इणी परे लखमी देवी तणी, कवि कहे अवर ऋ ि वे घणी; एक वार कृत-युग छवतार, संपत्ते सुर लोक मजार ॥ १३ ॥ ईंद्रे तव अर्धासन दीध, मात मया अम जपर कीध; कब्पवृद्ध कुसमांची माल, लखमी वनी सुरसाल ॥ १४ ॥ आब्युं बीगुं जे कर तणुं, ईंडाणी गूण गाये घणुं; अति सनमानी पार्व। क्ले, पन्तीं माल दीठीं तरू तले ॥ १५ ॥ विमल

(.)

माल परिमल विस्तरे, जमर जला ग़ुंजारव करे. लखमी जाणे अति अजिराम, ए कॉई ठे उत्तम ठाम ॥ १६ ॥ महारी माल न च्रटे किमें, जो त्रटक त्रूटी ईणे संमेः कांई महिमा यानक तणो; लेइ परिवार रही आपणो ॥ १९ ॥ दिशि दे-खीने वाध्यो मोह, थानक प्रत्ये चडाव्यो सोह: देव प्रत्ये दीधो आदेश, नीपार्ड गढ पोल प्रवेश ॥ १७ ॥ वारू वन वामी अजिराम, वाव सरो-वर सुंदर ठाम; मंदिर मोटां कीधां घणां, जाली गोख जमित बारणां ॥ १ए ॥ सप्त जूमि सोहे श्रावास, मांहिं व्यवहारीना वास: घरसुंदरी मुख मीठी जाख, जाणे साकर सरसी डाख ३० ॥ सरखी सेरी नवि सांकडी, खाई वलिणि वली वांकडी; चजरासी चहुटे मंमाण, मांकवीच्या ते मागे दाए ॥ ३१ ॥ जिनप्रासादे मन मोहीये, नाटक नाच गीत सोहीये; साल दाल जोजन घृत घोल, बेठा करे कथा कह्वोल॥ ॥ ३१ ॥ रामा रंग रमे सोगठे, देतां

(१७)

जाजे हुंठे; नाचे रंज तिलोत्तम जोड, कुतिगि-छानां पहोंचे कोड ॥ ३३ ॥ पंच राब्द वाजे निसान, नगर सवे मुकाव्यां मान; लोक तणुं नवि लहिये पार, वस्युं नगर नव जोत्र्यण बार॥ ॥ ३४ ॥ मणि माणिक सोनानी कोड, जरीआं घर नवि दीसे खोक; राज लोक राजा थापीयो, पुएयवस लोक पाटण छापीयो ॥ ३५ ॥ ईंद चंद नर नायक तणां, छाव्या वली वधावा घणा; जडी गूमी गयणि अनेक, तलीआ तोरण तणां विवेक ॥ ३६ ॥ देव छुंदजि जग वागी जाम, प्रगटयुं पुएयपाल तव नामः वासी नगर लाबि मन इसी, पदम डहे जइ वासे वसी ॥ ॥ ३९ ॥ कोइ नवि मागे नर कहि कन्हे, घर जईने कीजे विनये; मंदिर तेडी दीजे दान, जुर्व उत्तम युगतणुं मंमाण ॥ ३० ॥ वोख्यां वरस सतर जो लाख, जपर सहस अठावीस जाख; कालें कृतयुग आठो कयों, त्रेतायुग त्रिज़-वन विसतयों ॥ ३९ ॥ ेलखमी खीला दिन

(??)

नीगमें, कृतयुग पूरो जाएयो जिमें; रमल चमे मन जावे जिंहां, जैतामांहिं पधार्यां तिहां ॥४०॥ मणि माणिक रत्नावली जड्यो, त्रुट्यो हार जूमि जई पड्यो; रह्यां रतन नगरीमां गयां, लेतां लोक ऋखुटी थयां ॥ ४१ ॥ एक क्रमां ने रखीत्रामणां, लीला लखमी दीधां घणां; अवर लोक आवे उलट्यां, वीणे वेगन दीसे घट्यां ॥ ४१ ॥ घर बेठां देशाजर फढ्यां, रतन व्यमु-लिक छावी मह्यां: कईरे प्रगट्यो वयरागर ठाम, रत्नपुर ए इग्रुं नाम ॥ ४३ ॥ बार लक्त सहस **उ**प्पनवे, त्रेताँ वरसज एतां वहे: घर आव्या देई बहु मान, त्रेता युगमां दीजे दान ॥ ४४ ॥ बेठी लांब दिमाने चडी, जोऊं नगर घमी छाधघडी: करजोमी पाय लागे राय, पाठी पदम सरोवर जाय ॥ ४५ ॥ त्रेता युग थयो विसराल, छाट्यो द्वापर पमतो काल; महारुं नगर रखे सीदाय, लागि पुइति तिणे गय ॥ ४६ ॥ जय जयकार हुर्ज जगमांद्य, प्रगट पधार्यां लखमि

(११)

मायः दानी मानी ज्ञानी लोक, थानक थानक मलीआ थोक ॥ ४९ ॥ लिजे किजे बहु जेटणां, मणि माणक बहु मूलां घणां; जरी ठाँब कुस-मांची कोम, श्री जेटी सज्जन करजोड ॥ ४० ॥ माता जले पधार्यां तुह्मे, व्याज सनाथ थया ढुं छहो; नालिकेर नारंगि डाख, महेट्यां फल फोफलना लाख ॥ ४ए॥ मेवा मोदकनां माटलां, चंदन चुश्रानां वाटलां; पान पुराणा नागरवेल, वाही छंगर कपूरि रेंख ॥ ५० ॥ श्री संतोषो जगतें करी, कंठ हुंती जे माला धरी; ते आली आसिका विशाल, श्री थिर थाप्या श्रीश्रीमाल ॥ ५१ ॥ वेगे वधावी हरखी सिरी, पुहती पदम सरोवर पुरी; माल एक ने महाजन बहु, वदे वाद जन जोई सहु ॥ ५१ ॥ एक जर्णे नहीं <mark>श्रापुं छह्वो</mark>, एक जेंग्रे नवि लेशो तुह्वो, एक जेंग्रे वरि माइरुं करुं, पण हुं पाठो नहीं उसरुं ॥थ३॥ जैट तणुं जिहां लागु लोग, एक जणे आहा शोषु-जाग; स्पां मोटां स्पां नान्हां बाल, जागे जलति

(१३)

लेशुं माल ॥ ५४ ॥ एक जाेे कटका किम थाय, एक जाएे ए लेसे राय; जेट जेद जु न कहत छहो, तो किम लखमी जेटत तुहो ॥ प्या एक जुणे सहु आव्युं साथ, माल समरपी महारे हाथ: महारे मस्तक मोटुं कर्म, सवि कहिने मन लागो मर्म ॥ यह ॥ त्रटकी जटकी जट्यो साथ, माल जणी के वाहे हाथ; वडा जणी जो दीधी शोज, तुज डोकरने वाध्यो लोज ॥ ५७ ॥ जारवहा सिर महेख्यो जार, तो शुं जारवहां जंमार, वडो करी बेसार्यों आज, तो शुं तुह्य-घर छाव्युं राज ॥५७॥ हाथे हुई छंगुलनी चार, अंगुठो पांचमो विचाग, एक एक विष न सरे काज, पांच तणे मेलावे राज ॥ ८० ॥ हाक्यो ताम इसीने रह्यो. बुद्धिविण बोल वरांसे कह्यो; वमपर्णं थिकु वरांगों मूल, हुं महाजनना पगनी ॥ ६० ॥ बोले बोले वाधे राड, कांटे धल कांटे वाधे वाड; एक जर्णे कहीए एटख़ुं, मांहे प्रीगे जलुं ॥ ६१ ॥

({8})

जेे हुं जांजुं वाद, नीपार्च श्रीनो प्रासाद; थापो मूरति ए धन वमे, बाइनां फूल बाईने चडे ॥ ६१ ॥ सुएयो बोल श्रवणे जेटले, सवि कहेने सरखुं तेटले: जेटणे जाग वे जेइ तणा, रह्या सोइबी जाग्या घणा ॥ ६३ ॥ जेट तणी लखमी वावरी, श्री प्रासाद सुरंगु करी; थापी मूरति महूरत जोइ, लखमी लक्त णवंती होइ ॥ ॥ ६४ ॥ वाजे जुंगल जेरी ताल, जेट तणी ते श्री-श्रीमाल; कर सोइासण सोवन थाल, ते उपर ते मेल्हीमाल ॥ ६५ ॥ श्रागल मलीश्रा महाजन थाट, रंग तणो उघाड्यो घाटः नवि करमाये नितु नव नवी, श्रीमाली श्री कंठे ठवी ॥६६॥ द्वापरमांहिं हूइ थापना, जेहने जय टलीया पापनाः श्रीगोत्रज श्रीमाली जणी, करे चिंत प्रासादह तणी ॥ ६७ ॥ द्वापरमांहिं इस्यां वे मान, दीजे मानव माग्यां दान, त्रीजे जुग श्री करे संजाल, नगर नाम दीधुं श्रीमाल ॥ ६० ॥

(१५)

॥ वस्तु ढंद तथा चोपाई ॥

लगि यापि लगि थापि झाति श्रीश्रीमाल, नगर नाम श्रीमाल तव; रयणमाल अग्गइ प्रसिद्धो; सकल झाति श्रंगार धुरि, अचल नाम श्रीमाल दीधे; लग्नि जर्षे निर्धन नही, हुं तुद्ध गोत्रज जेण; श्रीश्रीकार सुअप्पीया, श्रीश्री-माली तेण ॥ १ ॥ खंम खंड मति ठे निर्मली, जणतां गुणतां संपत वली; मुनी लावण्यसम-यची वाण, एटले पहेलो खंम वलाण ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ए६ ॥

इति श्री विमल मंत्रि मनोहर प्रगट प्रबंधे, नव खंमे सरस्वती वर्षन, लद्दमी चरित्र, क्वत युग त्रेता प्रमाण, श्रीश्रीमाली झाति स्थापना-धिकारे प्रथम खंड संपूर्षम् ॥

(१६)

॥ खंम २ जो ॥

॥ दुहा ॥

पदमति परिमल पूरीजं, जिम सायर सलि-लेह; तिम श्रीमालति पूरीजं, विवहारी सब लेह ॥ १ ॥ जिहां घर लन्चिन लप्नीये, नहि करमें संतान; ते घर लेखे न लेखीये, जिहां घर दान न मान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ चोपाई ॥

कोटमांहिं कोटोधज वसे, उणा ते गढ बाहिर खिसे; खाखीणा ते नेखा थाय, इस्यो न्याय ठे नगरी मांह्य ॥ १ ॥ त्र्याहड रोहम जाइ दोइ, रोहम बहु कोटीध्वज सोइ; उद्दम घरे नवाणुं खाख, जाइ सरसि घाखी जाख ॥ १ ॥ बंधव तोरे पाय खागीये, एक खाख श्रह्मे मागीये; कोटीधजनी पहोंचे श्रास, जिम गढ-मांहिं पुरुं वास ॥ ३ ॥ ठेहुमे न श्रावे केहिने

(39)

साथ, तुहि धन नवि ठुटे हाथ; कह्युं वचन तव कोपे चढ्यो, तुज पाखे गढ रह्यों वे खड्यो ॥४॥ जाइ तणो जरूसो हतो, उंहम मन थयो उंरतो; सुछए म मग्गो छंचलि उंफि, मोटां माणस खागे खोडि ॥ ५ ॥ जाजे गति स्वर जीषो थाय, शरिर परसेवो जय मनमांह्य: दयामणो देखे सह कोय, मग्गए मरए समाएो जोय ॥६ चंद तर्षे हे सुरज मित्त, घमियुं तेज तव थयुं चल चित्त; आव्यो सूरज घर करी आस, दोसे शसिकर पत्र पलास ॥ ९ ॥ अण तेम्धं नर पर घर जाय, मान मोइत नवि पामे राय; साहम़ं कांई चमे कखंक, सूरज तर्षे घर गयो मयंक ॥ ॥ ७ ॥ तव उंहम मन थयो निरास, माग्युं अर्थ न पुद्धती आस; आणी डंस रह्यो मनमांह्य, एणे श्रवसर जुर्ड कर्म पसाय ॥ ए ॥ नगरमांहिं राजानो पुत, गर्वे मागे यास बहुत; राज न आले माग्यो घांस, कहेतां वहल हुआं वम्मास ॥१०॥ जेषे मंत्रि जूपति अवधार, कुंअर मनावो वडे

Jain Educationa International For Person

(25)

विचारः नान्हुं सिंहतणुं बाचफुं, मोटा मय-गलयी ते वर्फु ॥ ११ ॥ राय जणे रूठे स्युं हरो, जाणे जनस कोई वासरो, नवला यौवन नवला वेश, कांई न वासे नवला देश ॥ १२ 11 माथ मूलग काढयुं जेह, पठे तृणुं नवि त्रूटे तेह, तरूणां तेज सूरज सारखां, लहीये पुरुष तणां पारखां ॥ १३ ॥ किस्युं करशे महारे यास, बेठा रहो आपणे आवास; एइने कांई आलं आज, बीजा बेटा मागे राज ॥ १४ ॥ महारे बेटा सवे सारिखा, जुर्ड कर्म तणां पारखां: ंधन उपार्ड खार्ड सवे, गाम ने ग्रास न आलुं जवे ॥ १५ ॥ सोल वरसनो बेटो जेश्र, धन जोगवे पितानं तेश्चः ते कुल मंडण कवि म वखाण, पुत्र रूपे रणीर्ड जाण ॥ १६ ॥ कुंत्र्यर तणे काने श्रुति पनी, नगरमांहिं हवे न रहुं घनी: जमे रो जर नावे घाट, कुंछर पहोतो उंहड हाट ॥१९॥ **उंहड** आसन मेहेली करी, बेठो राजनीति अणुसरी, पाला पुइता आणे गम, किशुं अणुरूं

(36)

तहारे स्वाम ॥ १० ॥ कहे कुंछर तव मननी वात, ई्राां कथन मुज बोखे तात; परहंसि प्ररीया बे नटोल, साल सरीखा साखे बोल ॥[°] १**ए ॥ एके सुत्रि यया तव बे**ज, वाट सरिख़ुं संबल लेजः घरे मोकलावी चाल्या जिसें, मारग शकुन सबल हुए तिसें ॥ १० ॥ पहिलो मयगल मलपतो मल्यों, व्यवहारी दक्तण कर वल्यो; मंगल जणती सामी नार, जाट वधावे जय जयकार ॥ ११ ॥ उदो जणती योगिणि मली, तो दक्तण जयरव कलकली; खर डाबो ने डाबी देवि, सबलो सुणहु माबु लवे ॥ ११ ॥ हरण अधूरां जमणां जाय, पहेले पहोरे पनोतां माय; सांड तरी ने दक्तिण चास, वामा वायस पूरे श्रास ॥ १३ ॥ डाबां लाली बोल्या जाम, कुसली पंथ घणा परहरी ॥ १४ ॥ वाट घाट महेंले जोता मन रंग, चाले चंचल चतुर तुरंग: अति पोढा पीआणा कीध, पाम्यो सिंधु देश प्रसिद्ध

(२०)

॥ १५ ॥ रार्च जेट्यो जइ ठठा तणो, ठाकुर गाम ठाम दिछनो; रहो राज प्रूरू मन रूली, कहे वाणी कुंछर कुंछली ॥ १६ ॥ छहो न छाव्या **सेवा ग्रास, जा**एं, जवस वासु वास_; जूमितएो जिहां न हुए धणी, ठाम देखाडो ते हित जणी ॥ १९ ॥ जोइ रार्ड विमासे ताम, ठाकुर विना न देखे ठाम; पश्चिम दक्तिण पूरव जणी, जोतां जोयुं उत्तर जणी ॥ १० ॥ देश घणानी आवी संधि, एक थलीजं ठे तेहने कंधिः अठे संदेवत श्रह्म घर तुरी, पुइचो तुरी लेई करी ॥ १९ ॥ जोतो जे चल आवे जाम, ताम तुरंगम करी प्रणामः चिंती जोग करे जे जलुं, आठ पुहर मेस्हे मोकलुं ॥ ३० ॥ हयवर चंपे जेती सौम, पेंठे पाठो आवे जिम; वेगे वधावे मुगता फले, नगर वासजे तेषे थले ॥ ३१ ॥

॥ वस्तु **ठंद ॥** कुंछर चाढ्यो कुंछर चाढ्यो, तुरीछ सोई साथ; **उहर सरीसो छावीयो, तेषे ठामे ते तुरीछ**

(2?)

राखे, ह्यवर मेहेलिर्ड मोकलो; छठ पुहर थल जूमि रख्खे, जवसि वास वसावीर्ड; नगर नाम जएस, मुनि लावएय समय जऐ, धन धन जदय नरेस ॥ १ ॥

॥ (ढाल १) चोपाई ॥ वास्युं नगर जिसुं सुरलोक, धने धनद समाणा लोक; पोढां मंदिर पोली पगार, वास नगर नवि लहीयें पार ॥ १ ॥ चिहुं दिशि तलीश्रा तोरण बार, श्रमरी कुमरी नाचे नार; चोरासी चोहटां जुजुञ्चां, वामि वाव सरोवर कूश्चा ॥ १ ॥ घर घर नारि रंजा जिसी, साकर वाणी बोले इसी; राजगृह इन्मं जगमगे, उंहडना घर गढ मूलगे ॥ ३ ॥ पूंठे थको तेड्यो परिवार, उंहरू नगर तणो सिणगार; राजमुद्धा पहेरावे राज, उंहडनो वाधे जसवाज ॥ ४ ॥

॥ छहा॥ जे जे चिंत्या बोलडा, ते ते चड्या प्रमाण;

जाई सरीसुं इसणुं, नवि जागुं निरवाण ॥ १ ॥

(取)

उत्तर दक्तिण प्रूरवि, पश्चिम केरा लोक, नगर वच्यां ते निर्मलां, जिम तक्तमाहिं छाशोक ॥ १ ॥ कोटी धज कोटे वसे, लाखीणा लख जोई; नगर. मांहिं महिमा ईज्ञ्यो, नर निर्धन नद्दी कोई ॥ ॥ ३ ॥ उंहड घर एक धेनु ठे, ते जव चरवा जाय: क्वीर जेरे जाबल जरे, नितु नितु तेणे गय ॥ ४ ॥ दोही ते छुके नही, जौतां जाएयो मर्म, पास जिनेसर प्रगटिया, उंहर अझुत कर्म ॥ ५ ॥ उंहड निसि निद्धानरे, सपनंतर सची **ञ्चावि; ञ्चावी देवी ईम ज**ऐ, हुं तुज पुएय प्रजावि ॥ ६ ॥ संतुष्ठी उद्दड सुर्षे, तुज समो-पिछं राज; नगरनी रखवां ि हुं, परतद्व आवी **ञ्चाज ॥ ७ ॥ उस वंसनी धापना, श्री जिनवर** प्रासाद, पासे मुज मंदिर करे, वली सुणावी साद ॥ ७ ॥

॥ चोपाई ॥ जाग्यो उंहर पुहलों राज, कहो महेता पुह-ता सें काज, त्रण वाणि सपनंतर तणी, हुं घाव्यो

(१३)

तुम कहेवा जणी ॥ १ ॥ सुणी वात मन रंज्यो राय, ततखिण मेली सवि समुदाय; जिन प्रासाद देविनुं ठाम, परठ्युं ठेस वंशनुं नाम ॥ १ ॥ ॥ वस्तू ठंदु ॥

नगर वासिऊं नगर वासिऊं, नाम ऊएस; उंहड पोढिउं निइज़रें, सुपन मध्य सची आवि आवी, तेणे वचने प्रासाद जिन, देवी ठाम निश्चल करावी, उंस वंशनी यापना, ऊवसि वसीआ जेण; उंसवाल अरफकमद्व, कारण कहीआ तेण ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

पुहतो वह्य राय अवगणी, नवल हुर्ज श्रीमा-लह धणी; आवे धाड धसंती घणी, नगर लोक सवि थयोरे वणी ॥ १ ॥ आवे लूसे लगके हणे, ते सरीसु नवि चाले कणे, खंज नगरने काढी खवा, तेड्यो चकवर्षि पौरवा ॥ १ ॥ स्वामी नगर वडुं श्रीमाल, ते स्नूसाये विण रखवाल; रहा करो म लावो वार, जड मोकलो जला जूजार (28)

॥ ३ ॥ कटक मांहिं जे गाढा कटा, ते टाली कीधा एकग; सुजट सहस दश केरी जोम, जे जाजे ज़ुपतिना मोम ॥ ४ ॥ मन चिंतव्या मनो-रथ फल्या, व्यापारी ते लेई वल्या; आव्या नगर ईशा व्यसवार, जय जागो वरत्यो जयकार ॥५॥ नगर थकी बाहिर जतर्या, जतारा पूरब दिशि कर्याः तिहां थानक श्रंबाई तणुं, करे लोक श्रारा-धन घणुं ॥ ६ ॥ रह्या सुजट विंटी प्रासाद, जाग्या वयरीना जनमाद; जिहां जिहां जाय तिहां जय वरे, अंबाईनी जेलग करे 11 9 11 ष्ठाव्यो दिन दीवासी तणो, मंडे जट उच्छव छति घणो; महा प्रज मंगल आरती, त्रुठी अंबाई महासती ॥ ० ॥ मया करे अंबाइ मात, रयणीमांहिं गढ कीधा सात; ए साते पड सबलां इशां, वयरी जेद करे नही किशां ॥ए॥ जो तहा मानि महारी आण, तो वसवा आप्या छहिठाण, खंध तुझारी कीधो वास, वेगे वालों वयरी मास ॥ १० ॥ चढे कटक वयारीने नडे,

(१५)

जे वंका ते पाए पर्के; मोटे मंदिर कीधा वास, श्रंबाई नितु पूरे आस ॥ ११ ॥ नगर श्रकी पूरव दिशि रह्या, प्रागवाट तेणे कारण कह्या; डंक कलस सिर दीधी धजा, श्रापी श्रंबाई गोत्रजा ॥११

॥ वस्तु उंद ॥ नगर निर्मल नगर निर्मल, सहेजे श्रीमाल; जय जट्टे जट मोकख्या, सबल सहस दश जोडि किधा; चक्रवर्त्ति जे पौरवा, तासु पुत्र पुहविं किधा; चक्रवर्त्ति जे पौरवा, तासु पुत्र पुहविं प्रसिध्धा; छंबाई थिर थापीश्चा, छति जन्नव जह्वास; प्रागवाट तेषे कारणे, वसीत्या प्रूरव पास ॥ र ॥

॥ चोपाई ॥ कमे कमे जाति हुई ठे घणी, वडी झाति श्रीमाखी (१) तणी, पोरुञ्थाड (१) प्रगव्या उसवाख (३), गूजर (४) डीरु (५) डीसा-वाख (६)॥ १॥ खडायता (७) खंडारा (०) खंडोल (८), काठुरा (१०) कालीका (११) कपोल (१२), नाइल (१३) नागर (१४)

(१६)

नाणावाल (१५), प्रौढ लाड (१६) लामूत्र्या-श्रीमाल (१७) ॥ १ ॥ हारइ (१०) हरसुरा (१ए) हुंबडा (१०), श्रीगुड (११) जाल-हुरा (११) जागडा (१३); धाकडीव्या (१४) जडीआ (१५) जुंगडा (१६), त्राह्मणा (१७) वीय़ (१०) वायडा (१७) ॥ ३ ॥ गोजू (३०) अमालजा (३१) गहिगहिआ (३१), मोढ वली (३३) मांडलीया (३४) कहियाः पंचम प़ुष्कर (३५) जंबूसरा (३६), सुह्रमवाल (३९) ने मंडेढेंडरा (३०) ॥ ४ ॥ अग्रिति (३७) ञ्चอतिवाल (४०) सुरहिञ्चा (४१), माथर (४१) कंबोजा (४३) करही आ (४४); पोरुआ (४५) सोरठीया (४६) सही, पद्वीवाल (४९) ज्ञाति वली लही ॥ ५ ॥ मडाइडा (४०) मंडोरा (४ए) जाए, मेवाडो (५०) वाढमीक (५१) वखाण, ठांचा (५१) चित्रावाल (५३) बथेर (५४), नरसिंगवुहरा (५५) सखंडेर (५६) ॥ ६ ॥ जामू (५७) नागझह (५७)

(29)

नी ज्ञाती, जयवाल (५७) बाबर (६०) नी जाति, धणुरा (६१) वैसुर अस्टिकी (६१). श्रष्टवगी (ँ६३) के पद्मारकी (६४)॥ ७ ॥ गोखवाल (६५) नागुरा (६६) नरा, तेरोटा (६९) साचोरा (६०) खरा; जोडेडा (६७) जेराणा (३०) पाहि, नीमा (९१) ज्ञाति वडी जगमांहिं ॥ ७ ॥ कथ्रोटीष्ठा (७१) कोरंटाल (9३), दाहिल (98) सोनी (94) सोध मयाल; राजसखा (९६) ने लुहमीसखा (९९), वडीसखा (90) ने वलीदोसखा (9ए) ॥ए॥ सूराणा (००) राजुरा (०१) जोई, मेलीतवाल (०१) मंडोरा (०३) सोई; आएंछरा (०४) न गणे रेख, वली ज्ञाति वागमुत्रा देख॥ १०॥ ॥ वस्तु ढंद ॥

झाति निर्मल झाति निर्मल, झाति निःकलंक; झाति वडी सहूको तणी, झाति कोई न्हानी म जाणो; जे व्यवसरे वित वावरे, वसुह मध्ये तसु वडो वानो; झातिमांहिं नर केटला, सकल

(20)

ज्ञाति सिणगारः बिरुद बोलावे बंदीजणह, महाजन राय साधार ॥ १ ॥ ॥ चोपाई ॥

बोख्या वर्ष विशेष छढार, तेहनो केतो कहुं विचार; वर्ण छढारे सहु मुख कहे, विगत विवेके विरसा लहे ॥ १ ॥ वते करीने बाह्यण झाति, करि हथी आरे इत्रि जाति, करसणकारि वैद्य कहाय, नाटकीयां नर शुद्ध जणाय ॥ १ ॥ ब्रह्म-चर्य पाले तप करे, कांकरी कनक समी मति भरे. सर्व जीवनी आणे द्या, सकल जाति ते ब्राह्मण कह्या ॥ ३ ॥ शूरवीर विक्रमनो धणी, बहु छारंज परिग्रह जणी; निर्दय कर हथीछारँ वखाण, सकल ज्ञानि कत्री छहिनाण ॥ ४ ॥ करसण कर्म सकल व्यवसाय, सकुली डाह्या पंक्ति मांहिं: जाएे कला करे व्यापार, सकल ज्ञांति जो वैद्य विचार ॥ ५ ॥ मूर्ख व्यवसर मारे छांग, नाचकर्मि नाटकनो रंग, जेह नाराच मखर देखींये, शुऊ सकल जाति पेखीये ॥ ६ ॥

(१९)

व्रह्मा मुखथी ब्राह्मण दृष्ठा, बाहू थकी ते इत्त्री हुआः वैश्य हृदय उत्पति वखाण, प्रगव्या शुद्र पायथी जाए ॥ ९ ॥ कंदोई काठित्रा कुंजार, माली मर्दनीया सूत्रधार, जेंसाईत तंबोली सार, नुमों नाक सुण सोनार ॥ ७ ॥ गांठा ठीपा ने सौहार, मोची चर्म करे व्यवहार, ए चिहुं उपर बोव्या सही, पंच जाति ए कारु कही ॥ U जेहनो विवाह जेइग्रुं मले, तेइनी झाति तेहमां जले: नीचकर्मि अति नीच कहाय, वर्ष अढार कह्या हिंदू मांह्य ॥ १० ॥ के जिनवर के ईश्वर ध्याय, के ब्रह्मा के गोविंद गायः वर्ण वखाएया मारग रह्या, असुर वर्ष ए अलगा कह्या ॥ ११ ॥ नव नारु ने कारु पंच, वर्ष चारना जोई प्रपंच; पटले मलिया वर्ण छढार, चाले सकल लोक व्यापार ॥ ११ ॥ बौध (१) सांख्य (१) नैश्रा-विक (३) नाम, जैन (४) छने वैशेषक (८) ताम; जैमनीय (६) व दरिसण जोय, मारग धर्म चलाव्या सोय ॥ १३ ॥ व दरिसणे ए वरते

(३०)

वेद, सोल सोल एकेके जेद; सोल बके बन्नू पाखंक, प्रगट्यां पृथ्वीमांहिं प्रचंड ॥ १४ ॥ खंक खरुं मति बे निर्मली, श्रोता सांजलजो ए जली; विमल मंत्रिने रासे जाए, एटले बीजो खंक वखाए ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ०० ॥

॥ इति श्री विमल मंत्रि नव खंमे सकल ज्ञाति नाम प्रगटीकरणे व्यष्टादश वर्ण व्यवस्था षट दरिसनाजिधानाधिकारे द्वितीय खंड संपूर्णम्॥

YU. 78 SOR 8

॥ श्रय ॥ ॥ खंम ३ जो ॥ ॥ चोंपाई ॥

चोसठ सहस आठ लख होय, द्वापर वरस विमासी जोय; द्वापर पूरो पहोतो सही, श्री जरी जिन्नमाल तव थई ॥ १ ॥ चोथो युग हवे (₹)

लाग्यो जाम, प्रगट्युं जिन्नमाल तव नाम; कल-युग नाम कहेवाये सोय, ज्यां गुए कीधे স্মৰ-गुण होय ॥ २ ॥ ते कलयुग दोहिलो जगदीस, चार लाख ने सहस बत्रीस; वरसं एटलां वडुं प्रमाण, सहेजे लहियें सेवा दान॥३॥ नित्य धर्म ते पर्वे गयो, तप करवो ते कपटे थयो; राजा मन वंकडा खपार, ब्राह्मण हाथे ले दृथीखार ॥ ४ ॥ साच शोच नही सुहणा मांह्य, पृथ्वी सदा माय; ँलोक घणा ते लेंपट थया, सफल नही घर आचार हता ते गया ॥ ५ ॥ संत सीताये सविहुं परे, खाजे पीजे डुर्जन घरे; करे कर्म केटलां कठोर, लूसे पृथ्वी पेसे चोर ॥ ६ ॥ पुत्र पिता न करे विलास, घणि थई बेसे घरदास; वह्रऋर सवि वीटावीवाय, नवि लागे सासूने पाय॥ ९॥ घर कई घर कइ मांडे वेढ, मोटा घरनी श्राणि ढेढ: कुछ्छठ न करे घरनुं काज, सास तणी नवि आणे लाज ॥ ७ ॥ सरंगट फरंगट दीये, सासु संसराथी नवि बीहे. खिण

(३१)

पेसे परण्याने कान, हाली कह्युं छाह्यारूं मान्॥ ॥ ए ॥ होरू घर कुंछारा सात, केइनो तातने केहनी मात; रले खपे तुंहिज घर जरे, ते खाई घर ठालां करे ॥ १० ॥ आपण बेहुनो केहो वरो, मानो बोल छाह्यारो खरो: माय बापथी थाउ जुञ्चा, धन मेलीने जरीये कुञ्चा ॥ ११ ॥ रात दिवस रलस्युं घर जणी, किसि चिंत मावित्रह तणी: राग्न पीठ वलि पीहर तणां, आणी जरिसुं हुं घणां ॥ ११ ॥ मोटी जोटी माने मात, मुज पीइरनी मोटी वातः वहूत्रारूने बोले फुच्चो, बापे बोलाव्यो रोसे जुच्चो ॥ १३ ॥ कहो काका करगर शी करो, इयुं करशो तेडिने छरो, वेगे वच्ठ टाली वांकमो, तुहि तणो ठे घर सांकमो ॥ १४ ॥ बेटो बोले बांगम बोल, विनय गयो सिरमांहिं निटोल; में नवि चाले घरनो नार, करशं अह्ये अगलो व्यवद्वार ॥ १५ माय ताय तव पड्यां गुलाण, पुत्रतणुं छहा टब्युं पराण; जोज्यों कलयुग करणी इशां, माय

(३३)

ताय छुख सहिआं किशां ॥ १६ ॥ देव देह-राके मान्या जोग, मात तात मिलित्रा संयोग: पुत्र तणुं आव्यं आध्यान, उठे मासे कयुँ पक-वान ॥ १९ ॥ जासक जिमण जिमाम्य्रं गाये रंग वधार्युं बहुः दश मसवामा दोहिलो धर्यो, जएयो पुत्र किम पोढो कर्यो 11 30 पहिखुं माता मेहेले लाज, प्रगट पयोधर कीधो श्राज; प्रेमे पुत्र तेणे मुख ठव्यों, लेई खोले रोतो राहव्यो ॥ १ए ॥ जए जोईने जोगिएि गाय, धवल देई धूतारी जाय; दिनदो परें लाहो गुल घृत, बोले मधुरां वचन अमृत ॥ १० ॥ माय ताय तव हरखे जयां, धन वेची घर ठालां कर्यां. जोज्यो जन बेटानां हेज, माय बाप बिहुं छालगी सेज ॥ ११ ॥ बेटानां धोयां मल मूत्र, जाएयं राखे स्ये घर सूत्र; जोली बांधी दीन बारमें, फूली फूई जासक जिमे ॥ ११ ॥ साजण इरख्युं हिंछने हस्यूं, नाम ठब्युं नारायण जस्य मस्तक टोपी मदफू तणी, करि कडली

(३४)

घर जणी ॥ १३ ॥ मोटां मांदलीआं वांकनी, पाय तणे माने मोजडी; अलजईआं आएयां श्रांगलां, काने कनक तणा वेढला ॥ १४ ॥ पाये घूघरकी घमघमे, बालुछडो ते छंगण रमे; साइमुं जोई करती काम, माडी हैने धरावे हाम ॥ १५ ॥ जइ वलगे आलिंगन आडे, प्रेमे प्रो पानो चमे; धसट करी धवारे माय, पालणडे पुहढामी जाय ॥ १६ ॥ करे काम हालरमां गाय, माता हइमे हरख न माय; पोढो थातो पगलां जोरे, पंच वरस जब वुले परे ॥ १९ ॥ मात तात तव करे विचार, बेटों आव्यो कुल सिणगार; कांई उंठव कीजे नवो, सुतज निशाले पाठवो ॥ १० ॥ मूर्ख पुत्र न आवे काज, मूरख कोई न आवे राज; इंस मांहे बग बेठो जिशो, पंडित पासे मूरख तिशो ॥ १९ ॥ मे-ख्या साजन केरा थाट, मोदुक करीने जरीयां माट; साल दाल प्रीसे घुत घोल, पांते बेठा करे कद्वोल ॥ ३० ॥ चुछा चंदन फोफल

(इरे)

मंडप मोटा दीजे दान; जरीव्या सुंडल धाणि चणा, साथे खनीत्रा लीधा घणा ॥ ३१ ॥ फूल तणा तव जस्वा पगर, जोवा मह्युं तव सांरूं नगर; ख़ुंप जरावी घोके चडे, ज़ुंगल जेरी जली तमतडे ॥ ३१ ॥ चाले महाजन मोटे जंग, सुत निशाले पुहतो रंग; अध्यारू आगल जई रहे, पार्टी खर्मी जे लेखण लहे ॥ ३३ ॥ कर जोमावी राख्यो ध्यान, कह्यो मंत्र सारस्वत कान; सकल शास्त्र धूरिमाइ लखी, निशालीआ करिआ सवि सुखी ॥ ३४ ॥ आप्या खडीत्रा सवि सुखडी, गाये गोरी गर्वे चर्मी; पहिलां मेहेलाव्यां पोती-आं, पंडित पहिराव्यां धोतीआं ॥ ३५ ॥ सूत्र सूत्र मागे आरंज, पंडित मांड्यो मोटो दंज; सोजी द्रुए बांजणनी जात, पंड्यो ताके मीरात ॥ ३६ ॥ जणतां छद्दार न चरे मुखे, जाणे पंड्यो मारे रखे; ठानुं विठानुं चोरी करे, पुत्र पंड्यानुं घर जुई जुरे ॥ ३९ ॥ पुत्र पढाव्यो सलमी माट, वाणि सीखवा मेहेल्यो हाट

(३६)

परणाव्यो जब पोढो थयो, आतुं पोतुं खरची रह्यो ॥ ३० ॥ तालुं त्यां सुधी प्रीत रहे, ज्यां कुंची मारग नवि लहे; कुंची सरखी आणी वहु, घर जंगाणुं पाडयुं बहु ॥ ३ए ॥ रात दिवस नुपुर हुंसींंग, सोनाने कोले पोसींग; एणी परें कींधुं घरनुं फेड, बेटे नीपायुं नीमेक 11 30 11 **छाज छह्नारूं वडपण इस्युं, ए वेटो बोले हे** किस्युं; वलतुं बोले सामो खसे, जई बेटो अने-थो वसे ॥ ४१ ॥ वदुत्रारनां तव माग्यां पड्यां, मन चिंतव्या मनोरय चड्या; सासू बेसे पडती पाट, वहु बेसे ख़ुंखारी खाट ॥ ४२ ॥ तुह्मे ज़ुर्ज कलयगनो व्याप. विस्वा छाढारज वरते पाप: धरती दोढ वसो धर्म जाए, सत्य वली अध वसो वखाण ॥ ४३ ॥ साठ वरसना डोसा जेह, तरूणी कन्या परणे तेहः खत्री वेसे वाले गाय, म्खेच्छ वली मुकावे धाय ॥ ४४ ॥ न गए घर मोटी कुए मात्र, नारि जजायें करवा जात्रः घरनां बालक मेल्हे बहार, चपलपणे हींडे स-

(39)

सार ॥ ४५ ॥ गुक्त सुधा नवि दे उपदेश, चेला छाएे गुरूस्युं खेद, योगी योगिणि नकटां थाय, ज़ुंर्च कलियुग तणो पसाय ା ୫୫ ୩ मांकम क्रुकड किंनर वहे, योगी योग मारग नवि लहेे: व्रत नवि पाले सुधा व्रती, अधवच ढांकी जाये यति ॥ ४७ ॥ गुरु चेला चेली महासती, करे वात जेमनी जावती: आप आपणा श्रावक कहे, मारग अवर अनेरा रहे ॥ ४७ ॥ थापण थापी हाथोहाथ, नवि आले जो आवे बाथ: परस्युं प्रेम घणां तुसणां, बंधव सजन साथे रूसणां ॥ ४ए ॥ अहप क्वीर ते मेहेले गाय, मध्यमने घरिं खाय; वारु त्राह्मण हेरां करे, लोजे अधम हेठे कर घरे ॥ ४०॥ चोवटं।आ थापे छन्याय. लिये लांच हरखे मनमांद्य; कर सोवन जलकावे वेढ, वारु वणिक वोहरावे ढेढ ॥ ५१ ॥ कलयुग वात असंज करों, लेइ वित्त वेचे दीकरी; बाइलमीने धावे गौर्य, ए`दर्ष्टांत हुआं कलिमांह्य ॥ ५१ ॥ ठ

(३७)

द्रशाण ते ठांदा करे, जाणे पात्र आह्यारां जरे। जत्तम नमे नीचने पाय, वरते वरस वीसासो आय ॥ ५३ ॥ महीआं मोटी मांमे वात, जाणुं सोवन इपा धात; फामे पाडे जोला लोक, भूतारा भूतारे फोक ॥ ५४ ॥ करे पुण्य के दिन ने रात, तेहनी करे निरंतर तात; न टले ग़ुरु न टले देवथ, खाए गरथ चढे जे हत्य ॥ ५५॥ राय राणा ते रुंध्या खले, खत्री नासे दीठे दले; न्याय नूप थोंके परिवार, निःफल मंत्र घणा संसार ॥ ५६ ॥ धर्मतणी थोडी वासना, अख्प मृत्य आवे आसना; दीसे देहि घणी आजलि, जावे जगति करे पातली ॥ ५७ ॥ दाता नर दारिडी घणा, ऋपण तणे घर नहि रिध मणा; पापी जीवे धर्मि मरे, कामधेनु ते जेखर चरे॥ ५०॥ जे जुठो ते वखाणीये, साचो नर ते छपमानीये; छलवे बेठा बोले मर्म, धोई पातिक करे विकर्म ॥ ५ए ॥ मा देखी मुद्द पातुं करे, नारी देखी इइडुं ठरे; बेटा देखी मंकें मोह, बाप तणो आणे अंदोइ ॥ ६० ॥ कृतयुग घर घर त्रेता फली, द्वापर गाम नगरको वली; कलयुग नर विरलो दातार, देशमांहिं लद्दीये सार ॥ ६१ ॥ परना अवगुण काढे घणा, दोष न देखे को आपणा; हांसे बोखे तेवा बोख, जाये जुनी प्रीति नीटोल ॥ ६१ ॥ थोंने दाने घणा मन मान, कुलमंमण थोमां संतान; गाज वीज घणी थोना मेह, वयर घणां ने थोना नेह ॥ ६३ ॥ कलयुग कुल मारग ठंडीत्रा, श्रावके नवला मत मंग्रिआ; के नावे देहेरे पोसाल, मनिवर देखी बोले गाल ॥६४ ॥ गुरे जणाव्यो धुर हित करी, छमी समी विद्यां नवि जरी; कली जावे कविश्वर कह्या, ते श्रावक गुरु सा इमा थया ॥ ६५ ॥ श्रावकनी धुर थोडी ज्ञाति, मांहिं पनी बहु जांति; ते वहेंचणी कलयुग झाव्या जूजुआ, गण्धर गृह चोरासी ॥६६॥ ज्यां हुइ पर्वप्रजुसण माल,त्यां सहु मांमे डाकडमाख; मांहो मांहे मोटा थाय, नाचे

(80)

गेल गाय ॥ ६९ ॥ पठे कोइ न दीसे वली, वाटे घाटे जेटे लली; लहे अवसर तो अलगा टले, जापो यती रखे छहा मले ॥ ६० ॥ मुंबज मरडे मोने काय, बेठा फुले चहुटा मांह्य; आवे कोइ पही परहुणे, जार घणो हे घर आपणे ॥ ६९ ॥ घर छाएयं छापण वावरे, नाम घणुं दीधानं सरे; कलयुंग वात करी जेटली, कहेतां नवि शोर्ज केटली॥ डा ॥ चाचि बेठी करें टकोल, <mark>श्राप वखाणे बो</mark>खे बोख;कहिने पाणी पाये पली, ते क्यारे पचारे वली ॥ ७१ ॥ योका सकल वि-कंख नर घणा, जाति हित ते सोहामणा; करे क्रयानक जाजो वरो, कलयुग कोइ न पारख खरो ॥ ७१ ॥ धर्म तणां यानक सीदाय, धर्में पलीख न पाणी पाय; देइ वंठे वलतो उपगार. ते दीधानो किशो विचार ॥ ७३ ॥ घणा रोग थोंका संयोग, जाजी जावठ थोमा जोग; धन नवि खरचे द्वोजी जाएी, कूमी कीरती वंडे घएी ॥ 981 सुधी विद्या थोने गम, फल नीरस जाकां

(88)

आराम; कपटी वेश धरे कापकी, नर जोलाने जाये नडी ॥ ९५ ॥ जोज्यो कलयुग केरी कथा, जे वाणी बोले ते वृथा; जमणी वाचा देई वले, जं देखे तृणुं, तो मन लेवा हींडे घणुं; जुओ कलयुग केरों वाय, लोज वाधे रंक ने रॉय ॥ 9ँ आ यौवन माटे मोडे **श्रंग, परनारीस्वुं जा**जा रंग; घर घरणीस्युं नावे थाट, करे वेढिँ नर फोकट माट ॥ ९० ॥ मने मेला नितु करे सनान, वर्धे जीवने छापे दानः धन जधारे करणी करे, आहं जे घर मह्युं, ते धन खातां लागे गर्ह्युं, मागे धन नर आवी छडे, धन माटें पग आवी पडे ॥ ०० ॥ जे जाणे ए महारो मित्र, जाते दिन ते थाये शत्र; वयरीनी परे वलगे वली, रहे मन मांहिं घणुं परजदी ॥ ७१ ॥ ए कलयुगनी मोटी खोड, कुनां चर्डे कलंकह कोड, खोटा सुफे साचा बसे, रस नीपना ध्यलग जो ढले ॥ 0 श।

(38)

इत्तण इत्तण परें कलयुग पूर, बारगणौ ते तपसी सूर; वसुद्वां घणो होसे विखवाद, वली मेहेलसे मर्याद् ॥ ए३ ॥ अउठ हाथनी हवडां देह, काले हायजि होसे वेह; वहे वरसे धरसे गाज, घणी हाण ने थोडा लाज ॥ 08 ॥ श्राव्यो कलयुग चोथो काल, माय बाप ते मेहेले बाल; को कहिने नवि माने गणे, सह चाले ढंदे आपणे ॥ ७५ ॥ साहमुं लवतां नहीं खल खांच, एके उत्तर श्राले पांच; विनय गयो ने वाध्यो मान, लख परिं लोजे मांड्या कान ॥ ७६ ॥ कोध कलंकी मुद्दवडी थयो, जपशम रस ते नासि रह्यो, माया मांडे मोटा यती, ष्ठाध बलती ते नासे सती ॥ ७९ ॥ मन कुडे मित्राई करे, कोइ न मांडे इइमे खरे, ज्यां देखे त्यां खेरी खाय, पठे रूप आपणे थाय ुठेठ ॥ धर्म तणा मारग के रह्या, सात इंग्रेसन ते सबलां थयां, करे तप घरखूणे खाय. हेश्वल मांहे मोटा थाय ॥ एए ॥ लेतां हा

(४३)

जि लहेका देय, देतां धर्म जणी धूजेय; मोटां माणस मेहेले माम, धर्म ध्याननां थोडां ठाम ॥ ए० ॥ पेट तणे कारण सहू रखे, सूधा मारग किए नवि पले; सीदातो लंखाइ गले, जोइ अर्थ अचिंतो ढले॥ ए९॥ हाट थाट ते मांड्या जाल, करे कुफ ते न्हानां बाख़; मोटां नगर ते गयां घटी, राय लोजे कर मागे हुठी ॥ एश॥ निरधारां ते निरधन थाय, छुर्बल दोह्रब्यां पेट जराय: वेद तणा ते महिमा ट**ख्या, वीस** वरसना मांटी पख्या ॥ ए३ ॥ नारी हिंडे मोडा मोड, बीजं घर मांडतां नवि खोड, घणे खबेने पाने वेस, वसे वन ने जवसे देश ॥ए४॥ वरसे वरसे मागे वरसात, ते कृतयुगनी मोटी वात; एक वार वरसतो रसाल, वरस सहस दश तो सुगाल ॥ एथ ॥ एक वरस छाएवूठो जाय, तो दुर्जन्त पडे जगमांहा; फेरे छोठे होय करवहं, कुंखयुगे जोइ पारखु खरुं ॥ ए६ ॥ धर्म तणी छावी कोइ करे उपघात जो मंहे, वात.

(88)

जजम छंग न माय, जिनवर जपतां छालस थाय ॥ ए९॥ छावे निद्धा घणुं लडथमे, थयो उपवासी छाको पके; देव तणां ते न गमे नाम, पूजा तणां परहां करे काम ॥ ए०॥ कलयुग एवो वे लागतो, ञ्चागल किशो होसे जागतो; कलयुग ठेसी करसी धर्म, ते ढुटसी अनंतां कर्म ॥ एए ॥ थोडी करणी लाजज घणो, ते कलियुगनो - स-हिमा जणो; कृतयुगनी मोटी मत तज़, जेह-ना दान तणुं नही गजु ॥ १०० ॥ सहस गण जो देता दान, एक गणुं तो लहेता मान; র্বর कलयुग तणुं वखाण, सहस गणुं हुए दिधुं दान, ॥ १०९ ॥ जे मांहे आपण उपना, धर्म तणां थानक नीपना; ते कलिकाल न बोलुं दोष, महावीर ज्यां पुहता मोक्त ॥ १०१ ॥ जिहां छग्यार गणधर हुआ, पोढा पद्योधर ते वलि विशेषे जबूं स्वामि, सालिजऊ राजगंह १०३ ॥ थूलिजड ने बहिनर सांत, सुन्नडा सुलसा मातः नंदिषेणे ने

(४५)

कुमार, कालिक सूरि हुर्ज गणधार ॥ १०४ ॥ महानुजाव ते मोटो यती, जेखे कलयुग वाली सरस्वती; गर्दजीख़नों फेमी ठाय, आएया शाक नवाणुं राय ॥ १०५ ॥ देव सुरि जेषो जीत्यो वाद, कुमुद चंंद्र उतास्रो नाद; बंत्र **श्र**ु जित्या नव[ं]बुद्ध, जित्या जगवा छढार प्रसिद्ध ॥ १०६ ॥ रोेल सोल दह जद्द पवित्त, जेणे गंधव जित्या जग सत्त; सत्त दिगंबर खितिचार, योगी दोई जित्या संसार ॥ १०७ ॥ एक मही पोढो प्रतिम**स्त्र, एक जोई जित्यो** एक त्रिद्धः एत्ता जित्या पटटण मकि, आव्यो कुमुद वादने कक्ति ॥ १०० ॥ जइहिं सीऊराज जेर्सिंग, जीपी कीधो कुमुद कुरंग; चार जोड लीधां निसाण, पंच पंचासी वर केकाण ॥ ३०७ ॥ जे साथे जूजार, सुहड सें लीधा ईग्यार; बसें सबखा ब्यासी सीस महंत, लिधा जे बहु बिक्तद ॥ १९० ॥ बलद चारसें जोडी लीया. নার্যান वक पंच बहुत्तर लीयाः मंथ लाख पणवीस

(४६)

प्रसिद्ध, दम्म दोई लख बहुत्तर लीध ॥ १११ ॥ टोडर बिरूद सुखासण खीयो, नग्गो ते वखी नग्गो कीयोः जस कीरति अधिकी बोलाय, देव सूरि हुर्ड कलयुग मांद्य ॥ १११ ॥ हेम सूरिनां मोटां चरी, टाली छमावस पूनम करी; जेइने पजमावइ परतक्त, जित्यो देव बोधि किय शिष्य ॥ ११३ ॥ कुमारपाल हूर्ज जुपाल, जग जीव दया प्रतिपालः मारि निवारी देश छढार, वावरवुं नही छणगल वारि ॥ ११४ ॥ जेहने साहण लाख ईग्यार, गढ्युं नीर पीजे निरधार; ते पण कलयुग मांहिं हुर्ज, जीवदया-नो कहीये उर्ज ॥ १रें ॥ कलयुग मांहिं गत्र जाणीन, जे चेले लोडण आणीन. गोर्ड। मंत्रण पारस नाथ, संकट पनीआं आपे ॥ ११६ ॥ जीराजलानो महिमा घणो, खंज-नगर ठे थिर थंजणो: सिद्धखेत्र तीरथ गिर-नार, कलयुग मांहिं दुया जद्धार ॥ ११९ ॥ वस्तपाल जगमु जगसीह, जीमसाह जमो जम-

(89)

सिंह; जावम जावम साह सारंग, कलयुग मांहिं रहाव्या रंग ॥ ११७ ॥ हूर्ठ विमल एकल युग मांद्य, तेह तणां करणी कहेवाय; सांजलज्यो सहु करी निटोल,जेहनो सरस कथा कल्लोल॥११७

॥ वस्तु ढंद ॥

लच्छि थपई लझि थपई, प्रथम युग मांहिं; पुफःमाल तव प्रगटींड, रत्लमाल जग जोई बीजे; श्री श्रीमाली थापना, एवुं नाम श्रीमाल त्रीजे, चोथे जुग हवे जोईयो, जाएे बाल गो-पाल; सचराचर सोहामएं, जलुं नगर जीन-माल ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥ नेज सहस श्रीमाली तणां, मंदिर मोटां सोहामणां; पिस्तालीस सहस विप्र वसे, वेद पुराण अर्थ अन्यसे ॥ १ ॥ बिहुं बिहुं मली कस्त्रो, परवाह, ब्राह्मण एक तणो निर्वाह; मुनिवरतणी सहस पोसाल, इस्युं नगर निरख्युं जीनमाल ॥ १ ॥ कलयुग कृष्टप वृक्त अवतार,

(খত)

वसेत्र हे हाना दातार; नानाविध हे ज्ञाति छनेक, वसवानों हे वडो विवेक ॥ ३ ॥ कोट मांहिं कोटीधज थोक, बाहिर ते लाखीणा लोक; प्रागवाट तिहां वासे रह्यो, नीनग मंत्रि कोटीधज कह्यो ॥ ४ ॥ घट्युं धन तव त्रूटी आस, महेता पूरो बाहिर वास; ब्राह्मण जर्णे विमासो चित. नगर अह्यारे आगे रीत ॥ ५ ॥ मध्य-रात्रे दोहिलो डुख धरे, महालखमीनुं चिंतन करे: आवि लज्जि वात इसी कथी, इएे थानक तुज जायग नथी ॥ ६ ॥ मान वात तुं महारी खरी, जा थानक वेगे परहरी: गूज्जर देश तणो सिणगार, गांजु नगर हुसि जयकार 11 9 तिहां तुं पामीश धननी कोड, लज्ञि वचने चाढ्यो परहोक; जाग्यो जीनमालथी धस्यो. जातो जइ गांजुर्धे वस्यो ॥ ७ ॥ नीन छंग नही एके खोड, नीने मेली धननी कोम, इख श्ववसर चावडो वणुराज, चिंते नगर वसावुँ छाज 🛛 ए 🗎

(अए)

॥ छुहा ॥

संवत आठ बिस्नोतरे, जग रुमो वनराय; जोये जे जंगल वडां, नगर वसावा ठाय ॥ १ ॥ अण-इलीओ गोवालीठ; जंगल चारे ढोर, एतां तेइज चाउडो, जे जग पाडे सोर ॥ १ ॥ मम बिइसि गोवालीआ, आ मुज माने धीर, जिणे कारण जंगल जमुं, कहुं हीआनुं हीर ॥ ३ ॥ नगर वसावा सोधिये, सूंदर सूरू ठाम; थाक्यो थानक जोछतां, वड लीधो विश्राम ॥ ४ ॥

॥ चोपाई ॥

अणहली उंतव पाठो वख्यो, वणफाराने आवी मख्यो; राज आह्यारुं राखो नाम, तो देखारुं इन्हुं ठाम ॥ १ ॥ आहेडी आहेडे चने, आणे जंगल आवी पने; करडो सुणहो धायो जीम, ससलो तोहि न ठांडे सीम ॥ १ ॥ सुरडु सुणहो दिये ठे फाल, ससो सुंहालो न्हानुं वाल; ससलो सामो थई घरथरे, नासे करनु ठुकर

(५०)

करे ॥ ३ ॥ वात हुई ए वनह मजार, कोतिक जोयुं घडी बे चार, आणी सीमे आव्यो ससो, जसों नगर पुर पाटण वस्यो ॥ ४ ॥ आ छालेखी गढ पायो दीध, राजन मोटां मंदिर कीधः श्वणहिलीआने नामे अस्युं, अणहलवामुं पाटण वस्युं ॥ ५ ॥ ठाम ठामना व्यवहारी आ, जे पर-देशी वख्खारीत्र्या; ते तेडी वास्या स्रावास, पायक राख्या मोटे ग्रास ॥ ६ ॥ नीन मंत्री गांजु जाणीन, बेटा लहर सहित आणीन; राज काज वहिलो वापस्तो, लहर देखि दंम नायक कस्वो ॥ ९ ॥ लंखे लहर लहर आपणी, वेगे गयो वंध्याचल जाी: गरथ वरे गज घट लावीजे, तो राजा सनमुख आवीर्ड ॥ ए ॥ सांमथली दीधुं मेह्लाण, गज देखी रा थयो हेराण; सांड-थलुं लां कीध पसाय, लोक जुणे न वरांशो राय ॥ ए॥ चिहु दिशि मोइत लहरिने चड्यां, टंक-साले सोनईआ पड्या; टंकसाल कीधी आपणी, राजन मया करे हे घणी ॥ १० ॥ श्री वनराज

Jain Educationa International

(५१)

दिवंगत हूर्ड, योगराज पद्दोधर थयो: योगराजनुं पतीजं आय, रत्नादित्य हुई तव राय ॥ ११ ॥ रत्नादित्य रायने पाट, वयरसिंह राय बेठो पाट: चिहुए पाटे चाख्यो दूर्ड, दंडनायक ते सद्दरिजि हूर्ज ॥ १२ ॥ लहरि पुत्र हुर्ठ साहस धीर, वरे वडो वीरातन वीर: वीर नामे बेटो जडरे, पाप जणि पगलां नवि जरे ॥१३॥ वीरकुमर गेइमीअ मजार, वीरमती परणाव्यो नार; राज काज ठांज्या व्यापार, मन सुद्धे मांड्यो व्यवहार ॥ 58 जत्रय काल पनिकमणुं करे, पूजा ध्यान धर्मनुं भरेः न करे प्रेमे पिछारी तात, श्री नवकार जपे दिन रात ॥ १५ ॥ वीरमती रहे प्रीयने हेज, श्वन्य दिवस पोढी **ठे सेज, मन चिंते मु**फ प्रीजनुं मान, पण घर सुनुं विण संतान ॥ १६ ॥ आवीं निद्धा रयणि मजार, सुपन लहे वीरमती नार; जाणे देवें आह्यां कमल, में पूज्या तीर्थंकर वीमल ॥ १९ ॥ जागी सुपन लही ते सती, प्रिय छागल आको जासपती, कह्युं सुपन तव हरख्यो

(५१)

कंत, श्रम कुख पुत्र हूसि पुएयवंत ॥१७॥ उत्तम गर्ज जदर व्यवतस्वो, दश मसवाडा पूरो धस्वो; जाणे जिनवर पूजा कर्ज्ञ, देउल व्यवस पड्यां जधरुं ॥ १ए ॥ जक्ति करुं गुरु गुरुणी तणी, संतोषुं सवि सोहासणिः जाणे जाउं शेत्रुंजे जात्र[,] जाणे देउं दान सुपात्र ॥ २० ॥ जे जे कस्वा मनोरथ छंग, ते प्रिय पुहचाड्या मन रंग; पुत्र प्रसविन हुन जयकार, आव्यो झाति तणो सिण-गार ॥ ११ ॥ जोसी लगन जोईजे जाए, जदय-वंत वे मूरति जाणः ससिइर दशमे घर आपणे, जच ठाम गुरु गुरुखम जुषे ॥११॥ कुर प्रह सवि नीचे ठाय, उत्तम उच्च पड्या ठे मांह्य; ठठे मंगल जमणो राहु, वयरीने सिर डाबो थाय ॥ १३ ॥ लगन मुदुर्त्त वेलाने मान, के ठाकोर के होसि प्रधान, संतोष्यो जोसी घर गयो, जनम योग करम हितु कह्यो ॥ १४ ॥

(५३)

॥ ढाल ॥ लोकीक पवामा रासनो ॥ ए चाल ॥ लावे रे लक्त वधामणां, करे जामणां जलां क़ंत्र्यर काज तो; एवी दीये व्यासीस तो, हो-ज्ये। चडतलो प्रताप तुह्य राज तो ॥ १ ॥ ন্ত ज़ुर्ग विमल नाम हूर्ग, ज़ुर जुर्ग रे हुर्ग त्रिजुवन जाण तो: जुर्छ जुर्छ नाम विमल ठव्युं, एतो वागिला जागिला ढोल नीसाण तो 11 2 11 जुर्च जुर्च॰ ॥ जमी गूमी पटोलडो. त्राटले तोरण बांधित्रां बार तो; नाटिक नवरस खेलीये. एतो नाचे वे न्हानी अपवर नार तो ॥ ३ ॥ जुਰ॑०॥ फइश्रर दीजे फ़टडी, ন্ত एतो कापडा केटलां काकीने रेसि तो, आमीय जरो एणे मांडवे, एतो सुंडले साजण फोफल देसि ॥ जुर्छ जुर्छ० ॥ करि वडी तो ॥ ४ ञ्चाडी वांकनी, एतो आंकनी आलडे आंगले रंग तोः वेढला लासी आलडा, एतो गालडा लना चाहिये चंगतो ॥ ५ ॥ जुन जुने । उसे मोकेली मोजडी, तोरे जडी रतन ते

(५४)

जत्तंग तो; टोलमी त्रिजुवन मोहीऊं, एतो जोइऊं सोहिऊं खदज़ुत छंग तो ॥ ६ ॥ जुर्ठ जुर्ठ० ॥ जंग मांफिआ जग जागता, एतो मागता मनइ मनोरथ पूर तो; जोजन साजन सामटां, एतो सामटां केलव्यां कूर कपूर तो ॥ ९ ॥ जुर्ठ जुर्ठ० ॥ गुल घृत घर घर लाहीये, एतों वाहीये अन्न अवारी आज तो; पुत्र जनम राय जाणीई, जलो वा-णीं वीरने विमल घर आज तो ॥ ७ ॥ ज़ुर्ज ज़ुर्ज० ॥ लोक तणा लक्त जोइसे, एतो जलुं सौहसे रे वली क्रञ्यमलुं आज तो; वीरनो पुत्रज बोलीआ, एतो आवीया राय करे अंगाज तो ॥ ए ॥ जुर्च जुर्च० ॥

॥ वस्तु ढंद ॥

पुत्र जनम्यो पुत्र जनम्यो, वीर घरे विमल, ढम ढम ढोल ते ढमकीश्रा, पंच शब्द नीसाण गजे, नरवर नाटके खेलिये; जरह जेद वर

(५५)

जेरि वजे, जनम खगे रखीश्रामणो; राज-योग तेणे ठाइ, मंत्रि मुकुट मोटो हुसी, कइको मोटो राय २ ॥ १ ॥ ॥ चोपाई ॥

खंक खंड मति हे निर्मली, जणतां गुणतां संपत वली, मुनि लावण्य समयची वाण, एटले त्रीजो खंक वखाण ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ १६० ॥

॥ इति पंडित खावएयसमय गणि क्वते, श्री विमल मंत्रि प्रबंधे नवखंने, कलीकाल वर्षने, उत्तमोत्तम गणधर, प्रजावक, पुरुष नामोचारे, नीनग लहीर वीर चरित्रे, विमल जन्माधिकारे, ॥ तृतीय खंड संपूर्णम ॥

॥ अय खंग चोयो ॥

॥ चोपाइ॥ दिन दिन वाधे विमल कुमार, छहनिस छंग विमल आचार; इरले वली मा दुलावती,

(५६)

विमल वाणि बोले जाखती ॥ १ ॥ विमल कुमर पोढे पालणे, मा हींडोले उसट घणे, हालरडे बाल, खिए खिए आवी हुसावे संजाल ॥ १ ॥ बीज तणो जिम वाधे चंद, वाधे विमल हीय छाणंदः जे बोल्यां लक्षण बत्रीस. विमल छंग सोहे निसदिस ॥३॥ सप्त रक्त ब बन्नत मली, सुद्य पंच दीरघ तिम वली; त्रण विपुल ने त्रण गंजीर, लक्तण बत्रिसो ते वे वीर ॥ ४॥ हाथ पाय तल लोचन श्रंग, अधर होठ बोख्या एकंत; जीव्हा **लातू वीस नख कह्या, सात रक्त सामु**डिक लह्या ॥ ५ ॥ कत्ता कृख नाक ने हिउं, खंध ललाट सरीसुं कह्युं; ठ उन्नत जायगनो धणी, ए वाणी सामुझिक तणी ॥ ६ ॥ बाहु नेत्र **ञ्चंतर** जान, नाशा घण अंतर प्राधान: दीर्घ सामुद्रिक कहे, ते जसवाद अनंतो लहे ॥ ७ ॥ अँगुली पर्वदंत नख वाल, सुझ्म चंब सकमालः लद्दाण पंच जिहां

(५९)

सामुद्भिक सोजागी सोय ॥ ७ ॥ जंघ विंग ग्रीवा लघुमान, पृथ्वीपती ते हुइ प्रधान; सत्व नाजि ने स्वर गंजीर, सामुंडिक ते बोस्यो धीर ॥ ए ॥ मोटुं मस्तक विपुंख खलाट; हृदय स्थल पुहसुं ते पाट, सामुद्रिक बोले सनमुखी, ते नर सदा सुमोटो सुखी ॥ १० ॥ कलश कमं-डल कमल मयूर, पुःफ वृद्ध वारि धनुपुर, श्रष्टा-पद छंकुश छजिराम, स्वस्तिक वृषज सिंह श्रीदाम ॥ ११ ॥ श्रीयह आरीसो गिरी बत्र, ध्वज चामर जव वाव पवित्र, कमल मयुर सुक साथिन: काठब शंख शुक्ति हाथीने ॥ ११ तोरण तुरी थाल अजिषेक, सर कुंडल श्रीवन्न विवेक: वज्रबंध ने नीवीबंध, बोलीयां ऊरध रेख प्रबंध ॥ १३ ॥ हाथ पाय रेखा जे तणी, एणे आकोरे दीसे घणी; जो बत्रीसे पूरां नंग, नर लक्षण बत्रीस सूचंग ॥ १४ ॥ पहिलां लक्षण शरिरनां हुआ, आ लक्षण रेखानां जुआ; बत्रीसे ाच्या बहुं जेद, खद्तापा प्रीठो बने विढेद ॥१५॥

(४७)

ए बद्दाण सामुझिक तणां, जो शरिरे खहियें थोमां घणां; तोहि ते नर नही सामान, जइ पेसे पृथ्वीपति कान ॥ १६ ॥ सिसनुं मंम्ण मुख जोईये, मुखमंकण नाके मोहीये, तेंद्रथी निरतां निरखो नयण, चंद सुर बे सरिखांरयण ॥ १९॥ पहिख़ं जोइये वपुनुं वान, तेह पाहे तनु तेज प्रधान, तेहथी सर बोलिउं सार, स्वरथी सत्व जगत्र छाधार ॥ १७ ॥ राते खोचने रामा घणी. पीले पदमा पामे धणी; लंब बाहु ठकुराई लहे. शरिर पुष्ट ते सुखे गहगहे ॥ १ ८ छिदय विशासे जोगी नीक्षो, मस्तक मोटे जूपती जलो; पुहली कटी ने पाय विशाल, बहु बेटा सुख सदा रसाख ॥ १० ॥ श्रंग सनेहि कही सोजांग, दंते सारं जोजन जाग; बंब सनेहि सेज सुकमाल, चरण सनेहि चलण चुसाल ॥११॥ काम पखें जे काठा पाण, वाहन विण कम कोमल जाण; वाणि सरस वयण उचरे, तेनुं जोग्य जुबन वीस्तरे ॥ ११ ॥ प्रकथ समी जल छंगी जरी, जोजे जन बेसारी

(५ए)

करी: डोण नीर जो उंढुं थाय, मानोपेत पुक्तब कहेवाय ॥ १३ ॥ गुणतां जो पहोंचे देह तणां, छठोत्तर छंगुल छापणां, शास्र तणो साचो संकेत. बोल्यो पुरुष प्रमाणोपेत ॥ १४ ॥ साम-डिकनां लक्तण सवां, दीसे अधिक अंगे श्चजिनवां; दाखित दया मया नही पार, विमस कुमर ते गुण जंमार ॥ १५ ॥ आधा ससिहर सरिखुं जाल, पुस प्रमाण लोचन विशाल: कम-कोदर संदर हढ खंध; सरला बाहु तणा बे बंध ॥ १६ ॥ काला कुंतल कोमल काय, जामी जंघ पटोलां पाय; कोट खंधने आवी अने, वांकी जमूह धनुषस्युं नडे ॥ १९ ॥ सरली नासिका दीवातणी, दंत पंति किर मुगता मणी; राजी जीह अधर गुण घणो, जाएें रंग प्रवाली तणो ॥ १० ॥ पूर्ण चंद्र अधिको मुखवटो, कटिनो लंक ते दीसे कटो; लंब कर्ण ने सोवन वर्ण, जिहिं युगतां पहेरुवां आजरण ॥ १ए ॥ बालक बालां सरिसो रमे, पुइतो वरस वेगे पांचमें; किस्यं

(६०)

किजे मुरख पुत्र, विद्या विष न रहे घर सूत्र ॥ ३०ँ॥ विद्या रूप करूपां कहि, विद्या धन **ठानुं ठे सही; चोर चरम न खेई** शके, नवि सीदाये विद्या थके ॥ ३१ ॥ गाम नगर पामे परदेश, विद्या माने नगर नरेश; विद्याथी वाधे जसवाय, विद्या सवि संयोग उपाय ॥ ३१ ॥ नृपथी मोटो विद्यावंत, ठाकुर ठामजि मान बहुंत: विद्यावंत जिहां जिहां जाय, तिहां तिहां मान घणेरां थाय ॥ ३३ ॥ जेहने दुर्फे विद्या गाय, तेहने नही श्रहिगुंमाय; जां जीवे तां दुफे सही, मुर्आं पनि विसूके सही ॥ ३४ ॥ पांच वरस बेटो लालीयें, दस तिशाले संसालीये; वरस सोलमें खंधे रह्यो, मोटो मित्र समाणो कह्यो ॥ ३५ ॥ करो सजाई घर आपणे, जिम बेटो निशाले जये; महूरत पूठ्युं पंक्ति पास, वडे महोष्ठव मन जल्लास ॥ ३६ ॥ तेडी महाजन दीधं मान, आरोगावी आप्या पान; जस्तो खुंप सुपासो खरो, वीरे की भो जाजो वरो ॥३९॥ तुरी

({ ?)

पलाणी थयो असवार, जोजक जाट करे जयकारः माथे पाटी क्रपा तणी, कर खडीन सोवन सेखणी ॥ ३७ ॥ गाये कामिनी करे टकोल, विइस्यां कुंछर तणां कपोख; धरीयां वत्र चामर बिद्धं पास, पुइता पंडितने आवास ॥ ३ए ॥ पहिलों सरसतिने कस्त्रो जुद्दार, कंठे **ठ**व्यो एकाजलिहार, पत्नि लागे पंक्तिने पाय, मागे विद्या विनय पसाय ॥ ४० ॥ मेहेब्यां खिरोदक दस वीस, पंड्याने मन हुइ जगिस_; पंड्यो प्रथम जणावे जले, नीशासींज जीवने सले ॥ ४१ ॥ फूली खर्मीष्ठा खोला जरपा, निशालीश्चा अवर परवरषा; विद्यानो कीधो ट्यारंज, जोई मुहुरतना थिर थंज ॥ ४१ ॥ पुष्य नइत्र दसमी गुरुवार, लग्न चराचर छंशविचार; ससी दुशमो दुशमो रवि योग, नही जरणी जडानो जोग॥४३॥ विद्या छारंजी घर गयो, दिन दिन जणवा ओच्ढव थयो, सकल सूत्र सीख्यां सवि छंक, वहेला लीधा लिपिना लंक ॥ ४४ ॥

(६१)

॥ जुजंग प्रीयातर्क ढंद ॥

तरिं इंस लिपो जूत अतिमित्त, यक्त राक्तसी उम्निको मीनडी, नागरि पारसी बारणकी लाम, लिपमेल देवी सींधवी यावनी तुरको डावमी मालवी ॥ १ ॥

॥ चोपाइ ॥

जाणे संस्कृत पाकृत सुधी, जाणे शोर-सेनि मागधी, पेशाची अपचंसी वली, एटले ए ठ जाषा मली ॥ १ ॥ नारि पुरुष इय गय वृष ठत्र, कुर्कट कामिणि मणि सुपवित्र; दंड खडग सवि लक्षण लहि, विद्या वास विचारी कहि ॥ १ ॥ चक्र शकट श्वने गुरु व्यूह, जाणे रमी रमाकी जूछ; राजनीति जाणे निज धर्म, जाणे कनक रूप सिधि कर्म ॥ ३ ॥ मंत्र तंत्र औषध जे जडी, जाणे डाकण शाकण नडी; जाणे नारी जंगी जोगवी, जाणे जे सेवक जोगवी ॥ ४ ॥ जाणे शयन विखेपन वास, जाणे

(६३)

वैद्यक वचन विसास; जा**ऐ नाच गीत नवरंग**, जाएे नाद जेद सपतंग ॥ ५ ॥ पहेरि जाएे नूषण वस्त्र, जाणे सवि अन्यासी शस्त्र; जाणे श्रन्न जद्क केलवी, पंथ जाख प्रीठे नव नवी॥ ६॥ जाणे युद्ध शुद्ध साचवी, जाणे काव्य कथारस कवी; जाँगे नगर मान खंधार, जांगे वणीग कला व्यापार ॥ ७ ॥ शाक पाक परि नव नव सही; जोंजन सतर जक्त ते कही: जाणे जन थंजी जन वाद, जाणे अवर उतारि नाद ॥ ७ ॥ जाणे दान मान उचित, जाणे तर्क सकल साहित्यः जाषे जे रोपो आगम, जाषे नीर करावी ठाम ॥ ए ॥ जाएे गज घोडा खेलवी, जाणे जे परे परं पद्ववी; जाणे पुष्फ तणां विज्ञान, जाणे सकल समारी पान ॥ १० ॥ जाणे जे वरते चित्राम, जाणे रुप कला अजिराम; जाणे त्रसइ सीलावती, जाणे गणित कला जे हती ॥ ११ ॥ गुणाकार ने जागाकार, जाएया खोक तणा व्यापार, जाणे यंत्रकला जल तरी, पटले कला

(६४)

हुई बहोतरी ॥ ११ ॥ जापे विनय विवेक विचार, जाएया उत्तमना आचार; जापे नगर वसावी करी, जापे वरती वीघां जरी ॥ १३ ॥ पेर पेरनां: प्रीठगां पकवान, ठे लघु वय पप हृइये सान; पुरुष ताी ते बहोतेर कला, प्रीठग सकल शास्त्र आमला ॥ १४ ॥

।। दूहा ॥

विमस कुंअर की का करे, रंजे नव नव सोक; नगर मध्य जिहां निसरे, तिहां तिहां नरवर योक ॥ १ ॥ वीरे वनीता प्रिडवी, सुतने सुंपी जार; आपण दिक्ता आदरी, सहगुरु सरिस विहार ॥ १ ॥

॥ वस्तु ढंद ॥

वीर नरवर वीर नरवर, विमस घर जार; थिर चप्पी दोये सीखडी, छवनी वच्च छन्याय टासे, पाप कर्म सवि परिहरे; करे पुन्य जिन छाष पासे, घर घरणि मोकसावी करी, वीर

(६५)

मंत्रि खीये दीख, करे विहार विदेशके, पाखे सह-गुरु सीख-पाखे सहगुरु सीख ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥

दिन दिन दिसे दीपतो, जिम उदयाचत जाण; विमख पेखी वयरी तणां, पोढा पडे पराण ॥ १ ॥ वखी विशेषे विद्विसे, वद्देसो विमस प्रधान; रखे ते राजसे वापरे, आह्य टसशे आजि-मान ॥ १ ॥ एक वयरी विष वेखडी, ए बेहु त्रिजि व्याधि; जे जगंती वेदीये, तो सिर हुए त्रिजि व्याधि; जे जगंती वेदीये, तो सिर हुए समाधि ॥ ३ ॥ वीरमती विरुजं सुणी, बेटा रख्खण कजा; पट्टण परहुं महेली करी, पुइती पीयर मजा ॥ ४ ॥

॥ चोपाई ॥

वीरमती तव पिहर गइ, संपति सघली पूंठे रही, साथे बेटों विमलकुमार, जइ की भो मालसा जुहार ॥ १ ॥ आगे जाई घर अनाथ, आबी बहिनर बेटा साथ, मोटांपणमांहिं सुद्रघा रसे,

(६६)

छन्न पान पूरां तो मले ॥ १॥ जां पोते हुई पुएय प्रकास, तां घर लखमी लील विलास; पाप तणो जव पासो पडे, तव घर कूरी कुकस झके ॥ ३ ॥ रह्यो विमल मास्युं मोसाल, चारे चंचल बन्नर वाल; इणे अवसर देवी अंबीका, आव्यां ढे छारासण थकां ॥ ४ ॥ नव यौवन नवसो संयोग, देखी देवी वंठे जोग, कुंछर कहे पर-नारी नीम, छाणपरणी कहो गानुं कीम ॥ ५ ॥ र्शील लगे तूठी अंबीका, त्रण वर दीधा पोता थकाः बाण प्रमाण ते गाउ पंच, इय लक्तण तां खद्द प्रपेंच ॥ ६ ॥ नवल इप निरतिं निमलां, त्रीजी अफ़ुत अह्तर कला, वर देइ देवी संचरी, विमल वर्धावी विद्या खरी ॥ ९ ॥ कफुआं फल नवि खागे श्वंब, सोने किह्मे नवि खाँगे संब: माणिक मेख न खागे खगार, सीख न मुके विमख क्रमार ।' ज ॥ सीख तणो महिमा मन वस्यो, झाच्यो मंदिर इइडे इस्यो: जोज्यो पद्टणि प्रे प्रस्ताव, वात हुइ ठे सरस स्वजाव ॥ ए ॥

(89)

वसे व्यवहारी श्रीदत्त, तेह तणे घर जाऊुं वित्त; श्रीबेटी यौवन वय हुइ, जोसी विवाह मेलो जइ॥ १०॥ जोसी नयर घणे आफले, मलता वरगनो वर नवि मले; जोसी कहे सुण महेता वात, लहिर वीर जे जग विख्यात ॥ ११ ॥ तेह तणो वे बेटो विमल, पद्म सरोवर जेवुं कमल; तेह तणी जे जनमोतरी, मुऊ टिपणे लखी वे खरी ॥ ११ ॥ ते सरिसो विंवाइ आदरो, वर मोटो पृथ्वीपती करो; ते सरिसो मखतावस मले, मन चिंतव्या मनोरथ फले ॥ १३ ॥ रहे गेहमी घर माउला, जार्ठ तुद्धे तत्र उतावला; वहेला वहेले वहिलिया करया, सुणवंइ सरिसा जोतस्वा ॥१४॥ ठडे पीश्राणे रथ संचरे, खेत्र पास देवि स्वर करे; सुणवइ कहे वर वे इहां, पण जध्यें उतारो वे जिहां ॥ १५ ॥ घर माजस तणे जव गया, वीरमती बव जांखां ययां; आगे इहां रह्यां ढुं छुखे, रणीउ को द्याव्यो होय रखे॥ १६ ॥ मन विण अप्राषण

(६८)

दिये घणां, वीरमती मेखे बेसणां; कहो विवहारी केहि काज, तुद्वे पधास्त्रा आणे राज ॥ १९ ॥ पुत्र तुमारो विमल कुमार, होसे छह्य बेटी जरतार; वेगे विवाइ मेलो आज, छह्यारे तुह्य सरिसुं काज ॥ १७ ॥

॥ दुहा ॥ पान छाह्यारे पद्धरे, रंग तुह्ये न दिवाय; वीर-मती मुख ए इस्युं, ञवलुं कथन कहिवाय ॥१ ॥ सोणगंठिं सेठे सबल, बंधी बोखे ताम; डवे महूरत वेला टले, निश्चे कीजे काम ॥ १ ॥ खेन्नेश्च **वे वर माउ**खा, पूठया विण किम होय; वेगे वाहण जोतरी, त्यां पहोंचे सहू कोय ॥३॥ वादण देखी आवती, मामा मन चिंतेइ, को सेवा आवे किशूं, कारण कडब तणेइ ॥ ४ ॥ जोजन करता माउखा, दीठा खेत्र मजार, पासे आवी परहुणा, पूछे विनय विचार ॥४॥ जे तुझ घर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only

(६ए)

जाणेज हे, ते सरिस्युं छाह्य काम; ते तेडो हतावखो, विमल विमल जस नाम ॥ ६ ॥ ॥ चोपाइ ॥

साद करे मामा मन हेज, कडब मेखी छाव्यो जाणेजः पमखो मामा में सिग जरी, आवं कलस चडावी करी ॥ १ ॥ आव्यो विमल कुंछर मलपतो, जाणे सिंह गुफा-मांहिं हतो, उखट जर आखिंगण मह्या, विवाह सेसी वेवाही वख्या॥शा घर माजल गया तेणि वार, जाई बहिनर करे विचार: विवाह विमल तणो किम हुसि, घर जाणेजो किम परणसि ॥ ३ ॥ आदि वयर मामा जाणेज, छागे एवां बोख्यां हेज; जाणेजो म आणज्यो घरे, जो मामा सुख वंठे सरे ॥ ४॥ बहिनर बंधव मन ओलखे, जाई मांहिं रही ते जखे; एता दिन रखीआं ते फोक, जाई थकी जला स्रोक॥ ५॥ ज्याँ धन त्यां सह

(80)

करे, धन विए जाई ढेहा धरे; वरवी बहिन जर्णे जाखडी, धन विए परणाववा व्याखमी ॥ ६ ॥ जहिंयें धन सांपडसे मुऊ. तहिंयें पुत्र परणाविस तुऊ, इम बोली वीरमति मान, जिम नवि लाजे तारो तात ॥ ९ ॥

॥ वस्तु ॥

कृपण सरज्या कृपण सरज्या, सवे धनवंत; रयणायर जल खार पण, कमलनाल कंटके जरिद्य; चिंतामणि पाषाणमें, कल्पवृक्त काठमें करीद्य; चंद्र कलंकी व्यवतग्यो, सूरतणे सिरताप, विमल दरिद्दे दोखिर्ठ, विद्दि वलगाडीव्यां पाप-विह्ति वलगाकित्यां पाप ॥ १ ॥

॥ चोपाइ ॥

विमल प्रजाते गयो निज काम, गोक्र चारे सूने गाम, दर देखी खोसी खाकडी, जाये पाधरी नवि वांकनी ॥ १ ॥ धव धव डक्षीआं पाडां कीध, प्रगठ्यो कनक कक्षस

(5?)

ते लीध; विमले विरमती कर दीध, मन चिंतवे मनोरथ सिद्ध ॥ १ ॥ खंक खंड मति ठे निर्मली, श्रोता सांजलज्यो ए जली; विमल मंत्रिने रासे जाण, एटले चोथो खंक वलाण ॥ ३ ॥ सर्व गाथा ॥ १०४ ॥

इति पंडित खावण्यसमय गणि कृते, विमख मंत्रि मनोहर प्रबंधे, नवखंडे विमख खेख-शाखा करण, छाषादश खिपि, षट् जाषा, ६४ कखाजिधान, ३१ बद्दाण विवरण, मातुलगृह गमन, विवाह मेखन. खब्ध निधानाधिकारे, चतुर्थ खंग समाप्तम्

(8R)

॥ खंड पांचमो ॥

॥ चोपाइ ॥

वीरमती सागी हरखवा, सिछा साथि कन्या निरखवा; जे डाह्या खद्दण्पना जाए, सामुडिक बोक्यां छहिनाणा ॥ १ ॥ चाक्यां छति छांमबर करी, पुइता पट्टण श्रीदत्त घरी; निरखे कन्यानुं वसी रूप, जोइ कम्या बद्दाण सक्रप ॥ १ ॥

॥ दृह्ा ॥

चंद्रवदनि चंपक वनी, निरमस नयण विशाल; रामा राता अधर जस, संपति सुरक रसाख ॥ १ ॥ अंकुश कुंडल चक्र धज, मंदिर कुंजर कुंज; बत्र कमल हय जास कर, राज तणे घर रंज ॥ १ ॥ जस कर रेखा रुअंडी, तोरण गढ आकार; वरि आवी, कुल्नदासने, राणि राज दूआर ॥ ३ ॥ पामे पति, नरपति

(53)

जसो, पुत्र जर्षे ते सूर; जस नारि कर निर-खीये, रेखा बन्न मयूर ॥ ४ ॥ मृग नयनी मग कंधरा, मृग पेटि सुकमाल; इंस गमणी सा सुंदरी, जूर्वतिने घर जाल ॥ ५ ॥ जस सिर केस सुललित हुए, मुख मंगलने मोड; दक्तिण वली नाजी वली, पति पामे विष खोम ॥ ६ ॥ जेइ कर लंबी आंगुली, जेह सिरलंबी वीण; आग घणुं वद्वज सहित, घर धन सहज प्रविण ॥ 9॥ कृष्ण सरिखी सामली, गोरी चंपक वान; श्रंगवद्न ससनेइलां: जीले रंग निधान ॥ ७ ॥ कन्न कम-ल के पिंगली, देह कंति फलंकत; मणि माणिक सोना तणां, घणां आजरण लहंत ॥ए॥ हसतां तिखवट साथीन, जे नारिने थाय; गज रथ घोडा प्रीय घर, सहसगमे बंधाय ॥ १०॥ माबे पासे ने गले, लंजण हुये थणेइः कइमस तिखक जै कामिनी, पहेलो पुत्र जणेइ ॥ ११ ॥ छंग छाहप पर स्वेद जस, छाहप रोम सिर जॉस: निज्ञ जोजन थीडलां, छत्तम वजण

(88)

॥ १९ ॥ विनयवति ने कुलवति, शीखवति ने सुविचार, जाजे पुएये पामीये, कलावती घर नार ॥ १३ ॥ साथल कदलो थंज मय, कर चरणे नही रोम; विपुल गुह्य मणि गृढ जल, निल-षटि छाद्धो सोम ॥ रेध ॥ कटि लंकी उन्नत इय, पुष्टु पश्चिम जाग; नारि इसी घर झादरो, जिम लहो लखगी लाग ॥ १५ ॥ साथ-ल होठ पयोधरे, रोमराय घण हुंत; जस मुख पसीए पांक्इं, वहिलो कंत इणंत ॥ १६ ॥ जाडी जंघा जेह तणी, के विधवा के दास; के दारिजि ज़खणी, रामा हृदय विमास ॥१९॥

॥ चोपाई ॥

जेइने पूंठे हुए आवर्त्त, ते सारे जरतार महंत; नाजितणा आवर्त्त विचार, माने देव समो जर्त्तार ॥ १ ॥ कटि आवर्त्त हुए जे तणे, ते ठांदे हींके आपणे; बोली बाला त्रिहुं प्रकार, परखीने परणो संसार ॥ १ ॥ क्षंब क्षकाट उदर जग जास,

(54)

ससरा देवर (छने) वर विणास; सामुझिकनी माने झीख, के ठंडे के पडसि जीख ॥ ३ ॥ संब ललाट ससुरो संहार, लंबोदर देउरने जार. लंबे जग पति जाये मरी, राक्तस रूप नारी अव-तरी ॥ ४ ॥ खंब होठ जीइ कालो बुरो, पीली झांख साद घोघरो; अति गोरी अति काली नार, वरजे व माणे संसार ॥ ५ ॥ इसतां गाले खाका पर्के, रामा रंग रमल ते चडे: चालंतां जुंइ कंप छापार, कामिनि वयर तणी करनार ॥ ६ ॥ पाय तणी वचली आंगुली, टुंकी जुमि-साथे नवि मली, ते जो टुंकी उन्नत रहे: जती नारि अनेरों लहे ॥ 9 ॥ अंगुठा पासे आंगुली, जन्नत जूमि न फरसे वली; कुमरीपणे जारज जाणेह, यौवनवय माणस संदेह ॥ ७ ॥ अति कंची छति नीची वली, छति जाडी ने छति दबसी: छति गोरी छति काली नार, ते छौगण छापणे निवार ॥ ए ॥ काक जंघा नारि मम राख. घोघर सर ने पीखी आख; जो पति गाढो जुने

(98)

थाय, मारे दश मसवाडा मांह्य ॥ १० ॥ श्वंग छघोर नाक वांकरुं, पग डापरा मुख सांकरुं; जनी रहि जिसित्राज़ई, वनिता वयर काज घर हूई ॥११॥ पीखुं वदन देह जुंखरुं, जाणे रोमरा-यनुं घम्धुं, राय तेे घर जाइ होय, दासपणुं पण पामे सोय ॥ ११ ॥ वदन माने जोज्यो गुझ, सरिखां नयणां बुफ; जिस्युं नक इस्यो गह्य ष्ठाचार, हस्त बाहु कम जैंघ विचार 11 23 11 करने माने पायनों रंग, बाहु माने पायनो जंग; हृदय स्थल सरिखो सिणगार, सत्व माने पामें परिवार ॥ १४ ॥ आति लांबू ने आति कूबकुं, ञति जारुं ने श्वति रांकरुं; श्वति गोक श्वति कालो वान, ए ढ जग दोजांगी मान ॥ १५ ॥ काठब पुंठ जिस्यो गज खंध, छति संकोच पद-मनो गंध; श्रति उन्नत ने वृत्ताकार, व जग शुज बोख्यां संसार ॥ १६ ॥ लांबे दांते लाहमी मली. काक स्वरा ने उठांठली; हाथ पाय टुंटी पांगली, परएपाथी अपपरणी जली ॥ १९ ॥ चोल जेनि

(99)

चंचली चीपनी, सामिणिस़ं बणि सुंखिणि सकी; जाई विण घर जुंडा तणी, नारि म आणिश ते निर्गुणी ॥ १७ ॥ हमइम हसे ज़ुंम परे जसे, डोले डारे चुंबडि धसे; लंपट लोक न आणे साज, ते परपंचानुं केहुं काज ॥ १ए ॥ दीण सीण दीण दासना, ते अपलक्षण नही आसनां; जे जे खद्दण नारि तणां, श्रीने श्रंग वसे ते षणां ॥ २० ॥ कदली थंज जंघ जुअली, दंता दीपे दाडिम कली; पुष्टा गाल लाल आंखनी, राता छाधर मधुर जाखकी ॥ ११ ॥ इरि खंकि हींडे मलपती, ते गज इंस हराव्या गती; रूपे रंजा के रोहिणी, के ईडाणी के मोहिनी ॥ १२ ॥ द्यमरी कुमरी के जरवसी, नागलोकनी नारी इसी; जोतां रुप न आवे पार, उर पहेस्वो एका-हार ॥ १३ ॥ वेणीदंम लंब ন্তমি लह-रूप ईडाणी पासे रहे; काने ज्रडित सहे. खिंटली, जबके जाल हाथे वींटली ॥ २४ ॥ नामे पनोति श्री सुंदरी, सामुझ्किने

(30)

सक्तण जरी; पुढे बोस जिके आकरा, ते ते उत्तर आपे खरा ॥ १५ ॥ गीत नाद ने नाटक कला, जाणे धर्म नीती निर्मला; मंत्र तंत्र जाणे विङ्यान, जाणे ताल तणां ते मान ॥ १६ ॥ जाणे उचित कला जे चित्र, जाएे वचन जेद वाजित्र; जाएे ज्ञान किया जे दंज, जाएे जे वरते जल-थंज ॥ १९॥ मेघ वृष्टिना जाणे मर्म, जाणे जख ञ्चाकर्षण कर्म; वन रोपन गोपन आकार; जाएो जे जे धर्म विचार ॥ २० ॥ शकुन शास्त्र जाणे गुरु थकी, जाणे वाणी जे देवकी; जा**ऐ व**स्तु वधारी वान, जा**ऐ मधुरां** रांधि धान ॥ १९ ॥ जाणे सोवन रुपा सिद्धि, श्रापे उत्तर हैडा बुद्धि; जाणे मंडावि प्रासाद, जाणे करी वितंडा वाद ॥ ३० ॥ हय ম্বদ্বয सामुडिक जणी, जाणे जे गति खीखातणी: जाणें तेल सुगंधी करी, करे परिका ते गज तुरी । ३१॥ सारेपासे रमतां गंग वडो, जाणे जे खुंदी गरवको; कर खाघत वेती पडवडो, जोजन

(এ৫)

विधि जाणे चडवकी ॥ ३१ ॥ जाणे वणीक कलाना जेद, जाएे पहेरि नव नव वेष; नयपे संज्ञा सघलि लहे, मुख मंमन वर मंमन लहे ॥ ३३ ॥ गुंथे वेणे फूल फूटडां, जाणे कथन कही वांकडां; आणे युक्ति अनेरा मांह्य, उत्तर देतां वार न खाय ॥ ३४ ॥ देश देशनी जाषा जणे, वैद्यक कला लहि महापण घणे; जाणे सोक तणा व्यवहार, जाणे पहेरी सवि सिण-गार ॥ ३५ ॥ लहे हरिआली छंक छनेक, जाणे वीणा नाद विवेकः पतिरंजन अंजनना योग, चोरासं। आसन संजोग ॥ ३६ ॥ जाणे बाल चाल हेलत्रो, जाणे करि कुंकुम केलवी; जाणे सोवन वर्ण विशेष, लिपि अष्टादश लहे अशेष ॥ ३९ ॥ लामी चौडी ने सोरठी, हाडी म्ह्रोधी मरहठी; कर्णाटी काह्रडि डाहली, बिपि मागधी ससी सिंहली ॥ ३० ॥ खुरसाणी गूजरी कुंकणी, इम्मीरी परतीरी जणी; माल-

(00)

वणी लिपि लहे विचार, बोली लिपि एटले छढार ॥३९॥ चोसठ कला नारिनी जणी.जाणे छाधिक वली ते घणी: सवि पारखां लहे बोलतां, पहेरे वस्त्र छांगे सोइतां ॥ ४० ॥ करे वात डाहिम आपणी, जाएे पंच काव्य ते जणी, जाणे चूर्ण सकल ऋजिधान, जाणे पर उतारि मान ॥ ४१ ॥ जाणे माकिण शांकिण मही, जाणे जुत प्रेत निग्रही: जाणे दोइस्युं हुये जेइथी, जाणे गोरस गोली मथी ॥ ४२ ॥ सवि व्यवहार सकल व्याकर्ष, स्वजन वर्ष सेवकनां जर्षः नारितणां जे वर्त्ते धर्म, ते ते जाणे सघला मर्म ॥ ४३ ॥ जेरव पंचम नाट वसंत, मेघराग श्रीराग हसंत; श्वकेकानी ढ ढ नार, ते ढत्रीसे जाख विचार ॥ ४४ ॥ त्रण माम रस सत्त सुरंग, लहे छोग-णीस मूर्वना चंगः तान मॉन र्रगणपंचास, श्रुति बावीस तणो अञ्यास ॥ ४५ ॥ जाणे ताल को फि ठपन्न, पंच वाद्य वसुहा व्युत्पन्न जिहां करे परिका जिम जिम कसी

(5?)

हुइ तिहां तिहां तिसि ॥ ४६ ॥ के बाला त्रिपुरा मुख वसी, मूरतिवंती सरसती इसी; जे वलतुं पुढे बालिका, न हुए उत्तर सहु दे तालिका ॥ ४९ ॥ करी निरीक्तण हरख्यां होये, कर सूखडी सबल करि दीये; अति मान्या सज्जनस्युं मढ़यां, लेइ लगन घर पाठा वढ्या ॥ ४७ ॥ आवी विरमतिने कह्युं, त्रिजुवन इत्प एकवुं थयुं; जे लक्तण सामुद्रिक तणां, (ते) ते दीसे अनोपम घणां ॥ ४७ ॥ अवगुण एक नही आसनो, महिमा वली घणो वासनो; रत्नयोति पाटणनुं नाम, विनय विवेक तणुं ज्यां ताम ॥ ५० ॥ जे जे अह्म साचवणी करी, ते जाएे परमेसर परी; फोफल फल पान पक-वान, वाल्या देह तणां छह्म वान ॥ ५१ ॥ करो सजाई वीवां तणी, गढूं पलाले सोहासणी; पापम वडी करियां पकवाने, साल दाल सवि सोध्यां धान ॥ ५१॥ घाढया मंडप वेगे विशाल, ञाएया घणा सोनाना थालः मेल्यां आसन ने

(52)

ष्ठाचणी, ज्ञानी मांडी मांडणी ॥ ५३ ॥ ठाम ठाम गइ कंकोतरो, आव्या सजान सबि नुंह-तरी; बेठो पांत खांत वेवडी, हाथ पाय धोया धुंसटी ॥ ५४ ॥ पहेला मेख्या मेत्रा बहु मुलि, खाजां लाफ़ पठे कूरलि; दाल सुंहाली पृतनी नाल, सोल सालणांनी वांधी पाल ॥ एँ ॥ ञ्राव्यां घोल जरियां माटलां, जरि जरिने मेख्यां वाटलां; ठार्या कूर करंबे करी, कर धोई जल जारी जरी ॥ ८६ ॥ पान फूल केवडोर्ज काथ, सज्जन कीजे टाढा हाथ, चंदन चुळा ने चांपेल, मंडप रंग वहावी रेल ॥ ८९ ॥ खुंप जयों ख़ंणालो खंत, ज़ुंगज़ जेरी ढोल ढमकंत; मुकुटी असावे मोतीसरी, जइ क्वंत्रर परणे सिसरी ॥ ५० ॥ मामा त्यां मामेकं करे, चाज न चुके वीवाह वरे; साथे रथ घोडाना थाट, मोटा गायण वायण जाट ॥ ५ए ॥ वोले मंगल जे जांडणी, चंडज मलि जेवी चांडणी; विमल कुंछर वर चंचल चने, उंचो अंब समाणो अबे

(53)

॥ ६० ॥ जोतां जेह तणुं मुख वडे, लाखीणा संग्रणमा घडे; नहाजनने मेलावे घणे, पहोता परिसर पाटण तेणे ॥ ६१ ॥ सामित्राना साचव्या विवेक, जतारा आप्या अनेक; घर चोरी बांधि चडवडी, सोना क्रपानी ते घमी॥ ॥ ६१ ॥ कुंट्यर छंग कर्युं मांजणु, सिणगारे सोटावे घणुं; पहेलां आंज्यां आठां नेत्र, पटोलुं पहेर्युं पानेत्र ॥ ६३ ॥ लंब वेणि लहके गोफणो, इडों रंग हे राखकि तणो; मनरंगे माता पूरियो, सिरे सिंचो सिंछरियो ॥ ६४ ॥ निलवट टीली व्युत-पत घणी, जाल जबुके सोना तणी: मांदली आं वलीऱ्यां वेढला, कंच कसण कस्या ते जला॥ ॥ ६५ ॥ कर चूडी कंकण खलकती, सिर बाव-नाचंदन बहकती: रमऊम पाय ऊमके जांजरां, जाणे मयणतणां पांजरां ॥ ६६ ॥ मुख जोइ **आरिसा मांह्य, विंजणडे विंफावे वाय; सहिश्वर** सहित्रार सुस्ति, मली, कोटे टोकर घाले वली N ६९ ॥ स्रीढी घुंघरी आसी घाट, वेगे

(68)

वरनी बाट, आवे वर जोये जन कोम, खुंप मांहिं नवि काढे खोम ॥ ६० ॥ सीकरि छत्र चामर बंबाल, तलीआ तोरण जाकजमाल; पूंचे चंचल जपर चमी, लूण उतारे वर बहिनडी ॥ ॥ ६ए ॥ धवल देइ जाएे घोलही, ते गाये अए माहिं कही: नाचे पात्र कथारस कहे, दान मनो-वंठित ते लहे ॥ ७० ॥ मह्ययुद्ध रमे तक्त्ञार, चाले सा बाला परिवार; नफेरो जेरी वाजते, गुण गाये छंबर गाजते ॥ ७१ ॥ पुहता तोरण जोवे लोक, सीख्या साला कहे सलोक: विमल वाणि श्रवणे सांजली, गया साला ते दहदिसि टली ॥ ७१ ॥ पुंखे सासु प्रेमे जरी, वर माहिरे गयो संचरी: जोसी जव वरतावे समे, विमले श्री कर **म्रेंडिर्ड तिमे ॥ ९३ ॥ कर से**इलावण धन श्रा-खीगां, मंगल चारे वरतावीयां: वर परणी उतारे रहि, प्रह जगमते गयो वर लहि ॥ 98 ॥ वसी वरोठी तणा विचार, की था विवाहना व्यवहार; मेहेल्यां मोदक जरीयां माट, आगल

(७५)

सोवन पाट ॥ ९५ ॥ पग पडणे जे धन परखीये. तेषे सासुनुं मन इरखीये; तूठो सासू दिये आसीस, जीवो अगणित कोकि वरीस ॥ ७६ ॥ शासन देवकि तणे पसाय, चडती कखा होज्यो जग मांद्यः कंत सरिसां करज्यो राज, माइ वद्ध जले जेट्यां आज ॥ 99 ॥ नर्णंद फइअर सासू वहू, इनुं सगुं मनाव्युं सहु; जिनवर गुरु गुरुणी प्रियतणों, जगति करें श्री संदर्शि घणी ॥ ९० ॥ पद्टण पीता तणुं अहिठाण, विवाहनुं मांम्युं मंडाण: पिता तणे नामे लागता, सज्जन कोकि मागता॥ ९९ ॥ बाप थकी जे पडतो मख्या पुत्र, ते किम राखे घरनुं सृत्र; महिव्यल न रहे तेहनी माम, बाप तणुं लोपाये नाम ॥ ०० ॥ बाप चको जे चडतो होय, कुंछर करमी कहीये सोय, जिम जिम मोटां करणी करे, तात नाम त्रिंजुवन विस्तरे ॥ **ए४ ॥ विमल मंत्रि**ंतव_ंकर वावरे, मागत जन मोकलावण करे; मन गमता तेजी तोखार. आपे कनक कोडि सिणगार॥

(05)

॥ ७१ ॥ छ दरसण पुरां पोषीये, स्वजन वर्ग सहु संतोषीये; टेवदूष्य दीजे दोकमा, चंगां चित करे चजपदां ॥ ७३ ॥ गडगजता दो जे गुडीआं, जारि जयरवनां जोडीआं; मेघामंबर ने सहवटां, कछ पीठ पड्ठाणी पटां ॥ 08 ॥ दिषरवास खेस खांडकी, गजवडि निर्मल गंगा-श्वकी; दिये जूना ने जरमर तली, नील नेत्र मेघवन्ना वली ॥ ७५ ॥ बासत्था सोहे सिर वाप, पंटकूल प्रतापीच्या प्रताप; पोता परदेसी साउला, मिशु मन वंत्रित यज जला॥ ०६ ॥ दिये घण वेलि कण जपटो, धुली धूमराइ ने घटी; चोखां चीर चंग चोरसा, लख्या इंस सूडा सारिसा ॥ ॥ 09 ॥ नर्म खर्म साजा सालुर, वस्यां वस्त्र वहाव्यां पूग; आठां ठाइल दिदामणी, संतोषे सवि सोहासणी ॥ ०० ॥ कनल वनां कमखा घटडी, के काली फाली फूटकी; नारंगो नवरंगी जात, ताजी तारा मंगन जात ॥ ॥ जए ॥ बहु सुलां मोटां मीएीआं, देतां पहेलां

(69)

मन प्रीणीयां; धज सनाथ जिनमंदिर बहु, संतोष्यां गुरु गुरुषी सदु ॥ ए० ॥ लेई जान वलीव्या घर जणी, ससरे कोधी पहेरा-मणी; आव्यो विमल के जग्यो सूर, जई जोह की वजाव्यां तूर ॥ ए१ ॥ साहमो आव्यो नगर नरेस, वरे वडे वर कीयो प्रवेस; प्रीयसुं प्रेम पूर मांमती, इक आठण पाणी ढंमावती ॥ एश। देवालये पुहतां वर वहु, रामत रमतां जोए सहु; गुरु गोत्रजने करे प्रणाम, पुहचे वास तणुं जिहां ठाम ॥ ७३ ॥ परएयो वर पेसारो हुर्ज, मागत जन ते मागे दूर्य: दान माने रली. आयत थयो, संतोष्यो सहु थानक गयो ॥ ७४ ॥ नव योवन बे नवला वेस, बिहुने माने नगर नरेसः बिहु सिर अगर बहेके वास वेल हुआं बे लील विलास ॥ ए५ ॥ वेहुं विचक्तण बे गुणवंत, बिदुने पोते पुण्य अनंत, हसतां हरवे पांडे होड, बे सुरंगी सरिखी जोड ॥ ए६ ॥ वानी वन हे रलीआमणां, दहेके फूल अनो-

(66)

पम घणां; चंपक कुसुम मुकुट सिर जरे, खंडो-खली जल कीमा करे ॥ ७७ ॥ विमल श्री बिहु नवला नेह, बे सिणगास्त्रां दीपे देह; बिहु मन वसी जिनवर धर्म, जदयवंत ठे चिहुनां कर्म ॥ ए० ॥ बे यौवन इर्फ जोगवे, बे मनवं-ठित सुख जोगवे; घणा दिवस इम वोख्या जिसे, सुकुटुंबा पटण गया तिसे ॥ एए ॥ खंम खंड मति ठे निर्मली, श्रोता सांजलज्यो ए जली; विमल मंत्रिने रासे जाण, एटले पंचम खंम वखाण ॥ १०० ॥ सर्व गाया ॥ १३९ ॥

इति श्री पंकित लावएय समय गणि कृते, श्री विमल मंत्रि प्रबंधे नव खंके, सामुझ्कि कथित श्री लक्षण, ६४ कला विवरण, १० लिपि नाम कथन, ६ राग ताल संख्या, श्री वर्णन, कन्या निरिक्षण, पाणीग्रहणमहोष्ठव, वस्त्राद्य-जिधान, पद्टणवासाधिकारे, पंचम खंक संपूर्णी

(52)

॥ खंम बहो ॥

॥ दूहा ॥

पुहता पटण पुन्य वस, प्रेमे पूचो वास; रहेता मंदिर रंग जर, ठाना हुआ ठ मास॥ १॥

॥ ढाल ॥

एणे अवसर सहगुरु वडा, श्रीधर्मघोष सूरिंद रे; आव्या अर्बुद तलहटी, उपन्यो छति आणंद रे ॥ १ ॥ जुन जुन अर्बुद अनि-नवो, (ए आंकणी) नहीं नहीं जिन प्रासाद रे; देखी सुंगर दोपतो, उपन्यों मन विखवाद रे ॥ जुर्ड० ॥ १ ॥ गुरु गछपति ध्याने रह्या, समरी देवी छांबाविर; अर्बुद तीरथ जिस हुए, बोंसो सरसा सुजावि रे॥ जुन०॥ ३॥ वीर सुत पर पाटणे, वासि विमल प्रधान रे; पुढ्वो प्रजु वद्वाववा, जो तुह्य तीरथ ध्यान रे॥ जुउँ०॥ ४॥ वचन कही देव ते वली, गणधर पाटण मांहा रे.

(20.)

संघ सह र्रंग्व करे, विमल वंदावण जाय रे ॥ जुर्ड० ॥ ५ ॥ गुरु उपदेश दीये घणा, सांजल विमल प्रधान रें; अर्बुद तीरथनी थापना, तुह्य जस मेरु समान रे ॥ जुर्ज० ॥ ६ ॥ विमल जणे सहगुरू सुणो, नही धन एटखुं आज रे; कहो जिन मंदिर किम करुं, मोटां ठे तीरथ काज रे ॥ जुर्जना ७ ॥ आराधन अंबाविनुं, आपे सह· गुरु राय रे, चकेसरी पदमावती, त्रीजी देवी छुंबाय रे ॥ जुउं० ॥ ७ ॥ त्रिहुं उपवासे देवता, श्राव्या जाक जमाल रे; मागो वर मंत्रीसरु, तू**वि** त्रण ततकाल रे ॥ जुर्छ० ॥ ए ॥ ॥ चोपाई ॥

सिंह नाद छंवाई दिध, छति छजय पुमा-वई किंध; चकेसरि दिये लखमी घणी, वर पाम्या गयो पाटण जणी ॥ १ ॥ पुहतो मंदिर चिते धीर, बहिर पुरुष परसिधो वीर; ते छागे दंड-नायक दूर्ज, हुं तो ते कुलयी नही जुर्ज ॥ १ ॥ प्रह जग्यो सिरि जयम थयो, प्रगट पाटण

(ए१)

बाहिर गयो: जोइ थानक मांकि साथरी, बेठो मणि माणिक पाथरी ॥ ३ ॥ राजतणा राजत जुजार, आवी अम करे इथीआर; मांमे वेजां मेहेले बाण, बार एकेकी चूके जाण ॥ ४ विमेल षंकि वोले पडवको, में प्रीठयो राजतनो धको; जीम कटकनुं जलुं पराण, जिहां छावा राउत वे जाए ॥ ५ ॥ उपायो अति घणो **अमर्ष, जोम जुपतिने करसि हर्ष, परदल आग**ल रहसि राज, जीम जुपतीनां सरसे काज ॥ ६ ॥ तव राजा आव्यो संचरी, सपरिवार रह्यो परवरी: जीम बाण मेले उद्धसी, चूके विमल मंत्रि रही हसी ॥ 9 ॥ इतो जरोसो जाग्यो आज, मुरख हाथ चम्युं वे राज, मुह मचकोमे मरडे मुंब, त्रीम सहित वे संघला तुंग ॥ रह्यो हाट हतो जाणीयो, जीमें तव परख्यो वाणीयो: बाण तणी कांई जाणो कला, उठो वलिग छावो छां यका ॥ ए ॥ बोले विमल छह्ने वाणीचा, थइसि घासे बांध्या प्राणीचा;

(एर्)

तेख टींप तीख वेचा हींग, बाए हुई तमासित धिग ॥ १० ॥ जाणुं मीठु पाइली जरी, राजा जमखा जइये डरीं, तोंखा धरतां धूजे हाथ, बाण हुए तुह्यारे साथ ॥ ११ ॥ इम करतां जो तुह्यने कोम, बाण तणा देखारुं मोम; बाल सुआरो करी साथरो, पटइ पान अठोत्तर धरो॥ ॥ ११ ॥ कहो तेतां वींधुं मन रंग, बाण न लागे बालक अंग; जो अधिकुं ओढुं विंधाय, तो सिर सहि खह्मारुं जाय ॥ १३ ॥ कँला देखारुं खवर प्रकार, वलोणुं वलोये नार; ऊबके विंधि जाये फाल, खंपण खसर न लागे गाल 11 88 11 त्रीजी कला कहुं तुह्य जाए, जो किजे पहों-चतुं पराण; जोउने जइ आवे बाण, पहोंचे गाउ पंच प्रमाण ॥ १५ ॥ वाणि विमल इसी जचरे, जीम तणो सिंगिणि करि करे: बाण कला देखाने इसि, जोम तणे मन जारि वसी में रे६ ॥ तुठा तुरी पंचसें किंध, दंडनायकनी

(ए३)

पदवी लीध; रंगे राणी मलधी घणी, गाजंतो आव्यो घर जणी॥ १९॥

॥ छहा ॥

एक राज नरयणां तुरी, सही सेलकी समुद्द; कहे कविजन जिहिं पऊरा, तेह घर दृर दरीद्द ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

पहेलो जिनवर करी प्रणाम, पुहचे जिहां राजमंदिर ठाम; दिन इन घणा वाधे व्यापार, मंड्या सकल देश व्यवहार ॥ १ ॥ करे पुन्यने कर वावरे, सहगुक्त वचन सदा मन धरे; जिम धण वाधे घर छापणे, विमल न कहिने माने गणे ॥ १ ॥ गज घोडा देशालर तणां, गरवे विमल छणावे घणां; जिम जिम थाये विमलनो चाल, वयरीने सिर वाधे साल ॥ ३ ॥ घर मोटां जूपतिना पांहिं, वालि गज घोडा बंधाय; कर मुंड्रमी क्रप जिन तणुं, छवर न सिर नामे

(एष)

आपणुं ॥ ४ ॥ दहेरासर घर कखुं पवित्र, स्रीरोदक धोतीआं विचित्र; चामर वत्र अनो पम करी, सोय वात बाहिर विस्तरी ॥ ५ ॥ वयरी मली वधारे वात, जूपति छागल बोले घात; चाप्यो स्वामी विमल प्रधान, पण तुम-थी तिहिं अधिकुं मान ॥ ६ ॥ रहे रान मुगलां तुण चरे, माठा नीर विणासण करे: सज्जन सुखे रहे जग मांहा, त्रिहुं निःकारण वयरी थाय ॥ ९ ॥ जिनवर टलत न नामे कोट, **उद्धत श्र**जिमानी आरोट; कर जिन मूरति मुझा धरे, तुह्य प्रणाम ते आगल करे ॥ ए ॥ घर बंध्या गज मोटी छास, वालि वली तुरंगम जास; चामर ठत्र सजाइ घणी, लेरो जीम राज अवगुणी ॥ ए ॥ राज चित्त लागी चट-पटी. यह वरसास फीटी घडी; खत्री खेद धरे मन मांह्य, जोइ वाट विमलनी राय ॥ १० ॥ सद् बेठुं ठे यइ इक मती, आव्यो विमल मखज मती: करे प्रणास आगलः कर करो

(एए)

बेठो राजसजा माहिं धरी ॥ ११ ॥ त्यां ममक् ने त्यां डाकलां, त्यां जुंगल कंसालां जलां; त्यां लगे ताल चमका पूर, ज्यां नवि वक्तो सबलां सूर ॥ ॥ ११ ॥ सोहे सजा मध्ये सिर धणी, विषहर विकट शेष जिम फणी: तरुछर कढप वृद्ध जिम सीम, मणी मांहिं चिंतामणी जिम ॥ ॥ १३ ॥ जूपति मांहिं रह्यो जिम राम, रुपवंत सिर सोहे काम: दातारिं अवतरीर्ड कर्ण, उपे सकल सजा आजर्ष ॥ १४ ॥ साइस सूरो विक्रम वीर, मेरु सरिखो महियल धीर, न खमे तेज जीम जय जयो, मुफ माथा जपहिरो थयो ॥ १५ ॥ सन्ता सरोवर सोहे कमख, नीम हसी बोलावे विमल; सुण महेता छहा हरष अपार, तुह्म घर नवि दीतुं एक वार ॥ १६ ॥ विमल मंत्रि मन कूरु नहि किशो, जाणतो राजन रंगे इस्यो; स्वामी घर तुह्यारां अने, पहोंचो जोजन करशुं पढे ॥ १९ ॥ साथे तेड्यो सवि परिवार, के पाखा घोडा असवार: जव

(ए६)

दीवुं मंदिर मंनाणः राजा हियडे थयो हराण ॥ १० ॥ प्रथम पोले पहेलो प्राकार, जाएयुं ए घरनुं वे बार; अनुकमे पेसे साते पोल, राय रखे पडीये दंदोल ॥ १ए ॥ जव दीतुं घरनुं बारणुं, स्वर्ग विमान कखुं पारणुं, मांडी श्वारिसानी जेल, तली आं तोरण पेख़ुं पोल ॥ ॥ १० ॥ दोरे संचारी पूतली, दे आजोषण नीची लली; के लीलां करी नंखे वाय, नारि निरती न जाणे राय ॥ ११ ॥ काच तणा ढाढ्या जे थोल, पेखे पाणी तणा कह्वोल: जे मुरख नवि जाणे जेठ, करे वस्त्र उंचां पण तेठ ॥ ॥ २१ ॥ चित्रशाला वे चंगु ठाम, जपर चंडूआ चित्राम_ः राजकुली बत्रीसे लखी, रा मंदिर जोइ चिहुं पत्नी ॥ १३ ॥ दीठा मयगल जे माचता, दौठा तूरी ततखिण नाचता; 'ठाम ठाम बेठा हे थोक, घडे घाट व्यवसाया लोक ॥ १४ ॥ गुगज घोडानी पाखर खरी, खांकां खेकां **ढापर हुरी; र्छगांटो परंग उर्खीक्ल, ते देखीने**

(@9)

जमक्यो ज़ुप ॥ १५ ॥ दीठां मेघाडंबर ठत्र, दीठा चामर पुहुँवि पवित्र; जोजन जली सजाइ जालि, जमवा बेठा सोवन थालि ॥ १६ ॥ मोटा मोदक जव महमद्या, प्रीस्यां शाक सवि विष सम थयां; साव दूध ऋषघोढ्यां घोल, लीधां चलु दीधां तंबोल ॥ १९ ॥ सपरिवार पहिराव्यो जीम, करी जेट जग जाएे जिम; राज जमी जव पाठो वले, जुल्यो जुवन मांहिं आफले ॥ ॥ १० ॥ आव्यों मंत्रि बादु तवं धरि, राज बोलव्यो निज मंदरि; रा जाणे आह्यारुं राज, विमल आगे ते हे व्याज ॥ १ए ॥ विमल मंत्रि वोलावी वल्यो, राज प्रधान छनेरो मल्यो; राज कहे तुद्दो जे कह्युं बहु, ते में दृष्टे दीतुं सहु ॥३०॥ मनस्युं छह्वे विमास्युं छाज, ए जीवे तों जाये राज; कीजे कांइ तिशो जवाय, वयरि वणिग विलय जिम जाय ॥ ३१ ॥ गुण नवि जाणे जे जेइना, आदर न करे ते तेहना; देखी काग कविजनु इम जुणे, मेहेली झाख लींबोली

(एए)

चणे ॥३१॥ डाखसरिसो विमल प्रधान, छुर्जन जन ते लिंब समान; काग सरीखो राजा थयो' दोष विहुणो दोषी कद्यो ॥ ३३ ॥

॥ दुहा ॥

मंत्रि जुषे जुपति सुणो, जव प्रह विमल प्रधान; आवे तव जोजन जणी: देज्यो बहु बहुमान ॥ १ ॥ वाघ मेलावे मोकलो, त्रास होसि ततकाल; विमल हकारे वीर सत, सजा मध्य जूपाल ॥ १॥ विमल विकायों नहि खमे, तेज तेषो ते पूर; सिंगि सांकल उतरे, छुःख टले जिम दूर ॥ ३ ॥ गोले मरे जे मानवी, ते विष दीजे कीम; काज सरे कलकल टले, सांजल राजा जीम ॥ ४ ॥ राय राणा मंमलीक नर, सत्रा जमि सुविशाल; श्राव्यो विमल विकट कटक, मान दीये जुपाल ॥ ५ ॥ बेठो चाउर चंप कर, जूठो जमनुं रूप; सखइ न सके कोइ नर, मन आकंप्यो जूप ॥ ६ ॥ वाघ

(୧୯୯)

वढ़ूटो जय जयो, राज करे केइ वार; विमस विठेदे जठिये, तिखमायो तिणवार ॥ ९ ॥ ॥ ढाख ॥ लोकीक पवामा रासनो ॥ ए राह ॥

विमल राजल जव आवीयो, ठोडावियोरे तव वाघ विकराल तो, काल जिशा नख पय वशा, ए मुंढे विलगा विसहर जिस्या वाल तो॥ ॥ १ ॥ वेढ वेढालो वाणीर्ड, जाणी राउले रोस-नो रेम तो; केडे विलायो वाघनी, एतो माघ-डाकी नर थाय निमेड तो ॥ वेढ० ॥ २ (इपद) घोघर सादे घरघरे, अरे घरघर जमित्रा कंप अपार तो; खड खम खांमा खम. खरे, छरे लडथरे लाख गमे छसवार तो ॥ ॥ बेढ० ॥ ३ ॥ जड जडवाय इता घणा, ते तो आपणा अलगा लेइ गया जिव तो; माल तणे माथे चड्या, एतो के पड्या राजत कर-तला रीव तो ॥ वेढ० ॥ ४ ॥ पुंत वाली पूंचे वर्वे; अरे नव नव रेंगे तें वांघलो वीर तो; एती

(200)

पाटण परगट ममडमे, एतो को किमे तेहने ताके तीर तो ॥ वेढ० ॥ ५ ॥ हीर हिरागल हाटडां, एतो पाडियां फूडां चिहुं पखि चीर तो; धीर धामी गया धूंसटी, एतो थीहटीरे वहे घृत घण नीर तो ॥ वेढ० ॥ ६ ॥ दोसी देइ गया हाटमां, एतो माटडां फूटमां वहे रंग रेल तो; फमिआ ते वामि फाडि गया, छरे फूलनां डाल माली गयो मेलि तो॥ वेढ० ॥ ॥ ९ ॥ पान ते पान कुडेरख्यां, ऋरे घांचीने घरे ढट्या तेलना कूड तो; हुड हुआ ते हाथिआ, एतो साथिछा सवि बलवत हुए ठूड तो ॥ वेढ० ॥ ॥ पारिख पग पिंकि चर्मे, एतो घाट घना सोनार दिये पुंठ तो; मुठीचा मणी-ञारमा, ऋरे जारडा मेहेली गया नर उठ तो ॥ ॥ ए॥ एतो लोट करे गढ कोटकी, ॥ वेढ० त्ररे फोटडी जबके मोटमी खाइ तो; वाज गीटावो वाघलो, एतो आघलो कोई न घाज तो ॥ वेढ० ॥१०॥ डाढ ते गढ कुहामए, अरे

(१०१)

पाडए मंदिर घाटने हाट तो; वाटे न को सलकी सके, अरे जणतला जाट नासी गया नाट तो ॥ ॥ वेढ० ॥ ११ ॥ बाला ने बालक टलवले. ऋरे खखजले नगरी नही कोइ रखवाल तो: सार संजाल न को करे.न को धरे वाघलो देव दयाल तो ॥ वेढ० ॥११॥ वीर जण्णी को जाईन, एतो आईड एटले तिमल प्रधान तो; जानु परे जन दीपतो, अरे जीपतो ए घटे वाघनो वान तो ॥ ॥ वेढ० ॥ १३ ॥ छरे गोल गरवे किशुं गडगके, एतो तडफडे तुं किशुं पाटण पोल तो; खुली खंधावलि आवीयो, एतो विमले बोलावीयो बांगडे बोख तो ॥ वेढ० ॥ १४ ॥ तडतम लोचन तरडीआं, एते। कमकम करडीआं कुंठने जिशुं ज़ुंखर जयो, घणुं गहगहा रे तो; जुंब ज़ुई आहणी पुंछ तो ॥ वेढ० ॥ १५ ॥ दंत तरडी देखाडतो, एतो नाखतो रे धरा फुंकतो फाल तो; काल जिशो कालूतरो, छति छाकरो रे करे विखगवा ताल तो ॥ वेढ० ॥ १६ ॥ थाप

(202)

धरी जव धाईयो, तव साहीयो रे ईशो काबरो कान तो; विमले कयों करि मांकडो, लीयो सां-कडो रे देवी छंबिका ध्यान तो ॥ वेढ० ॥ १९ ॥ जय जयकार शबद हुआ, वली घर घर रे हुआं मंगल चार तो; वाघलो राय आगल धस्त्रो, अरे विमले करियो जुर्ड पर उपगार तो॥ वेढ० ॥१०॥ विमल गयो घर आपणे, अरे राज जणे मंत्रि न सीध्युं काज तो; राज रखे लिये वाणी छ, एतो प्राणीं दृष्ट में जाणीयों आज तो ॥ वेढ० ॥१ए मंत्रि जर्णे ज्यां हुं छह्ने, तुम्हे चित जचाट म आणसो आज तों; माल करो बल पारखुं, एनो सारखे सारिख़ं टालसे साल तो ॥ वेढ० ॥ २० ॥ माल स्यो मंत्री विचारीयो, जलो जारीयो जांगडा घाए जीम तो; विमल इणे करि ताहरे, एतो माहरे मागजे सवल हुई सीम तो ॥ वेढ० ॥११ ॥ दुहा ॥

प्रद्द उगम वसी प्रगटियो, वहेसो, विमल प्रधान; राजस राज सत्ता खद्दे, वसी विशेषे मान

(१०३)

॥ १ ॥ माल अठे घर आपणे, आण गर्व अपार; महेता ते बल पारखु, करू न केती वार ॥ १ ॥ वाघ तुम्हे वस आणीर्ठ, जे आति विसमो वंक; मान करे ठे मालडा, ते तुम्ह आगल रंक ॥ ३ ॥ इण अवसर ते आविया, माले मांफि ताल; सुत्रट सिरोमणि जे हुए, ते मोकलो जुपाल ॥ ॥ माले वाई बक्करी, वरवी बोले वाण; आवो अलजे आपणे, जे पुहचे जुज प्राण ॥ ८ ॥ वीर जणणी वीरा सुतन, जे हुए बहु बलवंत; उठ वणी उठी करो, जे वीर कहावे कंत ॥ ६ ॥

॥ अघठंद जाषा ॥ तेषे वचने रोसे चड्यो, जड उठ्यो जमवाय; घायति पहिलो जालवी, पठे परठियो पाय ॥ १ तरिं परठिष्ठपाय रह्यो रढ मंडी, जीम जडाजड माल जर्म; घण घाय घडकी अ, सूर धमकी अ शेष जडकी अजारवडं; चल चंद चमकी अ, मेरू फर-की अधीर धरा; जय विमल जमलि महि माल

जमंते, पेखे सुरवर कोकि नरा॥१॥ घण मेहेखे मुघि

(gog)

के नंजे पुंठि के, उठ विउठि कें चंम पडे; घष इयो हये, वन्ने वन्ने सन्नो सन्ने सीस जिडे; करि करे कडकती, जजो हम्मकि, धुजे रूडुकी, जारू जरा॥ जय विमल०॥ ३॥ करस्युं कर मोक के, कंद विग्रेम के; कोई न होम के, हारि कहे जप्पाफि श्रनस्कई, दोण जस्कई; ञार्व) सरकई, वेगि रहि; धरु धंबड धुईकि, मांहो मांहिं के; लध्धई वाह के, थाय करा ॥ जय विमल० ॥ ४४ । घण पुरीख माण के, जाये **ग**ण के, सवि संधाण के, दूर करे; ज़म जोडकि जजो, हकति वजो; अंबर गजो, ईंद घरा; विमले बस उर के, किय चकचूर के; मह्नइ पूर के, श्चास परा ॥ जय विमल० ॥ ५ ॥ विमल जमलि जव आणी मुद्र रस्किनं; महि मंग्रुल, रायंगण जुर्फत, नाम अस्तिन आखंमलि; जमपम करि खिए एक, ढेक जित्तो, जग जाणो जे एणे, वग्घ वसि कस्वो, तांइ कुण मह्य समाणो; लावएय समय कहे विमले, तेह दहदिसि नंखिन फेरवी;

(रुष्य)

आवी विमल पाये परे, जोजे जन दिधो हेरवी ॥ जय विमल० ॥ ६ ॥ ॥ चोपाइ ॥

खंड खंम मति ठे निर्मली, श्रोता सांजलज्यो ए जली; त्रिमल मंत्रिने रासे जाए, एटले ठठो खंम वखाए ॥ १ ॥ सर्व गाथा १०१ ॥ ॥ ईति श्री पंडित लावएयसमय गएि कृते, श्री विमलमंत्रि प्रबंधे, चक्रेश्वरी छंबीका छाराधन, श्री छर्बुदाचल प्रासाद प्रतिबोधन, वाए त्रितय कला पक-टीकरए, व्याघ्र मह्य युद्ध जया-धिकारे, षष्ट खंम संपूर्णम् ॥

। चोपाई॥ मंत्री राज विमासण करे, देव शक्ति ए केले चवि मरे; आपण जे जे कस्त्या जपाय, ते विसराक्ष थया

॥ खंड सातमो ॥

(१०६)

कहे राय ॥ १ ॥ जुणे मंत्रि राजन सुण वात, छागे विमल पितानो तात; लहिरि छादे लेखे लागीये, उप्पन कोटि टंका मागीये ॥ १ ॥ ईणे मर्मे धन लीजे कसी, धनहीणो शुं करशे वसी; धन विष माणसने मद टले, धन विण नर मोटा खलजले ॥ ३ ॥ धन विए कोई न माने बोल, धन विए थाशेरंक निटोस, धन लीधुं तो लीधा प्राण, नीर विद्रुणुं जिशुं निवाण ॥ ४ ॥ मंत्रि सत्ता प्रहुजगम गयो, राय कठो जपराठो थयो; नर समुद्र पाटणनो धणी, राज रिसाव्यो कहो शा जर्णो ॥ ५ ॥ जर्णे मंत्रि सुण विमल मंत्रिस, राजने हे लेखानी रीस; हप्पन कोटि टंका घर जरो, के आवीने लेखुं करो ॥ ६ ॥ जो तुम्हे रानी वंठो मया, करो बोल जे तुम्हने कह्या; वल्यो मंत्रि जव मंदिर जाय, आपे लेख कोई कर मांह्य ॥९॥ वांच्यो लेख विन्नेदि करी, वाणोत्रे वोहस्वा ठे तुरी; दीधुं दाणचेरीनुं आल, राय डिये लिखा समकाल 100 ॥ जुथाई तो जपर

(205)

करो, नही तो खेख खखी द्यो खरो; राय सरीसो नही संतौष, वली उपायो श्रधिको रोष ॥ ए ॥ वलता लेख लख्या पमवडा, ठडे पीश्राणे झाव्या **उ**डा; धृष्टि लेख चिंता परहरी, वात तुरीनी बे पाधरी ॥ १० ॥ लेखा मस फांदे पाकज्ञे. लेज्ञे धन वयरी ताकरो; किरां करे जो छति छाकलो, गाढो सबल सिंह सांकख्यो ॥ ११ ॥ कूम रचाव्यां आगे ढेढ, वाघ माल मंडावी वेढ; पहिलुं धूरि जो खाये खता, पढे जे कीजे उरता ॥ रेश्र । दूर्जन हांसा करशे घणा, जाशे मोहत पितामह तणा; डुब्बल कन्नो राजा जीम, विणवे राज्य न रहीये नीम ॥ १३ ॥ जई मंदिर सामहणी करी, सांढ सोखसें सोवन जरी; पाखरि पंच सेयां असवार, बीजा पंच सहस तोखार ॥ १४ ॥ पायक सहस मह्या दस बार, खवर खनेरा वर्ण श्चढार; पोताना गज साथे लीध, बीजा <u>त</u>री **श्चकाणा कीध॥ १५ ॥ रथ वाहण उंटे नीसाण,** रखत जयां साजेसा बाण; अंतेजर देहर

(१०७)

साथ, घर टलती लिधी सघली आथ ॥ १६ ॥ मेली कटक थयो असवार, जीम जेट कीधी तिए वार; राजा पुंठ देई जव रह्यो, वलतो विमल बोल इम कह्यो ॥ १९ ॥

॥ दूहा ॥

मुऊ दोधी तिम वेरिद्यां, वली म देजो जीम; एम कही पाटण तणी, विमले वोली सीम ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

चाढ्यो मंत्रि माला वन रह्यो, (त्यां) घोट बक नीसाणे जयो; एणे अवसर चंडावई धणी, आव्यो खेत्र खमाला जरी ॥ १ ॥ सुएया विमल नीसाणे घाउ, धरणी ढले चंडावई राउ; सीमामा जे सवि सामटा, आवि मल्या विमल एकँठा ॥ १ ॥ जेहने कहिनां न नमियां नील, उलग करे जला ते जीम; गाम ठाम लीधा परदेश, सेव मनाव्या नगर नरेश ॥ ३ ॥ बेठो विमस

(20尺)

सजा सम धरी, आव्यो नर को देशाजरी;सांजल स्वामी देश बंगाल, रोम नगर ठे छति सुवि-शाल ॥ ४ ॥ एके नगरे बार सुलतान, बार बार जोयण मंमाण; वाव सरोवर वामी कुछा, देश छढे सवि कइहि ज्जूछा ॥ ५ ॥ ज्यां ज्यां जाणे हिंछ नाम, त्यां त्यां देश जजाडे गाम; हिंछनो अवतरी ज काल, जो चाले तो कर संजाल ॥६॥ ते बारे रवि परें दीपता, दोहिला देव अछे जीपता; सांजल हो चंडावइ धणी, रोम नगर ते पूरव जणी ॥ 9 ॥ जणे मंत्रि शी मंडी जात्र, ते सुलतान कह्या कुए मात्र; एक एकनी ठाया रहे, ते सुलतान नाम किम लहे ॥ ७ ॥ मालव मगध देश नमीआफ, जीत्या कछ मछ मेवाफ; कलि कर्णाट लाट ने जोट, जीत्या मारूआडि नव कोट ॥ ए ॥ दहदिसि वरते आण अखंड, मेलीड गूजरातिने। दंफ; जीम न जांजुं ठाकुर त्रणी, किम लोपुं कुलवट आपणी ॥ १० ॥ गोक देवानो रा गांजीच, जोट तणो जट ते

(११०)

जांजिन; पंचालो ते पालो पले, कान्हडीन कोठारे रखे ॥ ११ ॥ काशमीर कंप्यो जडवाय, चौड देशने। चांप्यो राय; बाबरी डे बेठो बारणे; कन्नुजो ते कीरति करे ॥ ११ ॥ छंग देशनी den करो, जीवी मागे जातंधरो; वागडीd ते नंखे वाय, सोरठी हे ते सेवे पाय ॥ १३ ॥ व्यव-तरिंज रिपु केरो काल, प्रगटिज पुएयवंत प्रति-पाल; मथुरां तणो माल पाठवे, अरथ छजो-ध्यानो आठवे ॥ १४ ॥ ढीली (दिल्ली) नो ते माने हाक, रोम नगरनी थइ तकताक; मुज श्रागल ए बल इयां कह्यां, कण उखण तांबूरां रह्यां ॥ १५ ॥ जिमणवारे नवि जमिश्रा वडुं, करतां पाक रह्या कोरडुं; घर करतां ते घर विसर्यां, ते दोसे अलगा निसर्या ॥ १६ ॥ ते सुलतान तणुं शुं गजुं, जो जाएया तो किम ऊनजुं; करो सजाई महेता जाए, जइ जीपुं बारे सुलतान ॥ १५ ॥ सूरो सुरातन धडइड्यो, हय गय रह पखरियां बड्यो; चंडावड बाहिर मेहलाण, कीधुं

(१११)

ताम हुउं जग जाए ॥ १० ॥ हख हख कटक सजाई करे, जड जाथा जाखोडे जरे; सगुएी मींगणि पाली पटा, कटारि कातरणि करि कटा ॥ १९ ॥ गदा गुरज गोला गोफणी, जल फलके जालानां छाणी; हल मुशल मोगर वर चक, गेडी गडाखी लिये वक्र॥ १०॥ शंख शक्ति तोमर तरुआर, नमीचा नाराच विचार; खांडां खेडां घण घुग्घरा, वली वंश ने ढापर दुरा ॥ ११ ॥ सरसी फरसी ने हरूबरो, छाणीआली वाली वांकरी; तीखां तेज तपत त्रिज्ञूल, वयरीने सिर मत्था ज्रूल ॥१्॥ जरद जोम जमती जीणसाल, लोहवमी मगली टोनाल; इस्ताजर्ष अंगूठी खरी, दोरी जरद कवच कर्करी ॥ १३ ॥ पहेस्वा छंगा चंगा टोप, रंगे रंगालिना आटोप; पहेरे जीव रखी सन्नाह, वयरिने सिर देवा दाह ॥ १४ ॥ मोटा मयगल पर्वत प्राय, बलवंता केकाला पाय; पख्खर पफ घुग्घर घमघमे, रण रलीआइत रोसे रमे ॥ १५ ॥ रंतूसल पम दाढा जिसि, सरलि सुंढे धाये धसी;

(१११)

रीसे चीस ठके सारसी, परि परि सवि प्रीडे पारसी ॥ १६ ॥ पग पोढा करि शंज्या शंज, सींदूरे सोढाढ्या कुंज; सवा जारनी सांकल खरी, रएके चरएे जिसि नेजरी ॥ १९ ॥ श्रंबामी पुंठे श्राठवी, ते उपर धज ऊलके नवी; वेठा नवि माठा कुंतार, रण कठा जुठा जूंजार ॥ १० छंगे रंगे इन्हां चित्राम, के मैयगल जयमंगल नाम; फूंक फोमके संकल त्रोम, के विष ठोम महा मद मोरु ॥ १९॥ पर्वत ढोल धरणि धंधोल, पर दल बोल केवि रणरोल; एक ताल के वयरी काल, के विष जाल चमर बंबाल ॥ ३० ॥ गढ गंजण जंजण बल ठाम, सिंघलीयानां साचां नाम; चाले मयगत मद कह्वोत, चिहुं पासे चाले चककोल ॥ ३१ ॥ तेजी ते पाला तरवस्त्रा, रणसूरा ने रोसे जर्या; हाजर मती ने खरी खमा, जारिज जल हामा नीलमा ॥ ३१ ॥ होला हारु मारू पमा, सरला सेरामा सूनमा; के हामा कलथा कालूआ, जलवहा गंगाजल जूआ ॥ ३३॥सलेर

({ ? ? ₹)

सजोका जमर जोरिंग, सारिंगा नव हत्थ नारिंग; जुंगी जंबाणा उंदिरा, वाहणीया ख़रसाणि ख़रा ॥ ३४॥ कोहाणा मोटा महत्रजन, महलावीुआ मुगल मांकना; जघसीआ नीघसीआ घोर, जोट-कीऱ्या जोंटकीऱ्या मोर ॥ ३५ ॥ पाणीपंथा पंच-कख्याण, पवनवेग पोढा केकाण; पारकरा बढे जेश्व, जाति झुद्ध नवि थाके तेत्र्य ॥ ३६ ॥ कपिल किसोरा घोडाजात, अठे अनेक जलेरी जात; ते संघला सोडे श्राणीश्चा. जग जोडे जडता जाणीश्चा ॥ ३९ ॥ हंस धवल छने हांसला, नाचे माचे महिञ्चल जला; पुद्दे पंथे सविद्धं पहिलीआ, वेग वडा वारो वहिलीव्या ॥ ३० ॥ पुंठे पुहला पग नीसला, वंक मुहाने खंधा गला; एक वर्ण ने टुंका कर्ण, जपर आरोप्यां आनर्ण ॥ ३७ ॥ पडीआ पालर ने पहलाण, चडीओं रण सांगर ज़धाण; जर बंध गादी पटाट, बांधी जेर बंध नीसाट 1 ४० ॥ मुडी चंग चमर चोकडां, मखीं आरडा छने मुहरडां; रुप खाप सरिखां ऊलकतां, बिंहुं

(338)

पखे पांगड ढलकतां ॥ ४१ ॥ पाहिमि पटकुल बांधीयां, वाग दोर वाक सांधीयां; गली गली जव वादल जर्या, खलके तोबर बाणे जर्या ॥४१ व्यतपती आला लीआ वींजणा, तेजी ताजे-वा ताजणा; कसी कलण बांधी वासणी, धुरीचा-री दीधी वासणी ॥ ४३ ॥ केमठ फडणा गिरी **उठणा, माता मयगल मद मोडणा: खाड नाड** खने नय पूर, रण ऊड फटके फमपये सूर ॥४४॥ इरण महा हीसे हणहणे, तेजी ते नवि जीत्या कणे; वड वेगि नवि लाइ वार, चंचलीए चमीआ झसवार ॥ ४५ ॥ धडक्या रथ घरणो धडहडो, रण वाजित्र रह्यां गमगमी; चले विमल चंडावई भणी, कटके रोम नगर दिसि जणी ॥ ४६ ॥ चार सहस सिरिसी किरि धरी, सांढ सोखसें कुलिरि जरी: साथे चाले पाणी पाट, छुद्दाडे चोखासे वाट ॥ ४९ ॥ उंट सबल साबाणे जर्या, षासे काठ तणा गढ कर्या; मारग मंमाये बाजार, वर्ष झढार करे व्यापार ॥ ४० ॥ साथे सांढ

(११५)

पसाणी तेइ, घडीद्या जोश्रण जाये जेइ; गाजे गज हणइणे तोखार, पासा लाख कोडि नवि पार ॥ ४७ ॥ सुखासण आसण पासखी, के बेठा सेजवाले सुखी, श्री गरणा वय गरणा कद्या, श्राप आपणे यानक रद्या ॥ ८० ॥ सेनानी ते चिंता करे, जंडारि ते मेली उवरे; राते चोकी पोहरा पके, सात सहस दीवटीआ कके ॥५१॥ विमल अंग वाध्युं बल जर, चाले विकट कट-कनुं पूर; दल खेहे ठायो शसि सूर, रोम नगर जइ दे रणतूर ॥ ५१ ॥

॥ दूहा ॥

॥ राग श्रासाजरी ॥ ढाल वेलिनो ॥

रोम नगर तव खलजले, दीधी पोले पोल; ते बारे सुलतान तव, बरवे बेठा ठल ॥ १ ॥ जव नीसाण भडुकीयां, वाग्यां जांगी ढोल; मुख तंबोल खसि पड्या, नवि बोलाये बोल ॥ १ ॥ बीबी सवे इसि इसि पमे, कद्दे किम जुजसी

(११६)

मीर, शबद सुणी जंगाण जय, अंगि तीर ॥ ३ ॥ जंचे गोखे चडि चमि, जव सुलतान, क्या कीजे आव्या हुवे, खदा तर्ग रमान ॥ ४ ॥ किसका दल हादरि हुआ, जेव प्रहे सुखतान; आया विमल बकाल ए. ĦŢ आण ॥ ५ ॥ इए जीते सवि मनावे इए जिते सवि राय: कइ पय लागी माल दे, कइ **सडी च**ज पमि थाय ॥ ६ ॥ आये हिंछ गोबरे. सणिया बोल बकाल; सामा सवि ठीनी लेवे, वयुं आपे माल ॥ ७ ॥ हिंडु हम हकिं गया, स्रडि विण लित्ता कोट; ते कुण त्राज बकाल ए, हमकुं देवे दोट ॥ ए ॥ (चाल) हमकुं ट बकाला, मागे माल विचारा: हमके हाजर मुही असवारा, नही नही कोइ कुफा राः खतान सजाण समाण, हमे क्यू बीबी व्यब खोक जूटाउं, ॥ ए ॥ पकडी तेरे पाए पमाछ; तो सोट हिब तेरा: हिंडु केटक कराउं हेरा, किशं

(888)

बहुतेरा; इल इल कटक सजाई मांकि, इय परकरीया कोकि: मद जींजल मयगल मलपंता, मेहेल्या बंधन ठोमि ॥ १० ॥ छंवाडि मांनी दंतुसल, आडी अलत्ति बांघी; तिहि तक्तआरि अटारि ⊤सारी, कटारी सोइ साधी ⊪ ११ ॥ सींछरे सोइ कुंज सोजाला, पोढी पालर ढाली: कोट तणा गढ विसमा कीधा, बिसरा त्रिसरा वाली गा रश्य गंजमकी जोम जडी जडि जाडी, तांनी ते नवी तूटे; पहेंची छँगा टोंप रंगांचलि, जाला जंग न फूटे॥ १३॥ पाट तणा ते तूरीझ पेलाणे, जे जाणे रण मोम; वालि बांध्या विस-इंरॅ सरिखा, ठेरविळां विष ठोंम ॥ १४ ॥ के तरकर करकस करि जोडे, सींगिणि धींगिणि हाथ; जीव रखी सरखी सौंहावे, मोटा मोगर साथ ॥ १५ ॥ खांडी खेडी नवैल नमीचा, बीजां जे इंचीआर; ठत्रीसे देनायुंध आंगे, अंग न लोंगे जार ॥ १६ ॥ ढोल ढमक दमामा देवे, नप्फेरीना नाद; बारे ते सुखतान सजीडा, विमस

(११७)

सरिसो बाद ॥ १९ ॥ पोल यकी जव पगलां मांडे, तव धूरि ढली टेरोप, बीबी बोखे विमल सरिसो, मीरों म करिश कोप ॥ १७ ॥ बीज़ुं कुगसूं जाम जपाके, तुरीत्रां त्रावी वेस; बोले बांदी सुण हो बीबी, साहिब जाण म देस ॥ ॥ १९ ॥ त्रीजे डगले काल उतरी छ, चोथे दक्तिण देवी, बोसे बीबी मानज मागी, विमल तणा पय सेवि ॥ १० ॥ ए हिंडु नही देव सरूपी, जे प्रे दस आया; जिम देखुं तिम बीटी बीटाई, क्या हिंदूकी माया ॥ ११ँ॥ रे रे मीरां रहे दुक धीरा, म करे मान पराण; जसका खोख्या बाणजी जावे, गाछ पंच प्रमाण ॥ ११ ॥ देखी विमल कटक घण कोटि, सिंह नाद सिरित्राठा; जे घोना मयगल मतवाला, पायक पाला, नाग ॥ १३ ॥ पूछो मोटा मीर मतालिम, जे पयगुंबर पाका, राज रहे तिम रहणि राखो, जूज_ करी इवे याका ॥ १४ ॥ जे दूर्वेसा वेस अनेसा, पूर्वे मुबि मबापा, जोगी जोगी जंगम जडी

(११७)

शेष सदा सपराणा ॥ १५ ॥ प्रवगा जाण कहे तुम्दे मानो, आए विसलनी आज; जो तुहो राज करेवा होंनो, रोम नगरिंजो काज ॥ १९ ॥ मेकिसिआ परधान आपणा, विमल मनावा रेसिः रोम नगर मया जधाउ, जे मांगीस ते देसि ॥ १९ ॥ विमल जुएे जो बारे बीबी. हिंद्र वेंषेज माले, जो मणि माणिक वेग वधावे; सोवन जरीए थाले ॥ १७ ॥ आपे डंमजि घोमा हाथि, टंका कोफ़ि बि चार; मानी वात प्रधानजि वसीया, पोइता नगर मजार 11 20 11 सुणावी सवि सुलताने, बोबी बोल कहाया, हार दो दो सिणगार जला, हिंदुआणी वेस करायान्॥ ३० ॥ मणि माणिक परवाल घलाया, सोवन थाल जगया; विमल वधामणि बीबी श्रावे, रोम नगरका राया ॥ ३१ 🖷 गांवे गोरी कारति तोरी, जारि जेट मुंकाई: विमल वधाया पूर विछाया, आवे आण मनाई ॥ ३१ ॥

(१९७)

॥ डुहा ॥

बीबी दीधे कप्पेंके, जेर दीधे चंगे चीर; प-हिराव्या सुखतान सवि, विमल वधार्युं वीर ॥१॥ मीरां सवि मीनती करे, बीबी दे आसीस; खिजमत करसि ताहरी, मंत्रि म आणे रीस ॥ ॥शा प्रतपे कोकि दीवालकी, अमर करे कयवार; खुदा खुसी के तुहने, विमल विमल जसवाय ॥३ ॥ चोपाइ ॥

खड खंम मति है निर्मली, श्रोता सांजलज्यों ए जेली; विमल मंत्रिने रासे जाए, सुधो सत्तम खंफ वखाए ॥ १ ॥ सर्व गाथा १०६ ॥ ॥ इति श्री पंडित लावएयसमय गणि कृते, श्री विमलमंत्रि प्रबंधे, नव खंडे ठपत्र कोकि धन मार्गए, जीम जुपति विरोध चंडावती नगरी राज्य थापना, विविध देश साधन, सेन्य वर्णन, द्वादश सुरत्राण जेत्राधिकारे, सतम खंगं संपूर्णम् ॥

(१११)

॥ खंम ज्याठमो ॥

॥ चोपाई ॥

श्राव्यो नर एक छद्रुत वेष, छागल मेल्यो मौटो सेख, पुठयुं कुण किहांथी पद्दत, बोसे राज बांजणीआ दृत ॥ १ ॥ मम स्वामीनो आ. यस लही, आव्यो पंथ घणा दिन वही; करी मुंझ पार्टी कर धरी, वांच्यो लेख विटेंदें करी । श्र ॥ अति प्रतापि पोढो परचंड, वरते जेहनी ञाए अखंड: राय पंड्यो पश्चिमनो धएी. लंखे लेख विमलेश्वर जणी ॥ ३॥ राज विरोधे पट्टण परहरी, जइ बेठो चडावइ पुरी; धार पुत्र छहा र्वेलख आज, रुफ़ुं पाउं आपो राज ॥४॥ विषम वे श्रह्मारी रीस, नहितर आवी नामो सीस; वयरी क्षेख वचन विस्तख़ं, विमले कान हेठे नवि धख़ं n u ॥ त्यांथी प्रगट पीआणुं करे, सकल कटक साये संचरे; सिंधु सरिसो आएयो खेद, (राज) बंजणीआनो तेहज देश ॥ ६ ॥ चल्यो

(१११)

झतिरोसे पुदुत, जुएे मंत्रि मोकलीए दृतः नवि माने तो कटकि करो, राजन राजनीत ॥ 9 ॥ मंत्रि राज विमासी द्त, मे व्यवधूत; बोलंतो जे मुख लीन मोटो बब जत्तर आपे खरो ॥०॥ वाट घाट जह जिहां वे वहापुरी; सूरो पोहतो पंडीर्ड, दुते दीर्ठ पंक्रिज राय हिये. राज् त्रय नाणे पड्या वि बीहे; विमल मंत्रीना आपो तरं। जेलग सारो खरी ॥ 3०॥ दत वचने लागां साटको, राज मस्तक उठ्या चाटको, जारं कण किम धली, दूत जेली नाख ॥ ताहरो सामी विमलड राज, ते . नथी लाजः सूनु सुनेपातकि यया, खगासे रह्यों 11 11 र २ ञजन साख राज, एकल प्रामालांट आज, साठ मणीज महा, त छलगा सहस ज ख 괴리 ার, স্থায

(११३)

माने आजः अंजुठ कोडि साहण पहलवणाय, माहरे मन विमल ते वाय ॥ १४ ॥ सतो किमे सिंह, तुज सामीना नमीव्या जगार्ख्या जा रे जइ विनवे खबुऊ, ठठोनगरपति मागे फर्फ ॥ १५ ॥ अपमान्यो अवगणिउ बहुत, वे बसी**उं जैरव जूत; विमल** मंत्रिनी सत्ता पहत. श्चति दृहवाणो बोले दृत ॥ १६ ॥ ते तांरो वयरी बांकनो, श्वति विसमो विषनो आंकनो; जे तुज बोस्या बोस अजेंफ, कहेतां जीज थुड इात लंग ॥ १९ ॥ दूतकहण तव प्रीट्युं खर्रु, चार्ख्य कटक सिंधू पाधरुं; मारग ठडे पीछाणे दिवंस केटले ठंडे गया ॥ १७ ॥ ढमक्या डाक डमवर्डी, रा पंड्या श्रवणे श्रत ष्ठांच्यां को पर दल दनवर्मी जायें रखें नगरने मडी ॥ १९ ॥ विमल विशेष करावी जाए. सिंध मानो आण; नहितर नोसर य ज मख जोवानुं हे कोड़ ॥ đ जाबनी, किम जाइश

(१९४)

आथडी; मुठ मरडी मछरे चर्मी, करी कीधी सींगणि रातमी ॥ ११ ॥ पाला फूजाला कूंबणा, पासे पायक लीधा घणा; गज रथ तुरी पलाण्या तेह, साहमो आव्यो सेना लेखा ॥ ११ ॥ सूंमा-व्यां रण खेत्र विशाल, रणकाहल वाजे विकराल; बेड सजोमा बेहु कूजार, बे सूरा वे रण सिण-गार ॥ १३ ॥ बिहुं दल रथ घोमा थाट, बिहुं दल चमीआ बोले जाट; बे दल तजि तपंता जोई, बिहुंना बल नवि चुफे कोई ॥ १४ ॥ ॥ राग रामगिरि ॥

आ तुं आ हुं आ प्रज तोरों, आ ते मयगल आ ते दंता; वोक्या वोल जे तेवलवंता, ते सारा संजारे कंता ॥ १ ॥ प्रीय तुं प्रेम म आणिश मेरो, मंदिर शुं मत मांडिश मोह; जीवन मरण सदा हुं साथे, जइ सुर लोक चमावे सोह ॥शा नारि जणे मुज नयणे नमीर्ड, तहीयें आतो तुं जयजीत; जारि जल्ल असुका प्रमरो, कंता किम राखीश रण चीत ॥ ३ ॥ माइ जणे जर्डतंडे किम्

(९१५)

जडवुं, जिम नवि लजो ताहारो तात; वीर जननी मुज बिक्तद धरावे, जिम वसुद्दां थाउं विख्यात ॥ ४॥ केवी जाएे मुज हाके डरीर्ड, पाए पडतो वारावार, इति जुति रण किम फुफिश, स्वामी ते दीहा संजार ॥ ५ ॥ नयण वाण नवि खमतो निरतां, कायर रण दोहल्यां करवाल: नाठो नाइ नीसत घर आवसि, कायर नारि हुसि श्राल ॥ ६ ॥ सही समाणी हासां इससे, होसि कायर नारि कलंक. सुहमा सरिसो जो रण जूजत, प्रीय पाठो परठिस पग लंक ॥ ७ ॥ के संदरि कहे सेजे सुत्रंतां, कुसूम कली दुह्रवातो देव, सेब्र ध्रसुको सदल सांजलसी, समरंगण किम सहसो हेव ॥ ७ ॥ के कायर सिर कंचलुं-चाई, सुंद्रि वेषसुव्यावड मांहि: पुढे पासे परीचौ बंधावे, नरवरना नर जोई जाई ॥ ए॥ के बालाँ बोहि बलवंति, नयणे कंता नींद निवार: हय हेषारव जला न होई, वाल्हा के वयरी १० ॥ कायर घाहर घरहर कृते,

(११६)

श्वलवे जघाडां स्कग्गः यह्ये ठंखग ठंडी ठल जोई, जास्युं जो लहिस्युं घर मग्ग ॥ ११ ॥ श्वग्गल ऋरी दल पूंठ पृथ्विपती, गयणे सुरपती पेखे मन खंत; के समरंगणे सुरा रोसे, मयगलई देखत पयदिंत ॥ १४ ॥ सुणि जिणसाखी ढोस डमकिया, आखुवे डीलो सन्नाह; सरोवर कमल जमल जिम विहसे. पर दल दीने तोरो सन्नाह ॥ १३ ॥ ररे परे के कायर काचा. पामर जामर प्रुंठे पलंत; समरंगण सूरास्युं समवमी, र्धारी घोसी घसी मिलंत ॥ रेंध ॥ सूरा सूरपणे रंगण, मत्त मयगल आवी उंख; दंतूसल मुसल पग परवि, जि मोती कुंजरखल रोख 24 11 11 तोरे विरोधे बल लेई छायो. सिंधु धणी जो मांम्यं जलः अति अत्रीमानी आएन माने, राठ पंड्यो अजाण अवुफ ॥ १६ ॥ वे मद माता घोके पाखरीआ पल्हाण; बत्रीसे मब मराम. दंगयुध समरे, करमईता काला केकाण ॥१९॥ हाला टोप रंगाउलि काली, काला खंगा ने

(289)

वास; काला के मयगल मतवाला, काला कोभ जखा जूपाल ॥ १० ॥ अकल अवीह अतोबल बोले, नवि कोले वे कुंगर धीर; जणत लावएय समय जग जोर्ड, जूजाला वे जूजे वीर ॥ १९॥ ॥ चाल ॥

कुकासा कुके वीर वडा. रण रोस जयी रस जीम जना; घर वर धग्सट धाई धस्या, वयरी दल वादल वाउ दिशा ॥ १ ॥ अणिआला काला कुंतल किशा, जम वाजे जाजे जीम तिशा; तीखां काला वन्नि वली, पुंखालां पुंखे पुंख मली॥श जट लंखे तीर तृणीर जयां, खेनाली चुकी चा-सणी कर्याः नवि खंडी अखंस करे, जट खेले खांके खंति घरे ॥ ३ ॥ घण गोला गोफण फार फिरे, रण सागर इंध्या वीर तरे: ससि वाजे श्वतिमर, जनमी, खटखंट, तिखटती जाई नमी ॥ ४ ॥ ताजी तरुआर ते तेजे तपे, देखी दोषी जन उर वपे; वाना वल जोतां चित चडे, चक-चर करे ते चक्र वडे ॥ य ॥ तप तप तपता

(११७)

पटा, करि काराती कटि कटा; जडभडता गख खटकति लटा, जम जामे जुंवे वृक्त वटा ॥ ६ ॥ घण दूम्या घुम्या घय वटे, जय जीता जीता रान रमे; गयणि जडंति श्रंग अमे, समली ज-मली जमलीज तडे ॥ 9 ॥ सुर किंनर कोटी लोक लखा, रण होइ जोइ पंच पखा; कट कटरे कटकि विकट वटा, गढ कृटि कीधा लोट दटा ॥ 0 ॥ हर वाख्या टाब्या तीर तपे, रण जाले फाले टोप टपे: दवि जस्कर खस्कर पंन खरे. तिम सरकर परकर खरक वरे ॥ ए ॥ त्रट जींषण रींषण रुपि थया, बालापण आपण श्वाज जया; जण घूजी मुंफी मांदिं मख्या, धर णीधर धारी धरणी टल्या ॥ १० ॥ इव हब हब हबकी हाक हते, ऊब ऊब ऊब वीज खडग्ग खिवे; धब धव धव धींगट धीर भसे, कम कमती कायर खेव खिसे ॥ ११ ॥ रण रण काइल रणकि छतें, मम डम डमक ममकी छलें; ढोसति हमकि अले, चम चम चंचल

(326)

छलें ॥ ११ ॥ जड उठ्यो छंगो छंग ईशो, तड तम तड त्रूटे कसण किशा; सिंह आगस जंबू जीव जिशो. विमल आगल पंड्यो राज तिशो ॥ १३ ॥ नड तड तड नरभी टप्टी करी, मुद्द मरडि माणे मंठ जरी: कड कड कम कगडी दंत कली, जड धायो पंड्यो पुंत वली ॥ १४ ॥ सिंह नाद कयों गज याट कस्वो, जड जग्गा कोडि कटक जस्वो: राय पंड्यो खंडी खिच कस्वो, गल यहा सींगिणि धीर धस्त्रो ॥ १५ ॥ कठ पंजर करि जंजीर जड्यो. घण घृदड कर जिम काग चड्यो; नव नव परि नरपति नाद नड्यो, घण सूल लहे ए घाट घड्यो ॥ १६ ॥ रण घंघल मंगल तूर रवा. नष्फरी जेरी नाद नवा; विमल मंत्रि जय जय लहि बंद वंदीजन जय जय-कार करे ॥ १९ ॥

॥ दहा ॥

सुहडी सुंदर रण रेलिय'यत, बरवे करवे हाथ कीएणः पेखि सुहड पड्यो समरंगण, हुंन

(१३०)

लजावी एए ॥ १ ॥ के वाला बोले सुए बहेनी, इणोर्च जले अह्यारा कंत; जाउत जस जगहुत इसारत, जो जागो आवुत करणंत ॥ १ ॥ हेयुं सीस वाम कर वलग्युं, व्यलगुं धमयी थाये जिम; सामी कारण सुहड सजोडा, पडतां वयरी पांडे तिम ॥ ३ ॥ वाला बालक दास दीकोलां, ते उपर घण घालत घाय; समरंगण सूरास्युं जिमतां, वादि के विरला कहिवाय ॥ ४ पंड्ये। जित्यो पुएय तेे वल, मणि माणिक सरसो जंडार: जे जे लीधा देश छुझंगम, लिधा गज तेजि ताखार ॥ थ ॥ जे सीमामा मारग मोटा, पऊर देश तणा रखवाल; वेगे विमख तणा पग पूजे, जेट सहित नमीआ जूपास ॥ ॥ ६ ॥ विमल लंई दल पाठो बलिर्ड, त्रिहुं खंमे वरतावी आण; चंडावई परिसर पढुता, ढमक्यां जांगी ढोल नीसाण ॥ ९ ॥ तलीत्रां तोरण गुमी उडी, आवी वंधावे वर वाल; रोम नगर जइ आए मनावी, बांजणीर बांध्यो

(१३१)

॥ 0 ॥ मख्युं महाजन महेता मोटा, सामईये सबि कोइ हरष अपार; विमल जमखि कोइ राज न दिसे, सात कोडि साहण परिवार ॥ ए ॥ वस्तु ॥

विमख चब्रिडं विमल चब्रिडं, सेन घण खेई; रोम नगर प्रूरव दिसे, जेणे बार सुखतान जित्ता, बंजणिडं राड बंधीडं, देश देशना दंड खित्ता; दाण श्राण सवि श्रापणी, वरतावी संसार; वेगे विमल श्रावीडं, चंडावई मजार; चंडावई मजार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ वाजे तिवलडिए ॥ ए राह ॥

के गोरी के सामलीए, सोइावो रे, सोवन पाट; बेसारो के, विमल वधावो रे॥१॥ माणिक मोती साथीआ, सोहावो रे, पहिरो सवि सिण-गार के, गेले गार्ड गोरडी, सोहावो रे, बोले मंगल चार के, विमल वधावो रे ॥ ४ ॥

(१३१)

॥ चोपाई ॥

श्रावी विमल बेठो पाट, जीमराय तव जेटण साट; तत्र चामर मोकलीआं सार, त्रिहुं खंडे तोरो व्यापार ॥ १ ॥ में मोकलीआं गनने जाव, सात बत्र सिर चमर ढलाव; करे वीनती बे कर जोड, तुम्ह छुहवे अम्ह लागे खोड ॥ ३ ॥ अम्हस्युं डंस रखे मन धरो, तुम्इ विवहार अठे श्राकरो; जीमे जे मोकट्या प्रधान, ते संतोषी श्वाप्यां पान ॥ ३ ॥ घणा दीवस दोहले खल-जब्या, सिंधु देशना महेता मढया; मेहेलो प्रजु पंड्यो अखंग, मुह माग्यो वलि लेयो दंग ॥ ४ **उपन्न** कोडि धन देंके करी, त्रण लाख वली ताजा तुरी; आए मनावी आदयो देश, विमल वधाव्यो नगर नरेश ॥ ५८॥ राज पंड्यो ठठे जद्भुरहे, छहनिसि छाए क्मिलनी वहे; रोम नगर ने क्हा हुंति, वरस वरस आचे खिजमति ॥ ६ ॥ च किर्व रयवांको, जोइ किरो, तिस न देखें चंड्रापुरी; विमल वाणि से मुख उचरी

वासो नगर विवेके करी ॥ ७ ॥ गढ पाया पा-ताले धर्या, कोठा लाख को फि के कर्या; कोठे कोठे देवि अंबावि, आगल नवी निपाई वाव ॥0 ठाम ठाम जम कुछा चार, पाणि छाणे पाणी-हार; घर घर खारे मीठी कुई, जले जरी वाव ते जुई ॥ ए ॥ धवल गृह मांड्यां धोरणि, कोरो कारीगर कोरणी, के मंदिरनी मोटि वात; जूमी जली सोहावी सात ॥ १० ॥ जोतां गोख तेणां ते बार, आव्यो इंडज़ुवन अवतार; राबे ते क्रमेमे घर जयां, जे हीणां ते अलगां कर्यां ॥ ११ ॥ बहु छन्न छवारि छाज, जेणे क्रुं जावे राज; कृण टाणां सोधे ईधणा,मांड्यां जीव जतन ते घणां ॥ ४१ ॥ पाणी लोक त्रवेली गले, धर्मे धन अधिकेक्तं मले; आण मध्य को न कहे मार, सात व्यसन ते अलनां कार ॥ १३ ॥ घर घर खद्दण्पवंती नार, सिण-गारी अमरी अवतार; वेचे वित्त चित्त परि-घलां, करणी करे पुण्यनां जलां ॥ १४ ॥ चिहुं

(१३४)

पासे मंकावी पोख, चोरासि चौटानी ओक्ष; चहुटा विए नवि थाये पीठ, चोइटा विए ते नगर न दीव ॥ १५ ॥ चोहटे काव्य कथा रस कहे, रायना बेटा चहुटे रहे; चोहटे शोजे दोसी इट, चहुटे घाटघमा विहट ॥ ॥ १६ ॥ चहुटे फल फोफल ने शाक, चहुटे करे कंदोइ पाक; फनीआ सुखनीआनां हाट, चहुटे दहीं वेचाये माट ॥ १९ ॥ चहुटे धर सोनी सोनार, मिख्या डबगर ने मणीश्चार; चहुटे गांधी गुगां करे, फोफलीआ ते फोफल जरे ॥ ॥ १० ॥ चहुटे सांथ सयल मंगाय, चहुटुं जोतां नवि उंमाय; नाणावटी कपासी तणां, हाट सुगंधी पटुव्रा घणा ॥ १ए ॥ सूत्र सांथ ते सोहामणि, चहुटे सहु धाये धन जेणी. आवे परदेशी वठीआत, चहुटु देखी थाय रखी-यात ॥ १० ॥ वस्तु विकाये चहुटे चडी, विसी विसा ही लि तडफर्नी: महेता मांगवी आनां ठामे; चहटा विण नवि सीफे काम ॥ ११ ॥ जकीया

(१३५)

जडे जडित आजर्ण, चहुटे वर्त्ते सघला वर्ण; चहुटे वस्तु चडे नव लखी, करे परीक्ता जे पारली ॥ १० ॥ चहुटे मोटी पाणी पर्व, चहुटे गाये गए गंधर्व; चहुरै बेठा बोले जाट, चहुरे धर्म-तणा आघाट ॥ १३ ॥ चहुटे चोपट जो जवहरी. चहटे वस्तु अमुलिक खरो; रुपागरा चीतारा चाहि; घांची मोची चहुटा मांहिं 11 28 खासड खेडां मोजड घरे, जे जोये ते चहर जरे; दयावंतनी दृष्टे पड्या, जीव मुंकाये चहुटे चडधा ॥ १५ ॥ कणबी कंसारा कुंजार, गांता **ढिंपा सह**ी लोहार; चहुटे चींतवसे (चहुं गमां, मासी तंबोली तेरमा ॥ १६ ॥ चहुटे जोइ मंमाई जान्न, चहुटे नाचे नवलां पात्र; चहुटानी मंडा-वी हार. कयाँ त्रिकलज्ञां तोरण बार **23 II** संताप्यो घरथो नीसरे, चहटे जातां छख वीस-रे; जेहोने चहुटुं छुफे प्हरे, करे लीला ते बेठां घरे ॥ १९ ॥ नगर तणां की धां मंमाण, जे जोई परदेसी जाण; वैद्य वर्ईद ने व्यवसाईआ, ठाम

(१३६)

गमथी ते आईआ ॥ १९ ॥ ईववटीने आटावटी, मासी वासि नवरंगी नटी; ठाउछा ठाम जला जा-सवी, श्राव्या वेग वच्या मालवी ॥३०॥ वाजित्री श्रा तायें मबगरो, नगरी वर्ण अढारे जरी; सोमामा ते राखे सीम, कोटवाल ते कीधा जीम ॥ ३१ ॥ जे जे जोसी पंफित हता, वसीआ नागमती नायता; वसे अढार वर मंदिर कोध, पोरुआक वास्या परसिद्ध ॥ ३१ ॥ झाति चोरासी जे निर्मेली, विमल विशेषे वासी वली; वसे विप्र विद्या अञ्यसे, खत्री खांके मन जल्लसे ॥३३ ॥ तुठी जस खंबाई मात, विमल प्रासाद कराव्यां सात: मंम कलस सिर धज लह लहे, पोढी जिन प्रतिमा गह गहे ॥३४ ॥ तपसी मठ नवली निशाल, राजजुवन पासे पोसाल; खट दरशन कीधा विश्राम. गम अनोपम कीधा ताम ॥३५॥ वानि वन नंदन आंतर्यां, दह दिसि सबल सरोवर जर्या; पाषाणे हढ बांधी पाल, खाई र्भाइ गई पाताल ॥ ३६ ॥ के लंका के

(239)

वती, चिहु युगे नगरि चंडावती; ईंड सरिखो विमल नरिंद, करे राज त्रिजुवन आनंद ॥ ३७ मागण जन वंडित दानार, करे निरंतर पर छप-गार; त्रिजुवन तेज तपंतो धीर, परनारीनो प्रगट्यो वीर ॥ ३० ॥

॥ वस्तु ॥

विमले वास्युं विमले वास्युं, नगर सुविशाल; चंडावई पोशाल वर, जेखे धर्म थानक कुरावीआं; सात प्रासाद सोहामणा, जेखे विंब पोढां जरा-वीआं; चतुर्विध संघ मेलि करी, श्री शेत्रुंजे गिरनार, यात्र करी घर आवीयो, वद्धावे नर नार, वद्धावे नर नार ॥ ४ ॥

॥ चोपाई ॥

पटटण सहगुक्त करे प्रवेश, अर्बुद तीरथ दे जपदेश; अंबाई आराधन कह्युं, तो मन वंतित विमले लह्युं ॥ १ ॥ धर्मघोष सृरिश्वर सोई, चंडावइ पधार्या जोइ; उन्निव विमल करे जह्वास, चंडावइ राख्या चोमास ॥ १ ॥ खंग खंग मति

({₹0)

ठे निर्मली, श्रोता सांजखज्यो ए जली, विमल मंत्रिने रासे जाण, एटले घठम खंम वखाण॥ ॥ ३ ॥ सर्व गाथा ॥ ११४ ॥

इति पंडित खावएय समय गणि कृते, श्री विमल मंत्रि प्रबंधे, नव खंडे पश्चिमा-धिपति पंड्यो राजा जैत्याधिकारे, युद्ध वर्णन, पाटण स्थापना, जीम जुपति प्रेषीत, ठत्र चामर गज बर्णन, धर्मगुरू प्रवेश महो-छवाधिकारे श्रष्टम खंक संपूर्ण॥

॥ उप्रथ खंम नवमो ॥ ॥ चोपाई ॥ संघपति पदवी पामी वली, विमल मंत्री पूरी मन रूली; निसि पोढ्यो जिनवरने ध्यान,

A YA COMPANY

(१३५)

सुपन मध्य गज सायो कान ॥ १ ॥ जाग्यो तव गुरू आगल गयो, सुपन कही रलीआयत थयो; . सहग़ुरू सुपन विचार्युं तिसे, कई को करमे बेटो २॥ धर्मघोष बोले गणधार, कई को हसे ॥ तीरथनेा उद्धार; कई को करस्यो मोटुं काम, जेणे तुम्ह रहेशे अविचल नाम ॥ ३ ॥ आव्यो संघ सकल समुदाय, धर्मकथा कहे सहगुरु राय; जे जिनधर्म जगत्र दाखीर्ठ, चिहुं जेदे जिनवर जाखीर्ड ॥ ४ ॥ वीस सहस नवसें त्रण मास, पण दिन पोहर घडी आस; दो पल ने **अक्तर अठताल, वीर पठी हो**लि 'विसराल ॥ ॥ था। वरस बेहि छप्पसह हुसि, तेह सहित धरम जाईसि; मानव बीज रहे तिए जले, गिरि वैताढ्य बिद्धुतर बिले ॥६॥ कहिये सकल धर्म तेहने,गुण एकवीस अंगि जेहने; काचे कुंज अमी आवास, सुंदर साहमो दुई विणास ॥ 9 ॥ श्रावक गुण एकवीसे वमा, नही कुझ ईंडी पडवमा; प्रकृति सौम्य लोक प्री सदा, आवक कूर्मुं न बोले कदा

(१४०)

॥ ७ ॥ पापत्रीरु जे मूरख नही, दाखिण लाज दयाल सही; मध्य जावी सवि केस्युं रह्यो, सोम दृष्टि गुरुरागी कह्यो ॥ ए ॥ धर्म कथन निर्मल होय, दोरघ दरशी श्रावक जोय: संगति कल वना विनय व्यादरे, गुण की थो ते हईके धरे ॥ १०॥ लबध लक्त परहित जे दया, श्रावक गुण एकवीसे कह्या; न्याय थकी घर लखमी मेली, गुरु त्याचार वखाणे वली ॥ ११ ॥ श्रीखे कुल वरते विवाह, पण ते गोत्र अनेरा मांह्य; मात तात गुरु जक्ति अपार, देशाचार करे व्यव-हार ॥ ११ ॥ अवगुण कहिना नवि उचरे, सदा-चारनी संगती करे; नहीं संकट ने नीच नही जिहां, थोमे फारे मंदिर तिहां ॥ १३ ॥ अति **डानो प्रकट नवि वसे, टाले पाप पुएय अन्यसे**, लाज मान घर लागे वरे, सिर अजरे जोजन ॥ १४ ॥ जाएे छंग तएां बल जलां, परिहरे जीपे वयरी जे मांहीला, दान दया दम आणे देख, वित्तिमान पहिरे पण वेष ॥ १५ ॥ पहिलं

(१४१)

इसुं परिक्ता करी, धर्म योग्य श्रावक ते धरि; समकित आदे देइ व्रत बार, पंच अणुव्रत ठवीये जार ॥ १६ ॥ धरीये ध्यान देव अस्हिंत, जगति जली सहगुरुनी संत; जिनजाषित ते साचो धर्म, त्रिहुंएँ बोले समकित मर्ग ॥ १९ ॥ पहिले प्राण हिंसा ए टार्ली, बीजे अली म बोलो वली: त्रीजे व्रत चोरी मम करो, परनारि चोथे परि-हरो ॥ १० ॥ वत पंचमे लोज घण टाल, ठठे दिशिनो निश्चे पाल; व्रत सातमे जोग उपजोग, छनर्थ दंड आठमे योग ॥ १ए॥ नुमे सामायक आखेप, दशमे दिसिनो सदा संखेप; पोसह पुएय-वत अग्यारमे, अतिथि दान यो वत बारमे ॥ १० ॥ आपण उत्तम थई वापरे, खावे पीवे गति नवी करे: विए छंतर जो उत्तम थाय, नर बीजा किम नीच कहाय ॥ ११ ॥ श्रावकने घर हुए आचार, जाएे जहा अजहा विचार; सहगुरु वयण वखाणे इस्युं, जाणे नही तो पाले किस्युं ॥ ११ ॥ कंद जाति ते संघली जणी, ए बत्रीस

(१४१)

कहावे गणी; सुरण वज्रकंद ते वली, आडु नील हलिझा टली ॥ १३ ॥ थेग ने गजार मुला जला, आलु पिंमालु ने वहल्लां, मोथ कचूर नीलां खरसुआं, जुमिरुहा ने खिलोमां जुआ ॥ १४ ॥ वेस करलतानी कुंपली, अमृतवेल कुंली आंबली; प्रथम वाथल कापी जेख, शाक जेद सल्लंक सुणेय ॥ १५ ॥ सूरण वह्न विशेषे वार, गिरिकन्नी थोहर कुंछारः गेला सिताउरि लसण बिरास, खूण लोटां लूणा तक्त ठाल ॥ १६ ॥ लूणे बाले साजी थाय, कमल कंद ते लोढ कहाय: ख़णा **डाल जमर तक्र नाम, वि**ष पूढे किम लहीये ॥ १९ ॥ संधि सिरा ते गृढी छंग, जे ਗਸ जांज्युं जाजे सम जंग_ः माल वेल बेरी पालवे, जीव व्यनंत जाणी जालवे 11 20 11 देश एणी परें बोह्यां छहिनाण, पुहतो देशाजर जाणः ज्यां ज्यां वस्तु देखे इसी, जीव छनंते काया ग्रसी ॥ १ए ॥ ते नवि खाये जे हुए दुक्त, प्रीहे जे बावीस व्यजक्त; वट पिंपस

(१४३)

उंबर ने प्खद्दा, काकोछंबर पंचम वृद्दा ॥ ३०॥ मधु मांखण ने आमीष सरहो, रयणी जोजन ते परिइरो; सवि मद्दी छत्थाणुं छनंत, बहु बीज फल तुष्ठह छंत ॥ ३१ ॥ घोलवमां ने विंगण जाण, अणजाएया फल फुल म आण; हीम करहा विष सवि रस चढ्या, ए अजक बावीसे मख्या ॥ ३१ ॥ डव्य दोत्र काले नव नवां, ते अजस्त जाणे तेहवां: वर्ण विशेष वसी टालीये, त्रण वार पाणी गालीये ॥ ३३ ॥ लांबा गलणां श्वंगुल त्रीस, छतिस गटां पुहलपण षीसः खारां मीठां नवि जेलीये, संखारा थानक मेहेलीये ॥ ३४ ॥ ईंधण कण रंधण पाणीये, जीव तणी जयणा आणीये: खंडण पीसण लिंपण खसे, जाणे जीव वधाये रखे॥ 34 11 वासी पोसी जेदन दहीं, सोल पहोर जपरिरूं नहीं; वरजे वासी वसी कठोस,म जमे जे मल-वारी गुख ॥ ३६ ॥ सीआले दिन बोख्या त्रीस, बन्हाचे दिन जाएे वीसः वरसाखे दिन पत्नर

(888)

मान, दिन वोले म जिमो पकवान॥३९॥-फासु लवण रहे दिन सात, वरसाले ए बोली वात. पनर दिवस सीआले जोय, मास दिवस उन्हाले होय ॥ ३७ ॥ पीस्यो लोट पंच दिन लगे, बो-ट्यो मिश्र शास्त्र मुलगे; अणचाट्यो श्रावण जाडवे, नव नव निरति मास नव नवे ॥ ३७ ॥ आसो काती चार वखाण, मागसर वली पोसे त्रण जाण; पंच पहोर माह फागुण मांहिं, पहोर चार चैतर वैशाहिं॥ ४०॥ जेठ आसाढे पोइर वत्त, त्यारपन्नी दल हुए अचित्त; चाळ्या पनि बिहुं घनीए होय, फासु लोट कहिजे सोय ॥ ४१॥ पंच पहोर जन्हाले कद्या, चार पहोर सीआते लह्याः त्रण पहोर वरसाले जणो, कह्या काल ते पाणी तणो ॥ ४१ ॥ दीहे पाणी फास करे, राते जकाट्युं वावरे; निरति विरति जो आणो सार, तो श्रावक सुधो छाचार ॥ ४३ ॥ पाठिम रयणि घनी वे चार, तव नयणे नर बींझ निवार; उठे मुख् गणतो नवकार, संजारे छुत्र धर्माचार ॥

(१४५)

॥ ४४ ॥ सामायक पडिकमणुं करे, दिन छगंते सिर विहरे; अक्तत फल दीठो जिन जाण, जेटि सहगुरू सुणे वखाण ॥ ४५ ॥ दे वंदणा विनय-ना जाण, करे श्रीगुरू मुख पचखाण, पठी श्रा-जिवीका जपाय, लहु आरंज तणा व्यवसाय ॥ ४६ ॥ जोजन वेला हुए जेटले, कुसम काज नर को तेटले: पहिरी धोती ज्योती निर्मली, करी हाथ वरचुं कमली ॥ ४९ ॥ अलुहाणे चरणे चा-ख्यो जाय, वेगे पहोतो वाडी मांह्य; माली सहजे चुंटे फूल, धरे ठाम ले आली मूल ॥ ४७ ॥ छाएयां फूल विधि जे घणां, पय पुजण परमेसर तणा; न रहे साथ अनेरे काम, आणी मेले उत्तम गम ॥ ४९ ॥ घर नायक तव आव्यो घरे, पश्चिम साहमुं पावन करे; पहेर्यां वस्त्र परहां ते मेल, मरदन ऊँग सुगंधी तेल ॥ ५० ॥ गली नीर साचवणी करी, उन्हा जलनुं जाजन जरी; जोइ चोखे थानक ढालोर्ड, पोढो पाट ते परना-क्वीर्ज ॥ ५१ ॥ वेठों पुरव सामो थई, अंग पखाले

(१४६)

पाणी लई: अंगोली जल कुंडी जरी, ते नाखे जल जयणाकरी ॥ ५२ ॥ जे अंगोलि तणुं पोतींछ, मेली पहेरे पड़कोतीछ; नही खांडूं बांडु जे विमल, ते पोर्नी उं पहेंगे घवल ॥ ५१ ॥ रक्त वस्त्र ने रातां पुल, वसीकरणी ते पुजा मूलः लक्की काश्म धीलां करे, धीलां पुष्फ वस्त्र ते घरे ॥ ५४॥ कालां घोली कालां फूल, वयरीने सिर माथासुल; धवलां धोती धवलां ध्यान, धवले फूले मुक्ति प्रधान ॥ ५५ ॥ परो ध्यान पूजा सारिखां, पहुंचे मन वंठित पारखां; धवल वस्त्र ते उत्तर तणी, पहिरि लखनी वाधे घणी ॥ यह ॥ पहीलं, जातां मंदिर मांहा, देवालो जोडावे ठाय; निर्मल थानक आति अजिराम, उपर चंडुआ चित्राम ॥ ५५॥ दोह हाथ जुईथी जणी, उंचि प्रतिमा रही जिन्तणो; अधिके उठे दोष म जाए, करे मृत्यु के पाडे हाए ॥ थए ॥ इत्तरपट उपर उहण; तेणे सिर ढांके ष्ठांपणुं; आठ पडेा करजे मुखनास, जिन्वर सास

(382)

लगाडे दोष ।। यए ॥ बेसे पूरव उत्तर जणी, पूजा करवा घरनो धणो; दक्तिण दिसी संतान नं सरे, पश्चिम चौथो नवि उद्धरे॥ ६०॥ नैऋतकुणें कुलद्तय जाण, व्यगनिकुण बोर्खी धन हाण; वायकुण संतान न फले, ईशाने व्यवइय लचले ॥ ६१ ॥ पूजन केसर चंदन प**खे**, कसो, तेणे सुकड छालगी घसो ॥ ६१ ॥ पहिरो मुकट कनक कंकणां, नहीत्र करज्यो सुकड तणां; पूजेवो त्रिजुवननो नाथ, आघोम धरे आडो हाथ ॥ ६३ ॥ जो घर रिऊि न पुद्धचे घणी, कर मुझा न हुए सोवन तणी; आणी पाणी निर्मल चंग, पूरां देव पद्याले छंग ॥६४॥ वालाकुंचीये खूणा घणे, जुहे घणा छंग जूहणे; पूज्या विण करथी मन मेल, के चंदन के चंपक वेल ॥ ६५ ॥ पाय जानु कर दोदोषवा, मस्तक पूजा बोली सवा; जाल कंठ हृदय स्थल पेट, पूजा पंचे। जिनवर जेट ॥ ६६ ॥ नवे तिलक नर त्यां

(१४७)

षत्रे, दीत्रो जिन दक्तिण कर ठत्र; ढोतुं आगल डाबे धूप, दक्तण चंदन ध्यान स्वरूप ॥ ६९ ॥ क्योरे कुसुम हाथथो खढ्युं, खथवा जुमि साथे जई मह्युं, लागुं पाय कुसुम ते धर्युं, नाजि हेठ सिर जपर कर्यु ग्रे६०॥ जे जे जंतु नीच आजडयां, की के खाधां खरड्यां सड्यां; रक्त धवल कणयर परिहरो, आखुं फूल म कटका करो ॥ ६९ ॥ इस्यां फूल तुह्य दूरे करो, जुगति मुगति कारण परिहरो; ए ठाकुर शिव पुर सारथी, तहारी पूजा साक्त नथी ॥ ७० ॥ तिणे फल फूले पूजा करी, नीचतणे कुल ते अवतरो; पामे फल पूजानां सोई, उत्तम कुल नावे नर जोई ॥ ९१ ॥ कलस भूपधाणे चिहुं पखे, जिनवर ठत्रको खागे रखे; जिनवर पुजानो समुदाय, रखे किशुं मंदिर ॥ ७१ ॥ देवालाने दिवे जई, घरनो ववराय दोवो म करे सहो; धूप दही ने फख**ुपकवान**, कोरां टाली रांध्यां धान ॥ ७३ ॥ ते सघलां **धा**ये देवकां, जिन दृष्टी पनी आंविर थकां

(१४ए)

जाणे देव छाठे घर तणा, ठाकुर कहीये न हुए छापणा ॥ ५४ ॥ जो जाणे परि सेवा तर्णे. ठाक्कर पदवी दे आपणी: जिनवर पूजा सदा संजाल, चौराशी आशातना टाल ॥ ९५ ॥ ज्यां थानक नवि हुये माठ, रही श्रखगेा प्रणमे कर साठ, नव कर निरति कही निरवाण, अवर छवग्रह मध्यम जाए ॥ ९६ ॥ निसीही पहेली घर परिहरे, चिंता देव जुवननी करे; बोजी निसीही पूजा साथरि, जिन मंदिरनी चिंता वारि॥ 55 ॥ त्रीजी निसीही पूरी कही, करो म्यान जिन आगल रहो; करी अविधि आशा-तन हवी, जिनथानक नाक नसिक्युं राडवी ॥ ९७ ॥ खेल थूंक रामत कोगला, कींधुं खुं खुं सीखो कला; मैथुन मजान कलहो कर्यो, जिन मंदिर कोज हहिंजे धयों ॥ ७७ ॥ ठाणां कापम पापड वर्फी, दाल जगवी देहरे चडो; सिर कर छंग पखाढ्या पाय, करी वात बीजा उपाय ॥ ७० ॥ नाख्या नख नोमाला पत्नी, चामर वत्र

(१५०)

ढलाव्या वली; धर्यां शस्त्र पहेरी पावकी, नाखी गड गुंबम खालडी ॥ ७१ ॥ नयण कर्ण मस्तक ने खाल, नख नासिका दंत ने गाल; ए आठे मल नाख्या हरी, बेठो पग उपर पग करी॥ठश॥ रांध्युं के अंगीतुं कर्युं, के जिनमंदिर ढोरे जर्युं; जेव्या जिन पहिरे खासके, रामत रमीर्ड गेडी दमे ॥ ७३ ॥ नाख्या रगत पीत नही जला, हन्ना वमन नांख्या कोगला; नाठो के बेठो जुवटे, कर्या वएज सालट पालटे ॥ 08 ॥ के तँबोल जखी सुखडी, करी नीत ते लुइमी वडी; चंप्यो चंपाव्यों पमपकी, कर्यां युद्ध घडी पा घकी ॥ ७५ ॥ दीधा सराप गालि घणहठी, पाडी होन करी पालठी; पख्यो पगरज पगनो पंक, सुतो नीडा करे निशंक ॥ ए६ ॥ जंड कला जोजन जीलणुं, वीण समारी पारिखपणुं; नाख्या दंत दम्या खर तुरी, साता वस्तु वहेंचण करी ॥ 69 ॥ कर्यों मंत्र घड्यां हथी आर, कस्त्रो साद देई रे कार; मुकुट खुंप ते नहि बोडीआ, जिन

(१५१)

दीठे कर नवि जोमीआ। 1001। नवि की धो सचित परिहार, विण सचित न क्यों सिणगार; वईडुं कर्युं कराव्युं होय, मेल्या लोक आप कजो कोय ॥एए आठ पनो न कयों मुखकोस, विए उतरासए लाग्यो दोष; पहेरी धोती सान विए जेझ, बेवो पाय पसारी बेछ ॥ ए० ॥ दीधी पुंठ जोई जिन जणी, आशातना अवर जे घणी; ते वरजो जाणी मन मांह्य, जिस तुसे त्रिजुवननो राय ॥ ७१ ॥ फूंक ढिंक ने तंती ताल, लाली पंचम जेद विंशाल; नवले नाटक परठे पाग, वाजे वाजित्र रंगे राग ॥ ए१ ॥ गौंभी कौलाहल विचार, माली कौशो देव गंधार: डविस सिरि छंधाउलि खरी, खट जापा श्रीरामे वरी ॥ए३॥ रामगिरी देशाख तोखार, छुंटगिरी पुलंजरी सार; धन्यासी कीजे मन खंत, ए खट जापा वरो वसंत ॥ ए४ ॥ शक्तका हंसी ने जैरवी, कर्णाटी गुजरी सिंधवी, वेलाजलि खट जावा लहे, तेहनो स्वामी पंचमन कहे ॥ एए ॥ त्रिगणी कंकन

(१५१)

खंजायती, आजेरी सामेरी सती, वयरामी खट जाषा वली, जावे जैरव सरसी मली ॥ ए६ ॥ बंगाली देवज महूत्र्यरी, दोषशाटिका देवज-गिरी, कामोदा खट जाषा एह, मेघ राग सरिखो सन्नेह ॥ ए ॥ तोडी तोक्की ने जुपाल, माहिम डुंबी मल्ली माल; खट जाषा नव नव परी जेणी, ए वर नटनारायणी ॥ ए० ॥ खट रागे इम जाख बत्रीस, बोख्या राग सहस बत्रीस; बोढ्या मिश्रानामे बहु होय, तेहनों पार न पामे कोय ॥ एए ॥ रिद्धिमान जिन पूजा कही, आवे सतर जेदें सही, एकवीस ने अठोतरी, सहस लाख परि कोके करी ॥ १०० ॥ दहे पाप उखेवे धूष, दीप नसामे दुर्गती रूप; पूजा राज्य रिद्धि रस रंग, दे नैवेद्य सौख्य सपत्तंग १। १०१ ॥ तव नियमा लहे मुगती विशाल, दाने नव नव जोग रसाल, देव जगति जली राणिम जोय, अणसण मरण इण ठामे होय ॥ १०१ ॥ दे गुरू सही सुऊंतो आहार, मात तात तणी

(१५३)

करे सार; सतर छढार जोज्य रसवती, तिई छन्नक्त टाले जिनमती ॥ १०३ ॥ घट फली कणसङ् प्रधान, त्रिहुं प्रकारे टाले धान; कंद पुष्फ फूंल शाखा पत्र, पंचाशक ते कह्यां विचित्र ॥ १०४॥ जल थल खचर जीव जग जणे, त्रिहुंना आमिष त्रण जे गणे; तीखा मधुरो कटु कसाय, खट्ट खार खट रस कहेवाय ॥१०२॥ सतर जोज्य ए पूरां थयां, सुए श्रढार जे जिए परिं कह्यां; वाव्यां वेनि धानजिदोय, সম छामिष परसिध्धां जोय ॥ १०६ ॥ गोरस शाक चिहुं चिहुं परे, तेल हिंग इकुरस आदरे; लवण वार नव नव विस्तार, मह्यां जोज्य एटसे छढार ॥ १०७ ॥ पीलुं छन्न तेहु नवि जमे, तेहनुं नाम विदल उपजे; तेम जमो दधी तक मजार, एम बोख्युं गौतम गणधार 11 200 11 जीव तणी नितु जयणा चणी, खप कीजे चंडो-दय तणी, जल दल खल खंमण रांधणे, शिजा थानक संकेरणे ॥ १०ए ॥ जोजन जुमि घणी

Jain Educationa International

For Personal and Private Use Only

(१५४)

ववराय, सुण समु देवाला थाय; कर चडोद्य चोपट चंग, जो मन जिन धरमनो रंग ॥ ११० ॥ जमतां श्वन्न न विखोडोए, विग सवाद मुख मोडीएः प्रीशं जोजन नवि गंडीए नवि वातजी हरस नवि मांडीए ॥ १११ ॥ बेतो आसणथी मम चले, जोजन अवर जले: उणो उठे कोलिए वे कोलिए. पवित्र कीजे तंबोलए ॥ १४२ मंख 11 जुद्धि नवी धारी खरो, पढे जिनवर दर्शन करी: वाम छंग धरि धरि विवेक, जइ सिज्या पोढे क्तण एक ॥ ११३ ॥ उठ्यो वली करे व्यव-हार, नीच सरीसो नही व्यापार; नवि लोपे जिनवरनो धर्म, प्रीठे पन्नरे खर कर्म ॥ ११४ ॥ बाली काठ करे छंगार, वेचे करमज ते के कुंजार; ईठवाह सोनार लोहार, अगनि कमें डगा विचार ॥ ४१५ ॥ पाटा आंबा रायण तणा, वन वेचां अणवेचां घणां; वानी कावा करसण करे. पान फल वन कर्मजि हरे॥ ११६॥ घके घकाने

(१५५)

धुंसर शकट, शाडी कर्म कह्युं ते वीकट; जामे बलद उंट गाडलां, वाहे जाडी कर्म न जलां ॥ ४९७ ॥ कूप तलाव खणावी खाण, पाहण फोड मेकि बल जाए, फोफी कर्म ते जूमिशुं मले, पंच कुकर्म कह्यां एटले ॥ ११० ॥ आगरि दंत चर्म ने चमर, वोहरीउं जीव अंगज अवर; मोती हिंग कवम शंखला, ए वाणिज्य दंत केटलां ॥ ११९॥ लाख गलि मणसिल ने खार, लख वाणिज्य करो परिहार; मधु मांखण घृत गुल नही संहरो, ढीला रस वाणिज्य परिहरो 🕕 १२० ॥ पद्यु पंखी मानव विवशाय, केंश वाणिज्य वरो कहेवाय; विष पाखर आंगां हथीछार, थाट विष वाणिज्य विचार ॥ १११ ॥ ए वाणिज्य पंच मम करे, वली सामा-न्य पंच परिहरे; उखल मुसल नीसा वाट, कोइलु घाणी घरंटी घाट ॥ ११२ ॥ करे वाणि-ज्य कांकसी आ कोइ, पीलग कर्म कहीने सोइ, पुरा छंगे पडावे छांक, समरावे फोडावे नाक

(१४६)

॥ १९३ ॥ कान पुत्र त्रेदे आफणी, पूत्र कलावे करद्वा तणी; दाण वोलावी थाई तलार, लिगेा-तिहरानो व्यापार ॥ १९४ ॥ पाटा गाम मकाते करे, अणहुंता अकराकर करे, निईयपणां तणां जे काम, ते निर्लंठन कहीये नाम ॥ ११५ ॥ धर्मबुद्धे के वयरे करो, के बाले जगंति हरी: दे दावानल ते दव कर्म, किम पामे जिनवरनो धर्म ॥ ११६ ॥ सरोवर डह सुकवित्रा कृत्रा, के उलीच्यां जल जूजूऱ्यां, कास निक वालतां अर्धर्म. ए कहीचे सवि सोसण कर्म ॥ ११९ ॥ हिंसा करे जीव ते सही, पोसे सुडा ने सालही; कूकम स्वान मोर मांजार, छुष्ट नारि सवि परिवार॥ ॥ ११० ॥ पोसे दास दीकोलां घरि, जाणे वेचुं मातां करी: माठी तेखी ने तेरमा, बाबर कठिन कसाई समा ॥ ११ए ॥ वागरीआं सरीसो व्यवहार, असती पोष म करो लगार, ए पनरे खर कर्मादान, टाले आवक सोइ प्रधान ॥ १३० पहोर पाठली वेला लही, सामायक पडिकमणं

(१५७)

सही: घरी निर्मल काजो जऊरी, आवे सिरि साचवणी करी ॥ १३१ ॥ पुर मंदिर चिंता परिहरे, समता सामायक छादरे; गुरु विरहे **ठणदारि थाप, जीव योन खमावे आप ॥ १३१ ॥** पंच सहस खट शत ने त्रीस. जीव जेद बोसे जगदीशः मिछा इकक जेद विचारः विगते वर्ष बिखाख छढार ॥ १३३ ॥ पूरा परठे सहस चो-वीस, एकसो उपर अधिका वीस; मिन्ना डुकड श्वरथे करी, खामो तो पामो सीव पुरी ॥ १३४ ॥ मि मृद्ध जावि घणमां कोये, **ठा पर दोष सक**ख ढांकीये; मि कहेतां मर्यादा रह्यो. छ आपोपुं मर्यादा ग्रह्यो ॥ १३५ ॥ क कहिजे जे कीधुं पाप, म ते उवसम आणी आप; अरथ सहित जे पणी परे लह्यो, सुधो मित्रा छुक्रम कह्यो ॥१३६ पुढवि काय अप तेज वाय, सात सात लाख कहे जिन राय; वणसइ दश लाख बाहर वली, चौद साख झनंते मधी ॥ १३७॥ बि तिं च रिंदी दो बो साख, तिरि पंचिंदी चुंसख जालः सुर नारय

(१५७)

चज चज लख कवी, चौद लाख जेदे मानवी ॥ ॥ १३७ ॥ सामायक पुंठे पचखाण, चौद नीम संजारे जाणः प्रह जगते लीधा मन रूली, (ते) संध्याए संखेपे वली ॥ १३७ ॥ सचित डव्य विगे पारखां, वस्त्र कुसम वाइन सारखां; शयन विलेपन दिसि छंघोल. ब्रह्म जगति संख्या तंबोल ॥ १४० ॥ वांदी देव अर्ध्युं जव बिंब, खही वेला ठाई छविछंब: छतिचार एकसो चजवीस, आलोइए करि नामी सीस ॥ १४१ ॥ समकित आदे वत इग्यार, संलेखणा सरिसा बार, पंच पंच बोख्या नव मिछ, छतिचार पो-हता पांसछ ॥ १४१ ॥ व्रत सातमे वीस विस्तार. तपाचारना बोख्या बार; वीर्याचार तणा त्रण जेल, श्वतीचार शत पूरा मेल ॥ १४३ ॥ ज्ञान श्वने दर्शन चारित्र, आठ आठ बोला पवित्र; मनस्युं आलोज निसि दिस, आतिचार एकसो चोवीस ॥ १४४ ॥ सामायक पुहते संज थयो, पारी पाठो मंदिर गयो; व्ययसण समकित गाथा जणी,

(१५७)

पोढे निद्धा छलप न घणी ॥ १४५ ॥ छावे परवे पोसह धरे, त्रण काल जिन वंदण करे: बहु सावद्य योग परिहार, सहगुक्त सरिसो अर्थ विचार ॥ १४६ ॥ जुर्ज इम आवकनो आचार, पाले पामे मोक्त दुआर, परिंड मोह तेे जंजाल, नर जव गमे अमूलिक आल ॥ १४९ ॥ केनुं राज केना गज तुंगी, गयो रावण जे लंकेशरी; गया राम राजा हरिचंद, मुंज जोज गणपति गोविंद् ॥ ४४० ॥ गया देव चोवीसे आज, गया नल विक्रम मेली राज; गयो राम दशरथ जे तात, गयो जरत जे जग विख्यात ॥ 1 9BS महारी महारी म करीझ धरा, नहि आपणा देइ पाधरा; नवे नंद ने नव फुंगरी, ते कहो कुण साथे संचरी ॥ १५० ॥ गाम देशनो करे संहार, ञ्चागल जरवुं पेट जंडार; एक जीव वधतां जे पाप, जाणिश परजव देतो जाप ॥ १५१ ॥ करे राज मद छाएे हीये, करतां पाप छाप नवि बिहे; कुण मोटा न्द्राना आतमा, परचव राय

(१६०)

रंक ते समा ॥ १५२ ॥ वेला घडी पद्दोर जे जाय, ते आजखुं जेंढुं थाय; खलहल जल वूठा गिरि ढले, ते निऊरणां पांठां वले ॥ १५३ ॥ सहगुरु वाणि श्रवणे सांजले, तिम तिम विमल नयण जल जरे: कर्यां कर्म जस्वो प्राणीर्ट, डुःख सहित जुर्गति ताणी ।। १५४॥ दान सिल तप ने जावना, करतां दिन आये जेहनां; तेहनुं माम जपो मन मांहा, जिम ए काया निर्मल थाय ॥ १५५ ॥ ज्यां लग धन त्यां लग सगां मले. धन विण सगां सहोदर टले; बेटा बेटो बहिनर जाय, धन विए नारि पिछारी थाय ॥ १५६ ॥ जे करशे जोगवशे सोय, पाप न वहेंची खेशे कोय; देह छुख जिम वसमुं थाय, वेदन विम्नु-कणई न लेवाय ॥ १५७ ॥ सुणी वाणी सहगु-रुनी घणी, पगे लाग्यो चंड्रावई धणो; स्वामी एक वीनतमी करूं, द्यो आलोअए जिम न्नव तरूं ॥ १५७ ॥

({ { { { { { { { } } } } } }

॥ वस्तु ॥

सुगुरु वाणी सुगुरु वाणी, सुणी नर राज; मन वईराग्यो छाति घणुं, कर्यां कर्म कठिण गाढां; इवे मन छाव्यो ठेरतो, सुणियां श्रवणे गुरू वचन टाढां; विमल मंत्रो ईम विनवे, पाय न ढोगुं हेव; पाप करी हवे ऊसनो, यो आसो-यण देव ॥ १ ॥

॥ ढाख ॥

॥ करि पनिकमणुं, करि पडिकमणुं ॥ प राद्द ॥ हुं छा राण प्रजु तुं ताप हरणो, तुं समरथ गुरु राय; कर जो की ने करुं वीनती, सेवककरो सुगुरु सुपसाय ॥ १ ॥ द्यो छा लो छा छा छा छो सुगुरु सुपसाय ॥ १ ॥ द्यो छा लो छा छा छा छो छा , (ए छां कणी) मा गे विमस प्रधान; धर्म-घोष सूरीश्वर पासे, छाणी जपशम ध्यान ॥ द्यो छा । १ ॥ गुरु जंपे तुज किसि छा लो-छा , की धां कर्म छपार; सहस लाख खेखां नवि सद्दी ये, जीव तणा संदार ॥ द्यो छा । १ ॥

(352)

जांज्या देश नगर तें लुसियां, माय विठोह्यां बास: अप चिंतवे घण ँआग लगाई, पशूआं खुटो काल ॥ यो आ० ॥ ४॥ खांडाने बेते कोणि-तसे, लीधी परधन कोकि; तें दंड्या पृथ्विपति पोढा, खागी पातक को कि ॥ द्यो आ०ँ ॥ ५ ॥ वोख्या कृम मर्म तें मोसा, कीधा अति घण सोज; गुरू बोले सुण पृथ्वीपति, तुह्य **शी की**जे योज ॥ यो आ०ं॥ ६ं॥

॥ चोपाई ॥

धर्मघोष सूरी बोले इसी, तुऊ आलोअण आलुं किसी; महारंज की धा लख कोम, देतां मालोम्रण अम्ह खोड ॥ १ ॥ पण आगम बोल्युं वे नोय, मिथ्या दृष्टी थानक होय; त्यां जिन मंदिर किम्हे कराय, तो नरवर आराधक **थाय ॥ १ ॥ तु**फ ठे आलोञ्रणनी खंत, धर्म वस्यो ढे तारे चंत; वर मिथ्याती सरसो वाद, करतां जो निपजे प्रासाद ॥ ३ ॥ अर्जुद सिखर **ढे** छजिनवुं, तेइनो महिमा शुं वर्षवुं; ए बोख्युं

(१६३)

ढे उत्तम ठाम, करतां उद्यम सीजे काम ॥ ४ ॥ अचलेश्वर जे आगल अहे, ए पर्वत आज्यों हे पढे; तापस तप करता एणे ठाय, तेह तणी नितु चरति गाय ॥ ५ ॥ मोटी खाम हती छडवडी, चरती गाय वरांसे पडी; तेणे धूबके भरती धडहडी, आव्या रिषि तापस दमवडी ॥ ॥ ६ ॥ नवि पेसाये नवि निसरे, डांग देखामे डचका करे; कामधेनु तव खीर जरी, जरी खा-डने आवी तरी ॥ उँ ॥ संकट सोई सुखे उतरी, आवी रिषि आश्रम पाधरी; चिंते रिषि ए ञाव्यां मात, पण आयी ए दोहली वात ॥ ए॥ मल्या रिषिश्वर रावें गया, जणे हेमाचल कीधी मया; तुम्इ दीठे अम्हे निर्मल कया, सजान घर रिक्रि मांहिं समुद्रता थया ॥ ए ॥ अम्ह **बे तुम्ह तणी, कहो कारण आव्या जेइ जणी**; कहे रिषि अम्हे अर्बुदगिरि रहुं, कामधेनु रवा नवि लहु ॥ १० ॥ अम्ह आगल प्रगर्टी पोढी खाड, पडे गाय ने जांजे हाड

ेंगेटा तुं बोखाव, धरी खंत ने खाम प्रराव ॥११॥ निसुणी गोहत्यांनी वात, लघू बेटो बोलावे तात; द्याव्या अचल न लागी वार, आम तातने किध जुहार ॥ ११ ॥ ते रिषिने सुंपी आगीर, तेणे ते यानक थापीर्ट; गुरु जंपे चंडावई धणी, एह वात पर शासन तणी ॥ १३ ॥ अर्बुद सिखर रहे अर्बुदा, तेह तणुं ए थानक सदा; श्रीमाता जे पासे रहे, तेनी वात केटलाए कहे ॥ १४ ॥ श्रीमाता हे क्रप निधान, आव्यो रसिउ देव प्रधान; बोलावी श्रीमाता माय, हुं रसिर्ड आ-**व्यो** वर राय ॥ १५ ॥ जाणुं ताहरी बेटी वक्तं, वरि हुं काम कहुं ते करुं; हुं रसिउं हुं लीख विखास, तुज बेटीनी पुरिश आज्ञा ॥ १६ ॥ सासू जाणे जोई हाथ, तो बेटी वलगारुं साथ; तव सासू रसिद्या सारखुं, राखी रात करे पारखुं ॥ १९ ॥ बार गाम वासो वर राज, चिहुं पोइ जुर्ड बारे पाज; आवो गिरि निपाई नवी, तो परणावुं हवि ॥ १० ॥ ज्यां कूकड नवि

(१६५)

वासे वली, शबद कहीने सामू वली; सुंख्यो रसिर्ट वास्यां गाम, बार पाजनों की धां ठाम ॥ ॥ १ए ॥ बांधी पाज सकल जव समी, थोडी थाके हे बारमी; सासू मन पेठो अंदोइ, श्री-**बेट**िकरी, ए वर लेई जा**शे वरी; हुं सती** पकली निटोल, मुऊ बीजो कुए देशे बोल ॥११ मनडोलो पेठो मन मांहिं, ए वर नयणे दीठो क्षंई; दीधुं काम कर्युं ततकाल, दीधो बोल थाये विसराल ॥ ११ ॥ जे दीधा नारीना बोल. ते जाणेवा जांगी ढोल; मांहिं पोला बाहिर नाद, वनिता सरिसो केहो वाद ॥ १३ ॥ पतली सासू तव प्रहसमा, करि कूकफ वाद्या कारमा; रंगे रसिउ विलखो थयो, श्रीमाता आगल जइ रहा ॥ २४ ॥ दष्टोदष्ट रह्यां वे जणां, चित्ते चित्त मांके आपणां; अंग तणो टलीर्ड संजोग, मनशुं मांके मोटा जोग ॥ १५ ॥ बोल थकी चुकी तव धरी, सासू पंच ईटालि करी; लोक तणो पनिड

परवाह, गुरू बाल सुण विमलज शाह ॥ १६ ॥ देव प्रते ए पर्वत अदृष्ट, गौतम रिषि नर रह्या विशिष्ट; तेह तणां ठे थानक वडां, डुंगर मांहिं एकतर्मा ॥ १९ ॥ ए छर्बुद मिथ्याते रद्या प्रह्यो, सहगुरु बोल विमलने कह्यो; पहोतो विमल गयो खंबाव, ध्यान धरि बेठो महानुजाव ॥१०॥ त्रिहुं जपवासे प्रत्यक्त हुई, मागो वरँ तुह्म तूठी सही; पहिलो वर मागों प्रासाद, अर्बुद सिखर सरीसो वाद ॥ १ए ॥ बोखावो जिन मंदिर नार, वात पडी ठे वडे विचार; कहो तो सुत मागो वर खद्ध, कहो तो जिनमंदिर प्रसिद्ध ॥ ३० ॥ स्त्री कहे सांजलो जरतार, सुत मागे वाधे संसार: के सुत जन्म्या कुल मंमणा, के खंपण उपाये घणा ॥ ३१ ॥ विरला बेटा जगता होय, विरला सुत क्विं करमि जोय: केनी बेटी केनी मात; केना बेटा केना तात ॥ ३२ ॥ वेगे करि मागा प्रासाद, बेटानो माणो विषवाद; विमले आणी बट घणो, वर मांग्यो प्रासादह तणो ॥ ३३ ॥

(१६७)

ष्ठाव्यो विमल सहित परिवार, छर्बुद जिन प्रासाद विचार, पुजारा नवि लाजे पार, जरमा मख्या सहस ईग्यार ॥ ३४ ॥ ए थानक शिव शासन तणुं, महेता तुम्हे म करशो घणुं; रुठा मंत्रि लेशों प्राण, ठाम न आपुं शिवनी आण ॥ ३५ ॥ करे अरफि ने मरडे बोल, वरि विसद्य-मारी निटोल: बोले शिव थया एक मती, जूमि न आपुं अम्हे एक रती ॥ ३६ ॥ मंड्यो कल-कल जरेडे मली, वारी विमल मनावे वली: कां बोलो जार्ड उताप, धर्म काज खप नही संताप ॥ ३९ ॥ कहुं बोल जे तुम्हे सांजलो, मेली मनइ तणो श्रांमलो: जो जोतां ए शानक थडुं, कांई प्रकट हुए आवकुं ॥ ३० ॥ तुम्दे करवा यो प्रासाद, नहितर अम्ह सरिसो नही वाद; बीज़ं ठाम सविसेसुं प्रह्यं, श्रीमाता आगस जई रह्य ॥ ३ए ॥ ते जुंई शिव कहे एटले, जोईजो तम्हे तेटलें; इम कहीने जरमा वह्या, मंत्रीश्वर ई मख्या ॥ ४० ॥ धरी ध्यान करि

Jain Educationa International

For Personal and Private Use Only

(१६७)

यद्द, छंवाई आवी परतद्द: विमले वात जणावी ताम, पूजाराशुं परव्यं आम ॥ ४१ ॥ कहे खंबाई हुआ तुम्ह जला, श्रीमाता आगल जे शिखा; ते टंकावी छालगां नाख, पासे करमा जरमा राख ॥ ४१ ॥ इम बोले छंबाई छंब, ते हेठल दादानुं बिंब; खाख ईग्यार वरसुं घमधुं, कर्मे कर तुम्हारे चन्धुं ॥ ४३ ॥ खेत्रपाल झंबाई तणी, पासे मुरति काढे घणी; ईम कही छंबाई वख्या, जरडा सरसा मंत्रि मह्या ॥ ४४ ॥ कीधुं कर्युं छांबाई तणुं, जरमा मन मनाव्या घणुं; मोटो गढ कराव्यो तिहां, **नहषण दीसे दादो जिहां ॥ ४५ ॥ खेत्रपाल** श्वंबाई तणी, दीती दान मुरति आपणी; का-मिणि सहित करावी जूइ, तीरथ जैन थापना हुइ ॥ ४६ ॥ आगल आलेख्यो प्रासाद, जरमे सरके मांड्यो वाद; जूमि छह्यारी वहेंचण पर्नी, विण गरथे नावे एवमो ॥ ४९ ॥ सोवन मांडी उंख, ज्यां प्रासाद तणी करो पोख; खपती चमि तुम्हारी करो, तो लेशो जो करशो बरो ॥

(१६ए)

॥ ४७ ॥ तव सोवन टंका पाथरी, जाणे जिम मांडी साथरी; जे वचे अलग अगासी रहे, जूमि न आपुं जरमा कहे ॥ ४९ ॥ सोनैआ मांड्या चोकडे, ते छपर जो पंचम चके, आपुं ज़मि तो अम्द्रे हसी, काम तुम्हारूं करशो भूसी ॥ ८० ॥ विमले ते वर मानी वात, सोनेए जो चकरो धात; मांक्युं काज सराके चके, कुण गजुं सोनैआ वडे ॥ ५१ ॥ आप्या सोनैआ जिम कह्या, संतोष्या सवि जरका गयाः तेड्या सिखावट सें सात, जे जाणे वरतारा वात ॥ थशा विद्या वास्तु विशेषे लहे, जे उत्तर पुढगाना कहे; पूठधा मंत्रि जे जे जेद, छापे उत्तर वर्फे विबेद ॥ ५३ ॥

॥ छहा ॥

वर प्रासाद अनेक ठे, सुए मंत्रिसर सार; एक बार दो बार हुए, त्रि बारो चो बार ॥१॥ मंडप मंदू मंडीए, सोख सोख जो यंज; यंज यंज पए पुतली, माटिक करती रंज ॥ १॥

(30)

चिहुं दिसि मंमप मंमणुं, त्रिहुं दिसि पोल सुरंग; मेढ्या मंमप जपजे, अठोत्तर सुचंग ॥३॥ चार अठ त्यां जपजे, बार सोल त्यां वीस; तो पंच्यासी जपजे, जो दिसि दिसि एकवीस ॥४॥ ॥ चोपाई ॥

मंग्रप प्रथम शिला ते कह्यो, आगल गुढ मंनप ते रह्यो; त्रीजो तेह नीवेद वखाण, चोयो तंदुल मंमप जाए ॥ १ ॥ मंडप सनात्र पंचम जोय, वृत्तो चोकी मंडप होय; मंडप समोसरण सातमो, नाटक मंडप ते आठमो ॥ १ ॥ नुमो तुंगी मंडप जाण, दशमो मंडप वाजित्र वखाण; कोतुक मंडप अग्यारमो, बोल्यो ईंड मंडप बारमो ॥ ३ ॥ माला उठिव जे जे कह्या, मंडप पन्नर पूरा थया; रंग मंडप ने मंडप नाख, सोल संतर सुधा संजाल ॥ ४ ॥ मंडप कह्या बलाणा वली, मेंघनाद पूरो मन रूली; माली मंगप जे वीसमे, मंरुप पोल पोलने गमे ॥ ५ ॥ चिदं सिना मेढ्या जज्ञ्या, चो मंडप खो

(१७१)

हुआ: शिखर तणु मंमप वे जेह, चिहुं पासे वली सरिखां तेह ॥ ६ ॥ जो जेद चोरासी मांहा, तो पंच्यासी पूरा थाय; चो मुख चिहुं चिहुंनी प्रसिद्ध, जेता मुख हुए तेती वृद्धि ॥ ॥ उ ॥ सांजल मंत्रि वली विंचार, जूमिं देखी कीजे विस्तार; उपर शिखर शिखर नवि चडे, जो कीजे तो त्रूटो पडे ॥ ए ॥ जूमि जाग जोई जसवाद, थाप्यो पूरव मुख प्रासाद; सवि सावटु दिछा सिएगार, सोवन कलस त्रत्वा जंमार ॥ ए ॥ कर सोवन सांकलां उदार, शिलावट मन इरष अपार; लाग्या लाख गमे मज़ुर, करे काम झति जखट पूर ॥ १० ॥ सात प्रूक्तष तल पाया तणो, ययो श्ववसर प्ररणी तणोः वहेली विमल जणावी वात, जरी सांढ सो आवी सात ॥ ४१ ॥ सोने आ क्रपेआ तणा, ख्यो बदरा पूरणीए घणा; आव्यो विहिघण देखी साढ, स्वामी बदरा छातगा काढ ॥ ११ ॥ एणे बदरे वेज्ञं कगमगे, मांड्यां घर नवि आवे वगे; सोवन

(382)

इप गलावी करी, तेहनी ईट करावो खरी॥१३॥ तेहनुं चेजुं संपट रहे, ते मगवा किम्हे नवि खहे; सोवन टंक गलावे जाम, विमल कसोटी पुहतो ताम ॥ १४ ॥ सूत्रधार जोए घण कठी, विमख शाह पण गाढो हठी; जे जे बोल कह्या मुखज में, ते मरणांत न मुकुं किमें ॥ १५ ॥

॥ वस्तु ॥

सत्त समरथ सत्त समरथ, सत्त गढ मांहिं; सत्त पडा तेष कारणे, सत्त खेत्र निज वित्त वावे; सुगुरु श्राण सिरे धरे, दान शीख तप जाव जावे, रग राजल सूरा सदा; देवी छंबाई प्रमाण, पोरुष्ठाड प्रकट मख्ल; मरे न मुके माण ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

स्वामी सोवन बदरा जेह, इवनां श्रखगां रखावो तेह; श्रवसर वात कहसि वखी, चेजुं चाले तव मन रुली ॥ १॥ जुमि धणी ठे वाली नाह, तेणे खंपट खाथो वाह; जे जे चेजुं दीसे चढे,

(**5**65)

ते ते राते पातुं पडे ॥ १ ॥ इम करतां हूआ व मास, थया शिलावट सबे निरास: आवी पुढे विमलड शाह, तेटले बोढगो बाली नाह ॥ ३ ॥ कखकखतो कोधे धम धमे, महारुं ठाम न मुढुं किम्हें, कहिना जिन कहिना प्रांसाद, कुण मंडे मुफ सरिसो वाद ॥ ४ ॥ में जित्या सुर किंनर घणा, नाद जतार्या नरवर तणा: विमल वणिक सरिखा शा लोक, महारे मन त्रिजुवन ते फोक ॥ ५ ॥ विमल जणे सुण वाली नाह, खीर खांड मोदक ख्यो साह; आखुं बलि जो आपुं धीर, तेटसे बोख्या खेतेल वीर ॥ ६ ॥ जीव तणी बलि द्यो मंत्रीज्ञ, तो हुं वलतो नाणुं रीज्ञ; रह्यो मंत्रि दिन गाली सोय, चेज़ुं सदा संचारे होय ॥ 9 ॥ पनी रयणी कर खांचुं करी, दीवी डांह रह्यो सत धरी; आठयो वाली वीर विकरास, षायो मंत्री गयो देइ फाल ॥ ए ॥ त्यां गिरिवर ते गर्जित करे, थर थर पाणि सालिरि धरे, पुंड ग़ुंड मोटुं सिर धरी, ज्या करडु नावे केशरी ॥ ए॥

(388)

खेतख वीर हतो जे वंक,दीठे विमल ययो ते रंक; राव करे श्रंबाइ कहे, विमल न माने जो मुहने ॥ १० ॥ छंबाइ कहे खेतल तुं जाण, एइशुं कोइ न पुहचे प्राणः संतोषी की धो सांसतो, निवेज देशें मन जावतो ॥ ११ ॥ जो तुं वलतो मागिस जीव, तो नही ढुटे करतो रीव; एइनी हाके फाटे आज, एइशुं बल करतां नवि लाज ॥ ११ ॥ जो तुं कांई जान करेश, जो तुं एहरां बल मंकेश: ए वणीग नही केइने हाथ, धरी नाक नाथे सनाथ ॥ १३॥ फोकट तुं बल घालिम मुंब, तुऊ नाखेसी साही पुंब; निर्देय नर नवि माने आण, ए तहारुं ठे विनय वखाण ॥ १४ ॥ तुम्हे म थाशो अति आकला, देवरावीश तिल-वट बाकला; वडां वेढमो छने लापसी, दीधी बलि खेतल गयो इसी ॥ १५ ॥ वाली नाह मनाव्यो जुर्ज, तव प्रासाद गजारो हूर्ज, धन थोडुं लागे आपणुं, करो काम सवि सोना तणुं ॥ रें६ ॥ मोटा संघ पुरुष के कई, सोवन जिन

(१९५)

मंदिर किम रहे; हवे आवशे पमतो काख, तुफ सरिखा क्यांथा जूपाल ॥ १९॥ आरासण जघानो खाण, नीपार्ठ तेहने पाषाणः जोतरीआ रहकख संचरे, बलद बेठा कृलिर चरे ॥ १० ॥ कीजे सबलां नांगर दोर, कीजे जए जे जाएे जोर: छारासणयी जंचा चके, पाइण ते रूपा मूल पके ॥ १९ ॥ मांड्या मंडप ते चिर यंज, घमी पुतली रुपे रंजः घाट पाट तोरण कोरणी, मंम केलश धज वतपति धणी ॥ १० ॥ दीपे दहेरी जाक फमाल, छागल चोक रच्यो चोसाल; शेत्रुंज अष्टापद गिरनार, तेह तणा मांड्या अवतार ॥ ॥ ४१ ॥ नेढा वेढा बंधव जोफ, तेइ तणा सुतने थयुं कोमः द्शरथ नाम प्रसिधुं जोय, विमल तणो जत्रीजो सोय ॥ ११ ॥ हस्तीशाला श्रागल खडी, विमल मूर्त्ति त्यां घोके चकी; जोतां उपजे अधिको रंग, थानक थानक मूरति चंग॥ १३ ॥ कुसुम कल। उतरे अनेक, वाक् वाफि तणा विवेक, विमल मंत्रि मन उखट घणो,

(385)

विस्तार करे प्रतिष्ठा तणो ॥ १४ ॥ खोक सद्द श्वावे श्वजिराम, धर्मघोष सूरी तेड्या ताम ॥१५

॥ वस्तु ॥

विमल वसही विमल वसही. विमल प्रासाद; पीतल जार छढार मई, छादिनाथ प्रतिमा प्रतिष्टीछ; संवत चौद छठ्यासोए, वर प्रतिष्ठा शुज लगन कोधी. रुंक कलवा धजा लद्द लहे, टेटव मेरू समान, मूल नायक थिर थापीछा, जिम जदयाचले जाए ॥ १ ॥

॥ चोपाई ॥

विमल मनोरथ चड्यो प्रमाण, याचक बोले मंगल ठाण; संघ लोक पहिराव्यु सहू, मही अल उंग्रव की धो बहु ॥ १ ॥ मेघ सरिसो मांड्यो वाद, ईंडजुवन छाधिको प्रासाद; जोतां चिंतन मही छल जाय, आव्यो उलट छंग न माय ॥१॥ छर्बुद शिखर छनोपम की ध, तेकी संघ जला-मण दी ध; प्राम तणा के गरासी आ, पोक्त आफ

({99)

पासे वासीश्चा ॥ ३ ॥ त्यादि जनम कस्याणक मणो, चैत्र श्रंधारी आठम मुणो; तिहां जिनवर पूज्या हता, पूजारा पामे कणहता ॥ ४ ॥ आज सगे ते चाले रीत, अमरष कोई न आणे चितः तिरच वाख्यो विमल प्रधाम, सहु संतोष्यो मोटे **रान ॥ ५ ॥ मु**के मुढे वाध्यो व्याप, चिहुं दिसि श्वर्बुद चड्यो प्रताप; लूणिग वसहीए जूजूआ, ए प्रासाद पढी शव हुआ ॥ ६ ॥ संघलोक वलिज परिवार, साथे धर्मघोष गणधार; हरब्यो विमल चंडावई धणी, पाढा आव्या मंदिर प्रणी ॥ ९ ॥ मागत लोके माग्यो दुर्ज, करमी कस्प वृद्य ते हुर्छ; करे राज ते लील विलास, चिंतामणि परें पुरे आस ॥ ० ॥ आलस निज्ञ श्वखगी करो, कविता बोल कहे ते धरो; विम**ख** श्री कहीये सुप्रजात, तेह तणो बोलीज्ञ अव-दात ॥ ए ॥ नवे खंडनो अवसर हुई, ए प्रस्ताव कदीसि जूर्ट; किहां वर्णन श्री नारी तणुं. नाम विवेके राख्युं घणुं ॥१०॥ मेरु तणे मस्तक चूलिका,

(350)

सोदे सिरवर जिम वेणिका; लच्ची पूरी जो घर गजा, पूरे प्रासादे हुई धजा ॥११॥ नवे खंड पूरा प्रमाण, जो सुणीये श्री तणुं वखाण; स्त्रीने सोंह चमावी घणी, कहीये कख्य वेल कुल तणी॥ ११॥ खंड खंड मति हे निर्मली, जणतां गुणतां संपत वली: मुनि लावएय समयची वाण, पटले नुमो खंम वेखाण ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १९७ ॥ ॥ ईति श्री पंक्ति लावण्यसमय गणि क्वते, विमल मंत्री मनोहर प्रगट प्रबंधे, नव रंग नव खंडे, स्वप्नाधिकारे; श्राद्ध धर्म प्रति-पतें। प्रासादोपदेसे, अचलेश्वरोत्पत्ती; श्वंबावी श्वाराधन, जरडक मनापने; वाली नाह खेतलवीर मनापने, प्रासाद परिपूर्णने, प्रतिष्टा करणीय करणे, नवमं खंडे संपूर्णम् www.werenewere श्री विमल मंत्रि रास संप्रर्णम्